वर्ष-03 अंक-01 दिसम्बर-2024 | ₹ 20/-

● RNI No. UPHIN/2022/84386

लखनऊ जंक्शन

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

विजयी नायक

देश में
नंबर वन
उत्तर प्रदेश

एक्सप्रेसवे प्रदेश
उत्तर प्रदेश

सर्वाधिक एक्सप्रेसवे वाला राज्य
6 क्रियाशील, 7 निर्माणाधीन

- पूर्वांचल एक्सप्रेसवे : लखनऊ से गाजीपुर (341 किमी.)
- बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे : चित्रकूट से इटावा (296 किमी.)
- आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे : आगरा से लखनऊ (302 किमी.)
- यमुना एक्सप्रेसवे : ग्रेटर नोएडा से आगरा (165 किमी.)
- दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे : मेरठ से दिल्ली (82 किमी.)
- नोएडा-ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेसवे (25 किमी.)

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

लखनऊ जंक्शन

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष–03 अंक–01 दिसम्बर–2024

संपादक
अंजू सिंह
सहायक संपादक
मनोज गौतम
राजनीतिक संपादक
अनुराग पाण्डेय
सलाहकार संपादक
सुभाष चंद्र श्रीवास्तव
प्रवीण पाठक **दिल्ली ब्यूरो**
अनिल द्विवेदी **यूपी ब्यूरो**
मीनू कुमारी **उत्तराखण्ड ब्यूरो**
लखनऊ संवाददाता
राकेश कुमार मिश्र
अरविन्द कुमार
राजेश जोशी
विशेष संवाददाता (यूपी)
तारिक खान
विशेष संवाददाता (दिल्ली)
संदीप सिंह
विधि परामर्शदाता
महेन्द्र सिंह
मार्केटिंग मैनेजर
मोहन जोशी
ग्राफिक डिजाइन
सुमित साहू
9569607491

एम.आई.जी. 47, सेक्टर ई, अलीगंज, लखनऊ (उ0प्र0)-226024
E-mail-lkojunction@gmail.com
दूरभाष- 7376547600, 0522-4232552

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक धर्मेन्द्र सिंह द्वारा नीलम प्रिंटिंग प्रेस 41 / 381, नरही, लखनऊ (उ0प्र0) से मुदित एवं एम.आई.जी. 47, सेक्टर ई, अलीगंज, लखनऊ (उ0प्र0)-226024 से प्रकाशित

RNI No. UPHIN/2022/84386

इस अंक में प्रकाशित सामग्री के आंशिक या पूर्ण रूप से पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। लेखक के विचार व्यक्तिगत हैं। किसी भी प्रकार के विवाद के समाधान के लिए न्यायक्षेत्र लखनऊ होगा।

इस अंक में

10
संसदीय गरिमा पर अविश्वास

12
ये महाकुम्भ बनेगा एकता का महायज्ञ -पीएम मोदी

17
बांग्लादेश छात्र विद्रोह अब हिन्दू विरोधी आंदोलन में बदला

26
खतरनाक होता बायोमेडिकल वेस्ट

महाकुंभ मेला जनपद का गठन

कुम्भ के शब्द का मतलब कलश होता है। सनातन धर्म में कलश की स्थापना होती है जिसे कुम्भ भी कहा जाता है। यह 12 साल में होता है तो महाकुम्भ कहा जाता है और 6 साल में जब यही मुहूर्त आता है तो हम उसे अर्धकुम्भ कहते हैं। महाकुम्भ 2025 का आयोजन प्रयागराज में 13 जनवरी से 26 फरवरी तक होगा। चार जगहों पर लगने वाले महाकुम्भ में सबसे ज्यादा महत्व प्रयागराज को इस लिए दिया जाता है क्योंकि जिन चार जगहों पर अमृत कलश छलका, वहां महाकुम्भ शुरु हुआ। प्रयागराज की खास बात यह है कि यहां पर जमीन पर्याप्त है और यहां तीन प्रमुख नदियों का संगम होता है। जिसे त्रिवेणी संगम भी कहा जाता हैं उत्तर प्रदेश की धरती पावन है, यहां पर भगवान के अवतार ने जन्म लिया।

जहां तक महाकुम्भ 2025 का सवाल है तो महाकुम्भ की तैयारियां भी जोरो शोरों से चल रही हैं और अलग-अलग अखाड़ों के द्वारा भूमि पूजन और ध्वजा स्थापित करने का सिलसिला भी शुरु हो चुका है। उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं को महाकुम्भ की नव्यता, दिव्यता और भव्यता का अहसास कराने की तैयारी में जुटी है। जहां तक उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का सवाल है तो यह किसी से छिपा नहीं है कि वे किस तरह से सत्ता में रहते हुए सनातन धर्म, अपने धर्मस्थलों के रखरखाव से लेकर उनके पुर्ननिर्माण, अपनी संस्कृति और प्रदेश के नवनिर्माण के लिए अपने आपको पूरी तरह से संकल्पित किए हुए हैं। चाहे अयोध्या हो, कांषी हो या फिर मथुरा का विकास कर योगी ने इन जिलों को दुनिया के पटल पर चिन्हित करवा दिया। यहां यह बताते चले कि महाकुम्भ को बेहद सफल बनाने और उससे संबंधित सनातन धर्म के संदेश को सारी दुनिया तक पहुंचाने के लिए बीते दिनों संघ के नेताओं के साथ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक बैठक कर महाकुम्भ मेले से जुड़ी तैयारियों से उन्हें अवगत कराया। वहीं इससे पूर्व योगी आदित्यनाथ ने अपनी सरकार के बजट में महाकुम्भ मेले की तैयारियों को लेकर अपने खजाने का मुंह खोल दिया। वहीं अब मुख्यमंत्री योगी आदित्यननाथ के विशेष आग्रह पर केन्द्र की मोदी सरकार ने महाकुम्भ के लिए दो हजार करोड़ रुपए भी दिए हैं। तो वहीं दूसरी ओर इसी सिलसिले में योगी सरकार ने बड़ा फैसला लिया है। महाकुम्भ 2025 को देखते हुए नए जनपद की घोषणा कर दी गई। ऐसे में नया जनपद (जिला) महाकुम्भ मेला जनपद नाम से जाना जाएगा। राजस्व ग्रामों और संगम स्थित सम्पूर्ण परेड क्षेत्र का क्षेत्रफल महाकुम्भ मेला जनपद व मेला क्षेत्र में शामिल होगा। महाकुम्भ मेला जनपद व मेला क्षेत्र में मेलाधिकारी, कुम्भ मेला, प्रयागराज को भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा-14 (1) व अन्य सुसंगत धाराओं के अर्न्तगत एक्जीक्यूटिव मजिस्ट्रेट, जिलाधिकारी एवं अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया है। महाकुम्भ मेला जनपद में शामिल प्रयागराज जनपद के राजस्व ग्राम (तहसील सदर, सोरांव, फूलपुर और करछना) और सम्पूर्ण परेड क्षेत्र होगा। चार तहसील में कुल 67 क्षेत्र शामिल किए गए हैं।

अंजू सिंह

विजयी नायक

ब्रांड योगी ने लिखी ऐतिहासिक जीत की पटकथा

राजनीति में रुचि रखने वाले लोग और दूसरे अन्य लोगों को यह बात अच्छी तरह से याद होगी कि जब इसी साल हुए लोकसभा चुनाव के परिणाम आने के बाद संसद के केन्द्रीय कक्ष में नरेंद्र मोदी को लगातार तीसरी बार भाजपा और उसके नेतृत्व वाले एनडीए की ओर से संसदीय दल का नेता चुना गया तो उसी सभागार में मौजूद उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के चेहरे के भाव साफ बता रहे थे कि वे उत्तर प्रदेश में लोकसभा चुनावों में भाजपा की हुई हार को आने वाले चुनावों को जीत कर पिछला हिसाब चुकता करेंगे। हालांकि यह हर कोई जानता है कि लोकसभा चुनाव में भाजपा की ओर से उत्तर प्रदेश की चुनावी रणनीति से लेकर टिकट वितरण तक में योगी के बजाए अमितशाह और उनकी टीम की चली। और इसके बाद भी भाजपा ने उत्तर प्रदेश में जो भी 29 सीटें जीतीं थीं, वह मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कुशल नेतृत्व और उनकी सरकार की जनहित की नीतियों के चलते ही, वरना अगर सूबे में योगी न होते तो भाजपा को नुकसान इससे भी कहीं ज्यादा का होता। बहरहाल, लोकसभा चुनाव के बाद ही उत्तर प्रदेश के दस विधानसभा सीटों के उप चुनाव प्रस्तावित हो गए और इन उप चुनावों को योगी ने अपनी प्रतिष्ठा से जोड़ कर भाजपा की जीत सुनिश्चित करने की ठान ली और आज नतीजा सबके सामने हैं। उत्तर प्रदेश के उप चुनावों से पहले जाट बाहुल्य राज्य हरियाणा के विधानसभा चुनाव हुए और कहना गलत नहीं होगा कि भाजपा ने विपरीत राजनीतिक हालातों के बाद जीत हासिल की और हरियाणा के चुनाव में योगी भाजपा की जीत के टं्रप कार्ड साबित हुए, जहां उनका नारा "बंटेंगे तो कटेंगे" खूब चला। हरियाणा के विधानसभा चुनावों के कुछ समय बाद महाराष्ट्र और झारखंड विधानसभा चुनावों के साथ ही उत्तर प्रदेश के दस में से नौ विधानसभा सीटों के उप चुनावों का ऐलान हुआ। योगी तो इसी प्रतीक्षा में थे ही। कहा जाता सकता है कि महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश के उपचुनावों में भाजपा की जीत में अहम भूमिका निभाने वाले उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

"बंटेंगे तो कटेंगे" का नारा सुपरहिट साबित हुआ। और भाजपा की चुनावी रणनीति में जीत का मंत्र बन गया। महाराष्ट्र के सभी भाजपा नेताओं ने अपने चुनाव प्रचार के दौरान योगी के नारे "बंटेंगे तो कटेंगे" का ही प्रयोग किया। योगी ने महाराष्ट्र के विधानसभा चुनावों में 18 विधानसभा सीटों पर भाजपा के प्रत्याशियों के लिए चुनाव प्रचार किया और इनमें से 17 भाजपा प्रत्याशियों ने जीत हासिल की। तो वहीं दूसरी ओर महाराष्ट्र के विधानसभा चुनाव एक ही चरण में 20 नवंबर को हुए थे और चुनाव परिणाम 23 नवंबर को आए थे। और चुनाव परिणाम आने के एक पखवारे से भी अधिक समय तक महाराष्ट्र की विभिन्न सड़कों पर योगी के नारे "बंटेंगे तो कटेंगे" वाले बोर्ड और बैनर पटे पड़े थे। कहना गलत नहीं होगा कि महाराष्ट्र के विधानसभा चुनावों में भाजपा के नेतृत्व में महायुति को बंपर जीत हासिल हुई और विपक्षी गठबंधन महाविकास अघाडी का पूरी तरह से सूपड़ा साफ हो गया। सिर्फ इतना ही नहीं महाविकास अघाडी में शामिल कांग्रेस, उद्धव ठाकरे की शिवसेना और शरद पवार की एनसीपी का इतना बुरा हाल हुआ कि कोई भी दल इतनी भी सीटें नहीं जीत पाया कि उसे विधानसभा में विपक्षी दल के नेता का पद मिले। बहरहाल, भाजपा ने अकेले ही 132 सीटें जीत कर महाराष्ट्र की राजनीति में अपनी बड़ी ताकत बनने के अपने पुराने सपने का साकार किया।

वहीं जहां तक योगी आदित्यनाथ का सवाल है तो विदित हो कि उत्तर प्रदेश में लोकसभा का चुनाव ख़त्म होते ही मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर सवाल उठने लगे थे। सरकार बड़ा या फिर संगठन का विवाद शुरु हो गया था। दिल्ली बनाम लखनऊ की चर्चा तेज हो गई थी। गौरतलब है कि ऐसा इसलिए हो रहा था क्योंकि लोकसभा चुनाव में भाजपा को 33 सीटों का नुक़सान हुआ था। अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी देश में तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बन गई। सारे देश में ऐसा माहौल बनाया गया कि उत्तर प्रदेष में भाजपा के अच्छे दिन अब ख़त्म हो गए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की कुर्सी पर अब खतरे में पड़ी गई, ऐसी चर्चा चल पड़ी। लेकिन राजनीति में कभी कुछ स्थाई या अस्थाई नहीं रहता है। राजनीति तो संभावनाओं का खेल है यही कारण रहे कि ठीक छह महीने बाद उत्तर की राजनीति के सारे समीकरण बदल गए। उप चुनाव के नतीजों ने ब्रांड योगी को और मज़बूत कर दिया है। योगी आदित्यनाथ ने बंटेंगे तो कटेंगे के नारे के साथ एजेंडा सेट कर दिया। नतीजा अब सबके सामने है। भाजपा नीत एनडीए ने विधानसभा की नौ में से सात सीटों पर जीत हासिल की है। पिछली बार इनमें से चार सीटों पर समाजवादी पार्टी की जीत हुई थी। इस तरह भाजपा को दो सीटों का फ़ायदा हुआ। उसने समाजवादी पार्टी से कुंदरकी और कटेहरी सीटें छीन ली। मालूम हो कि इन दोनों सीटों पर भाजपा तीन दशकों से जीत नहीं पाई थी। भाजपा ने एक रणनीति के तहत ओबीसी उम्मीदवारों पर भरोसा किया। सरकार और संगठन में बेहतर तालमेल और योगी आदित्यनाथ का कुशल नेतृत्व हर सीट के लिए अलग रणनीति और टीम का गठन करगर साबित हुआ।

यहां यह बताते चलें कि लोकसभा चुनाव ख़त्म होते ही योगी आदित्यनाथ चुनावी तैयारी में जुट गए थे। उन्होंने तीस मंत्रियों का एक टास्क फ़ोर्स भी बना कर उनकी नियुक्ति कर दी। हर सीट पर दो या तीन मंत्रियों की नियुक्ति की और खुद लगातार बैठकें कर समीक्षा करते रहे। एक-एक विधानसभा सीट पर दो या तीन बार प्रचार करने गए। विकास और हिन्दुत्व का समायोजन कर चुनाव की बिसात बिछाई। इस दौरान उत्तर प्रदेश भाजपा कोर कमेटी की कई बार मीटिंग हुई। मुख्यमंत्री योगी, उप मुख्यमंत्री केशव मौर्य, उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र चौधरी और संगठन महामंत्री धर्मपाल सिंह इस कमेटी में शामिल थे। सभी नेताओं ने दो-दो विधानसभा सीटों की ज़िम्मेदारी ले ली। वहीं मुख्यमंत्री योगी खुद कटेहरी के प्रभारी बन गए।

चुनाव की तारीख़ों के ऐलान होने से कहीं बहुत पहले ही योगी आदित्यनाथ सभी विधानसभा सीटों का दौरा कर चुके थे। हर सीट के सामाजिक समीकरण के हिसाब से नेताओं की ड्यूटी लगाई गई। इलाक़े के हर प्रभावशाली नेता से मुख्यमंत्री योगी लगातार संपर्क में रहे। पार्टी में आपसी मतभेद के बावजूद हम साथ -साथ हैं का, संदेश देने में सफल रहे। मतादाता सूची बनाने से लेकर बूथ मैनेजमेंट तक पर उनकी नज़र बनी रही। जहाँ सांप्रदायिक धुरवीकरण की ज़रुरत पड़ी वहाँ बंटेंगे तो कटेंगे के नारे को आगे कर दिया। कुंदरकी जैसी सीट पर क़ानून व्यवस्था पर फ़ोकस रखा।

लोकसभा चुनाव में भाजपा के ख़राब प्रदर्शन के लिए टिकट में

लेकिन भाजपा की इस उपरोक्त जीत की पटकथा में आरएसएस की उस भूमिका की भी चर्चा जरूरी है, जो उसने इस खूबसूरती से निभाई कि सारे हित सध गए। मालूम हो कि लोकसभा चुनावों के दौरान भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने अपने एक बयान में कहा था कि उन्हें अब आरएसएस की जरूरत नहीं है। यहां यह बताते चलें कि आरएसएस ऐसे बयानों का न तो बुरा मानता है और न ही उस पर अपनी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त कर विवाद को बढ़ाता है। आरएसएस अपनी भूमिका खुद तय करता है। जेपी नड्डा ने संघ के संबंध में भले ही जो कुछ कहा हो, लेकिन लोकसभा चुनाव परिणाम आने के बाद संघ ने यह बात बखूबी भांप ली थी कि अब मोदी के नाम और चेहरे पर भाजपा को उतने वोट नहीं मिल सकते, जितने कि 2014 और 2019 के लोकसभा चुनावों में मिले थे। यही कारण रहे कि 2024 में मोदी द्वारा बढ़चढ़ कर दिया गया यह नारा कि “अब की बार चार सौ पार”, तीन सौ के आंकड़े के आस-पास नहीं फटका। लोकसभा चुनाव के परिणाम आने के बाद केन्द्र में भाजपा ने अपने सहयोगी दलों के साथ मिल कर सरकार जहां बनाई, तो वहीं दिल्ली के इशारे पर उत्तर प्रदेश भाजपा में योगी के खिलाफ माहौल पैदा किया जाने लगा। जिसे संघ ने अपने प्रयायों से विराम लगवाया। इसी बीच योगी ने “बंटेंगे तो कटेंगे” का नारा दिया। उत्तर प्रदेष के मथुरा में संघ की एक बैठक में संघ ने बिना देरी किए योगी के नारे “बंटेंगे तो कटेंगे” कर महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेष के उपचुनावों के लिए योगी के नारे को भाजपा को उसकी जीत का मंत्र दे दिया। गौर करने वाली बात यह है कि संघ ने प्रधानमंत्री के नारे “एक है तो सेफ” के नारे का कहीं उल्लेख नहीं किया। उत्तर प्रदेश के उपचुनावों में संघ ने भाजपा नेतृत्व के बजाए योगी के विचार विमर्श कर उन्हें अपनी ओर से जरूरी सलाह देने के साथ अपना पूरा समर्थन दिया। ऐसे में भाजपा नेतृत्व ने संघ और योगी के बीच दीवार न बनना ही मुनासिब समझा। संघ का साथ और समर्थन मिलने के बाद योगी भी उत्साहित हुए और वह कर दिखाया जिसकी कल्पना उनके राजनीतिक विरोधियों ने भी नहीं की थी। तो वहीं दूसरी ओर देखने वाली बात यह रही कि संघ ने महाराष्ट्र के विधानसभा चुनावों में योगी के नारे “बंटेंगे तो कटेंगे” को आधार बना कर बड़े पैमाने पर जन जागरुता अभियान चला कर मराठों, ओबीसी और दलितों को एकजुट कर भाजपा की जीत की राह आसान की। गौरतलब है कि यह वही वर्ग था, जो लोकसभा चुनावों में भाजपा से दूर चला गया था। लेकिन योगी के नारे और संघ के समर्थन से इस वर्ग ने घर वापसी की। इस पूरी कवायद में संघ ने अपनी ओर से भाजपा के वर्तमान नेत्त्व को जो बड़ा संदेश दिया वह यह कि संघ पूरी तरह से न सिर्फ योगी के साथ है, बल्कि 2029 के लोकसभा चुनावों में योगी ही भाजपा के चेहरा और नेता होंगे। उम्मीद यही है कि योगी के लिए दिल्ली का रास्ता रोकने वाले भाजपा के कुछ नेताओं को संघ का संदेष समझ आ गया होगा। ●●●

गड़बड़ी को वजह बताया गया। उप चुनाव के लिए उम्मीदवारों के चयन में इस बार इसका ध्यान रखा गया। सहयोगी दल निषाद पार्टी के लिए इस बार सीट न छोड़ने का फ़ैसला हुआ। पिछली बार मंझवा और कटेहरी की सीटें निषाद पार्टी के लिए छोड़ दी गई थीं। लेकिन मुख्यमंत्री योगी ने दोनों सीटें भाजपा के लिए रखना ही बेहतर समझा। ये फ़ैसला सही साबित हुआ। कटेहरी में दलित के बाद सबसे अधिक ब्राह्मण वोटर हैं। पर वहाँ पार्टी ने ओबीसी पर भरोसा जताया और भाजपा ये सीट जीत गई। करहल को समाजवादी पार्टी और अखिलेश परिवार का गढ़ माना जाता है। भाजपा यहाँ पर पूरी तैयारी से चुनाव लड़ी। इसीलिए समाजवादी पार्टी इस बार कम वोटों के अंतर से चुनाव जीत पाई। चुनाव प्रचार से लेकर मतदान तक योगी आदित्यनाथ लगातार मॉनिटरिंग करते रहे। उप चुनाव में भाजपा के शानदार प्रदर्शन के बाद मुख्यमंत्री योगी ने पार्टी के अंदर और बाहर वालों का मुँह बंद कर दिया है?

जैसा कि उल्लेखीय है कि महाराष्ट्र सहित उत्तर प्रदेश के उप चुनावों में योगी का करिष्मा अपने चरम बिन्दु पर रहा, जो राजनीति के पंड़ितों के लिए एकषोध का विषय बनता जा रहा है।

और महाराष्ट्र में लौट आया समंदर

सुभाष चन्द्र श्रीवास्तव

पांच साल पहले जब एनसीपी नेता अजित पवार के साथ मिलकर सरकार बनाने का भाजपा का दांव उल्टा पड़ गया था, तब महाराष्ट्र की राजनीति के भीष्म पितामाह कहे जाने वाले शरद पवार ने सत्ता की राजनीति में एक नया प्रयोग किया और अपनी पार्टी एनसीपी, शिवसेना और कांग्रेस के साथ मिल कर एक गठजोड़ बनाया और उद्धव ठाकरे राज्य के मुख्यमंत्री बने। तब भाजपा नेता देवेंद्र फडणवीस ने विधानसभा सत्र में कहा था कि मेरा पानी उतरता देख, मेरे किनारे पर घर मत बना लेता, मैं समंदर हूं, लौटकर वापस आऊंगा और आखिरकार वे वाकई लौटकर आ गए। और तीसरी बार राज्य के मुख्यमंत्री बने। वहीं इससे पूर्व उन्होंने 23 नवंबर, 2019 को दूसरी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। उनके साथ एनसीपी से बगावत कर आए अजित पवार ने उपमुख्यमंत्री का पद संभाला था। हालांकि उच्चतम न्यायालय के आदेश पर अविश्वास प्रस्ताव लाए जाने से पहले ही फडणवीस ने 26 नवंबर को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था। इस दौरान वह महज तीन दिन मुख्यमंत्री रहे थे।

गौरतलब है कि महाराष्ट्र के विधानसभा चुनावों में भाजपा ने 132 सीटें जीत कर अब तक की सबसे बड़ी जीत हासिल की और सिर्फ इतना ही नहीं भाजपा के नेतृत्व में महायुति बंपर और ऐतिहासिक जीत से रुबरु हुई, महायुति में शामिल एकनाथ शिंदे को 57 और अजित पवार की एनसीपी को 41 सीटें ही मिली। चुनाव परिणाम 23 नवंबर को आए तो इसी दिन से यह चर्चा होने लगी थी कि पिछली एकनाथ शिंदे सरकार में उप मुख्यमंत्री रहे देवेंद्र फडणवीस ही भाजपा की ओर मुख्यमंत्री बनेंगे। विधानसभा चुनावों में भाजपा ने जिस तरह अकेले ही 132 सीटें जीती थी और वह बहुमत से सिर्फ 13 सीटें ही कम थी। तो ऐसे में एकनाथ शिंदे और अजित पवार ने दबाव की राजनीति करने के बजाए एक तरह से भाजपा के लिए मैदान छोड़ दिया। हालांकि महाराष्ट्र में नई सरकार के गठन में एक सप्ताह से भी अधिक का समय लग गया तो इसके पीछे कारण यह बताया जा रहा था कि एकनाथ शिंदे इस बात का फैसला नहीं कर पा रहे थे कि वे सरकार में शामिल हो या नहीं। अगर हो तो क्या उनके लिए राज्य का उप मुख्यमंत्री बनना सही रहेगा। लेकिन कहा जाता है कि शिंदे को सरकार में शामिल करने के लिए आखिरकार फडणवीस ने मना लिया। वहीं दूसरी ओर जैसा कि उल्लेखीय है कि फडणवीस का मुख्यमंत्री बनना लगभग तय था। लेकिन भाजपा के राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ के पिछले साल के रिकार्ड को देखते हुए यह भी चर्चा थी कि मुमकिन हो कि भाजपा नेतृत्व किसी नए चेहरे पर दांव लगाए। संभवता यह नया चेहरा मराठा या फिर कोई ओबीसी नेता हो सकता हो। लेकिन इन कयासों पर उस वक्त विराम लग गया जब फडणवीस को भाजपा विधायक दल का नेता चुना गया। कहा जाता है कि अगड़े वर्ग से संबंध रखने वाले फडणवीस के पक्ष में जो बातें प्रमुख रही वह यह कि उन्होंने जरुरत से अधिक अपने सब्र का दामन जहां थामे रखा तो वहीं दूसरी ओर पार्टी के लिए वे वफादार बने रहे। चुनावों में जी तोड़ मेहनत की। इसके राज्य भाजपा के उनके कद का दूसरा और कोई नेता भी नहीं था, जिस पर भाजपा दांव लगाती और तो और गठबंधन सरकार के मुखिया के तौर पर फडणवीस अच्छी तरह से एकनाथ शिंदे और अजित पवार को एक साथ साधे रख सकते है। अतः यही कारण रहे कि राजनीति के हर फन में माहिर फडणवीस पर ही भाजपा नेतृत्व ने भरोसा किया।

जहां तक फडणवीस का सवाल है तो फडणवीस की राजनीतिक यात्रा उल्लेखनीय रही है। इस दौरान उन्होंने एक गुमनाम पार्षद से लेकर नागपुर का सबसे युवा महापौर बनने का गौरव हासिल किया। इसके बाद उन्होंने भाजपा के भीतर एक प्रमुख नेता के रूप में अपनी स्थिति मजबूत की। उल्लेखनीय बात यह है कि वह शिवसेना के मनोहर जोशी के बाद महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बनने वाले दूसरे ब्राह्मण हैं। फडणवीस का राजनीतिक उत्थान 2014 के विधानसभा चुनाव से पहले शुरु हुआ, जब उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और वरिष्ठ भाजपा नेता अमित शाह का समर्थन हासिल किया। मोदी ने एक चुनावी रैली में फडणवीस को "नागपुर का देश को उपहार बताया था, जो फडणवीस पर उनके विश्वास को दर्शाता

था। हालांकि मोदी ने 2014 के लोकसभा और महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में धुआंधार प्रचार अभियान चलाया था, लेकिन चुनावों में पार्टी की अभूतपूर्व जीत का कुछ श्रेय तत्कालीन प्रदेश भाजपा अध्यक्ष फडणवीस को भी गया था।

जनसंघ और बाद में भाजपा के नेता रहे गंगाधर फडणवीस के पुत्र देवेंद्र ने युवावस्था में राजनीति में कदम रखा और 1989 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की छात्र शाखा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में शामिल हुए। पूर्व भाजपा अध्यक्ष नितिन गडकरी दिवंगत गंगाधर को अपना 'राजनीतिक गुरु कहते हैं। देवेंद्र फडणवीस 22 वर्ष की आयु में नागपुर नगर निगम के पार्षद बने तथा 1997 में 27 वर्ष की आयु में इसके सबसे युवा महापौर बने। फडणवीस ने अपना पहला विधानसभा चुनाव 1999 में लड़ा और जीत हासिल की। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा और लगातार तीन विधानसभा चुनाव जीते। पिछले महीने हुए चुनाव में उन्होंने अपनी नागपुर दक्षिण पश्चिम सीट बरकरार रखी। महाराष्ट्र के राजनीतिक परिदृश्य में कई नेताओं के विपरीत फडणवीस पर कभी भ्रष्टाचार का आरोप नहीं लगा है। महाराष्ट्र के सबसे मुखर नेताओं में से एक फडणवीस को कथित सिंचाई घोटाले को लेकर तत्कालीन कांग्रेस-राकांपा सरकार को मुश्किल में डालने का श्रेय भी दिया जाता है। फडणवीस को 2019 के विधानसभा चुनाव में तब झटका लगा जब अविभाजित शिवसेना के नेता उद्धव ठाकरे ने मुख्यमंत्री पद को लेकर चुनाव पूर्व गठबंधन से हाथ खींच लिया और भाजपा नेता का "मैं वापस आऊंगा उद्घोष अधूरा रह गया।

शरद पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के नेतृत्व में उद्धव ठाकरे बाद में मुख्यमंत्री बने, लेकिन जून 2022 में वरिष्ठ शिवसेना नेता एकनाथ शिंदे द्वारा पार्टी को विभाजित किए जाने के बाद उन्होंने (ठाकरे ने) इस्तीफा दे दिया और बाद में शिंदे मुख्यमंत्री बन गए। शिवसेना में बड़े पैमाने पर उठापटक और ठाकरे के पद छोड़ने के बाद कई राजनीतिक विश्लेषकों का दावा था कि इस घटनाक्रम में फडणवीस का हाथ है और वह मुख्यमंत्री बनेंगे. हालांकि भाजपा की दूसरी योजनाएं थीं और अनिच्छुक फडणवीस को उपमुख्यमंत्री का पद संभालने के लिए कहा गया। पहले राज्य के मुख्यमंत्री और बाद में उप मुख्यमंत्री बनने के बाद भी फडणवीस ने एक कार्यकर्ता की तरह ही बर्ताव किया। नतीजा ये रहा कि महाराष्ट्र में आज की तारीख में वो भाजपा के सबसे ताकतवर और भरोसेमंद नेता माने जाते हैं और सिर्फ इतना ही नहीं वे मोदी-शाह के साथ-साथ आरएसएस की भी पंसद हैं।

बहरहाल, उपमुख्यमंत्री के रूप में पिछले ढाई वर्षों का उनका कार्यकाल खास रहा और 23 नवंबर के विधानसभा चुनाव परिणाम उनके लिए बहुप्रतीक्षित उपलब्धि की तरह आए। ●●●

संसदीय गरिमा पर अविश्वास

राज्यसभा के सभापति के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव नोटिस

प्रियंका सौरभ

राज्यसभा में सभापति के खिलाफ विपक्ष खेमे ने अविश्वास प्रस्ताव लाने का नोटिस दिया है। भारतीय संसद के इतिहास में यह पहला मौका होगा, जहां राज्यसभा में किसी सभापति के खिलाफ अविश्वास का नोटिस आया हो। दरअसल, यह मौका इसलिए सामने आया, क्योंकि सभापति के सदन में रुख से सभी विपक्षी दल नाखुश थे। विपक्ष का आरोप है कि सभापति हमेशा सत्तारूढ़ खेमे का पक्ष लेते हैं और विपक्ष की आवाज दबाते हैं। विपक्ष आसन को निष्पक्ष देखना चाहता है, लेकिन पिछली लोकसभा के बाद जब 18वीं लोकसभा में भी राज्यसभा में चीजें नहीं बदलीं तो पिछले सत्र में प्रस्ताव लाने की चर्चा चलाकर विपक्ष ने कोई कड़ा कदम उठाने का संदेश देने की कोशिश की।

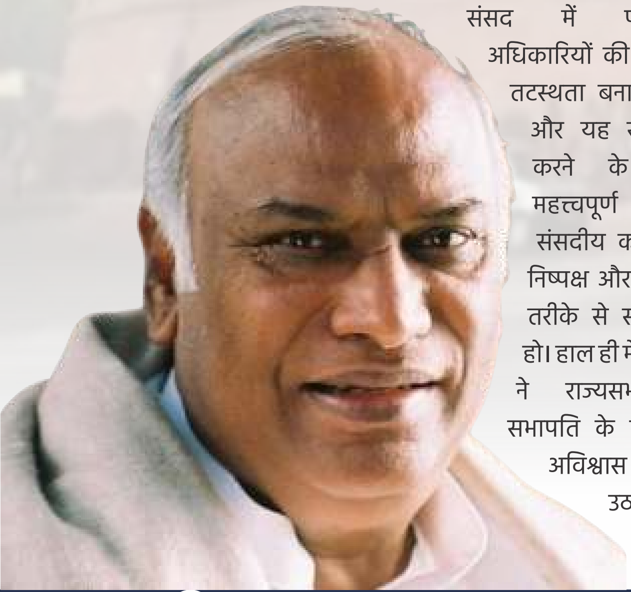

संसद में पीठासीन अधिकारियों की भूमिका तटस्थता बनाए रखने और यह सुनिश्चित करने के लिए महत्त्वपूर्ण है कि संसदीय कार्यवाही निष्पक्ष और निष्पक्ष तरीके से संचालित हो। हाल ही में, विपक्ष ने राज्यसभा के सभापति के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव उठाया, जिसमें उन पर पक्षपात करने का आरोप लगाया गया। यह स्थिति लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की अखंडता के लिए प्रमुख नेतृत्व भूमिकाओं में निष्पक्षता बनाए रखने के महत्त्व को उजागर करती है। संसदीय कार्यवाही की तटस्थता बनाए रखने में संसद के पीठासीन अधिकारियों की भूमिका बहस में निष्पक्षता सुनिश्चित करना है। पीठासीन अधिकारियों से यह सुनिश्चित करने की अपेक्षा की जाती है कि सभी सांसदों को, चाहे वे किसी भी पार्टी से सम्बद्ध हों, बहस में भाग लेने के समान अवसर दिए जाएँ। निर्णयों में निष्पक्षता: अध्यक्ष द्वारा किए गए निर्णय पक्षपातपूर्ण झुकाव के बजाय संसदीय प्रक्रियाओं पर आधारित होने चाहिए। अध्यक्ष को सरकार और विपक्ष के बीच संघर्षों में मध्यस्थता करनी चाहिए, शिष्टाचार बनाए रखते हुए रचनात्मक संवाद के लिए जगह बनानी चाहिए। एक तटस्थ पीठासीन अधिकारी संसद की अखंडता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है, लोकतांत्रिक बहस के लिए अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देता है। यदि

अध्यक्ष को तटस्थ माना जाता है, तो संसदीय प्रणाली में विश्वास मज़बूत होता है, जिससे स्वस्थ लोकतांत्रिक चर्चाओं को बढ़ावा मिलता है, जैसा कि यू.के. जैसे परिपक्व लोकतंत्रों में देखा जाता है।

संसदीय संस्था की वैधता की रक्षा के लिए पीठासीन अधिकारी को हमेशा निष्पक्षता का प्रदर्शन करना चाहिए। यदि अध्यक्ष को पक्षपाती माना जाता है, तो इससे संसदीय कार्यवाही में विश्वास कम हो सकता है और विधायी प्रक्रिया में जनता का विश्वास कम हो सकता है। अध्यक्ष के कार्यों में पक्षपात की धारणा के परिणामस्वरुप जनता में यह धारणा बन सकती है कि संसद को एक पार्टी के हितों की सेवा के लिए हेरफेर किया जा रहा है। पक्षपातपूर्ण अध्यक्ष संसद के भीतर राजनीतिक विभाजन को बढ़ा सकता है, जिससे सरकार और विपक्ष के बीच संघर्ष बढ़ सकता है। ऐसे परिदृश्य में, सरकार और विपक्ष अध्यक्ष के निर्णयों को चुनौती देने के लिए चरम रणनीति का सहारा ले सकते हैं, जिससे संसद में अधिक शत्रुतापूर्ण और कम उत्पादक वातावरण बन सकता है। अध्यक्ष में कथित पक्षपात संसद की संस्था को ही कमजोर करता है, जो लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने में केंद्रीय भूमिका निभाता है। यदि अध्यक्ष पक्षपातपूर्ण है, तो संसद के भीतर जवाबदेही के तंत्र विफल हो सकते हैं, जिससे अनियंत्रित कार्यकारी शक्ति की अनुमति मिलती है। यदि अध्यक्ष को किसी एक राजनीतिक दल के साथ गठबंधन करते हुए देखा जाता है, तो इससे लोकतांत्रिक प्रक्रिया और राजनीतिक संस्थाओं के प्रति जनता का मोहभंग हो सकता है। पीठासीन अधिकारी की भूमिका के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश स्थापित करने से निर्णय लेने में निरंतरता और निष्पक्षता बनाए रखने में मदद मिलेगी। यू.के. संसद में, अध्यक्ष एक औपचारिक आचार संहिता का पालन करता है जो तटस्थता सुनिश्चित करता है, पक्षपात पर चिंताओं को दूर करने और संसदीय कार्यवाही में पारदर्शिता को बढ़ावा देने में मदद करता है।

पीठासीन अधिकारियों के लिए लंबे कार्यकाल सुनिश्चित करने से उन्हें अपनी नेतृत्व भूमिकाओं में विश्वास, स्थिरता और तटस्थता बनाने की अनुमति मिल सकती है। जर्मन बुंडेस्टैग अध्यक्ष का निश्चित कार्यकाल दीर्घकालिक नेतृत्व स्थिरता सुनिश्चित करता है, राजनीतिक उथल-पुथल के दौरान भी पक्षपातपूर्ण निर्णय लेने की धारणा को कम करता है। अध्यक्ष के निर्णयों की समीक्षा करने के लिए स्वतंत्र निरीक्षण तंत्र शुरु करने से अधिक जवाबदेही सुनिश्चित हो सकती है और पक्षपातपूर्ण कार्रवाइयों को रोका जा सकता है। पीठासीन अधिकारियों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम उन्हें संसदीय कार्यवाही की जटिलताओं को निष्पक्ष रुप से संभालने के लिए आवश्यक कौशल से लैस कर सकते हैं। निष्पक्ष निर्णय लेने और संघर्ष समाधान पर केंद्रित नेतृत्व प्रशिक्षण अध्यक्ष को तटस्थता बनाए रखते हुए राजनीतिक दबावों को बेहतर ढंग से नेविगेट करने में मदद कर सकता है। संसदीय समितियों और चर्चाओं में द्विदलीय सहयोग को बढ़ावा देने से निर्णय लेने के लिए अधिक संतुलित दृष्टिकोण को बढ़ावा मिल सकता है। संसदीय समितियों के भीतर अंतर-दलीय संवाद और सहयोग को प्रोत्साहित करने से मतभेदों को दूर करने में मदद मिल सकती है और यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि सरकार और विपक्ष के बीच मध्यस्थता में अध्यक्ष तटस्थ रहें।

संसदीय कार्यवाही की तटस्थता सुनिश्चित करने में संसद के पीठासीन अधिकारियों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। लोकतांत्रिक संस्थाओं की विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए, अध्यक्ष के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करना, द्विदलीय सहयोग को बढ़ावा देना और स्पष्ट दिशा-निर्देशों और लंबे कार्यकाल के माध्यम से निष्पक्ष नेतृत्व सुनिश्चित करना आवश्यक है। दरअसल, इसके जरिए विपक्ष कहीं न कहीं संसद के दोनों सदनों में आसन को एक संदेश देना चाह रहा है कि अगर आसन निष्पक्ष नहीं दिखता है तो विपक्ष अपने संवैधानिक अधिकारों को इस्तेमाल करने में नहीं हिचकिचाएगा। पिछले सत्र में लोकसभा स्पीकर को लेकर भी राजनीतिक गलियारे में ऐसी चर्चा थी।

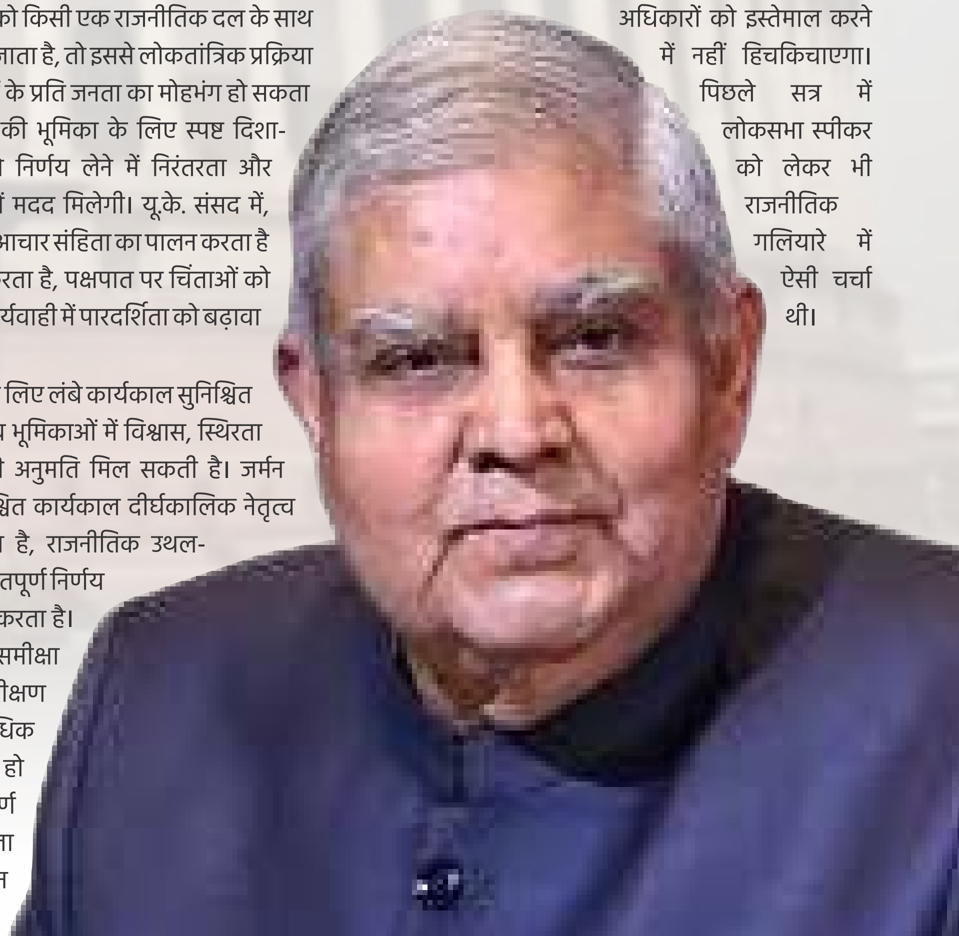

ये महाकुम्भ बनेगा एकता का महायज्ञ -पीएम मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तीर्थराज प्रयागराज में 5500 करोड़ की 167 परियोजनाओं का लोकार्पण किया। इस अवसर पर पीएम ने बहुभाषिनी एआई चैटबॉट 'कुम्भ सहायक' का भी शुभारंभ किया। इस दौरान पीएम मोदी ने कहा कि प्रयागराज की पावन धरा पर अगले साल महाकुम्भ का आयोजन देश की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक पहचान को नए शिखर पर स्थापित करेगा। उन्होंने कहा कि विश्व का इतना बड़ा आयोजन, हर रोज लाखों श्रद्धालुओं के स्वागत और सेवा की तैयारी, लगातार 45 दिनों तक चलने वाला महायज्ञ, एक नया नगर बसाने का महा अभियान, प्रयागराज की इस धरती पर एक नया इतिहास रचा जा रहा है। उन्होंने कहा कि विश्वास और श्रद्धा के साथ कहता हूं कि अगर इस महाकुम्भ का वर्णन एक वाक्य में करना हो तो मैं कहूंगा यह एकता का ऐसा महायज्ञ होगा जिसकी चर्चा पूरी दुनिया में होगी। इससे पूर्व पीएम मोदी ने रिमोट का बटन दबाकर महाकुम्भ से संबंधित परियोजनाओं का लोकार्पण किया। इस दौरान, पीएम ने महाकुम्भ 2025 पर आधारित एक लघु फिल्म का भी अवलोकन किया।

हरिओम मिश्रा

यह है हमारा तीर्थराज प्रयाग

पीएम ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमारा भारत पवित्र स्थलों और तीर्थों का देश है। यह गंगा, यमुना, सरस्वती, कावेरी, नर्मदा जैसी अनगिनत पवित्र नदियों का देश है। इन नदियों के प्रवाह की जो पवित्रता है, इन अनेकानेक तीर्थों का जो महत्व है उनका संगम, उनका समुच्चय, उनका योग, उनका सहयोग, उनका प्रभाव, उनका प्रताप, यह प्रयाग है। यह केवल तीन पवित्र नदियों का ही संगम नहीं है, प्रयाग के बारे में कहा गया है कि माघ मकरगत रवि जब होई, तीरथ पतिहिं आव सब कोई...अर्थात जब सूर्य मकर में प्रवेश करते हैं, सभी दैवीय शक्तियां, सभी तीर्थ, सभी ऋषि, महर्षि, मनीषी प्रयाग में आ जाते हैं। यह वह स्थान है जिसके प्रभाव के बिना पुराण पूरे नहीं होते। प्रयागराज वह स्थान है, जिसकी प्रशंसा वेद की ऋचाओं ने की है। प्रयाग वह है जहां पग-पग पर पवित्र स्थान है, जहां पग पग पर पुण्य क्षेत्र हैं। त्रिवेणीं माधवं सोमं भरद्वाजं च वासुकिम्, वंदेऽक्षयवटं शेषं प्रयागं तीर्थनायकम्...अर्थात त्रिवेणी का त्रिकाल प्रभाव, वेणी माधव की महिमा, सोमेश्वर के आशीर्वाद, ऋषि भारद्वाज की तपोभूमि, नागराज वासुकि का विशेष स्थान, अक्षय वट की अमरता और शेष की अशेष कृपा, यह है हमारा तीर्थराज प्रयाग। तीर्थराज प्रयाग यानी चारी पदारथ भरा भंडारू, पुष्ण प्रदेश देश अतिचारू...अर्थात जहां धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पदार्थ सुलभ हैं, वह प्रयाग है।

जो व्यक्ति प्रयाग में स्नान करता है, वह हर पाप से मुक्त हो जाता है

पीएम बोले, महाकुम्भ हजारों वर्ष पहले से चली आ रही हमारे देश की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक यात्रा का पुण्य और जीवंत प्रतीक है। एक ऐसा आयोजन जहां हर बार धर्म, ज्ञान, भक्ति और कला का दिव्य समागम होता है। संगम में स्नान से करोड़ तीर्थ के बराबर पुण्य

- पीएम ने कहा- प्रयागराज केवल एक भौगोलिक भूखंड नहीं है, यह एक आध्यात्मिक अनुभव क्षेत्र है
- रिमोट का बटन दबाकर पीएम मोदी ने बहुभाषिनी एआई चैटबॉट 'कुम्भ सहायक' का भी किया शुभारंभ
- संगम में डुबकी लगाने वाला हर भारतीय एक भारत, श्रेष्ठ भारत की अद्भुत तस्वीर प्रस्तुत करता है: पीएम मोदी
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रयागराज में महाकुम्भ से पहले 5500 करोड़ की 167 परियोजनाओं का किया लोकार्पण
- महाकुम्भ का वर्णन एक वाक्य में करना हो तो कहूंगा यह एकता का ऐसा महायज्ञ होगा जिसकी चर्चा पूरी दुनिया में होगी : मोदी
- बोले- यहां जातियों का भेद खत्म हो जाता है, संप्रदायों का टकराव मिट जाता है, करोड़ों लोग एक ध्येय, एक विचार से जुड़ जाते हैं
- महाकुम्भ हजारों वर्ष पहले से चली आ रही हमारे देश की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक यात्रा का पुण्य और जीवंत प्रतीक : पीएम मोदी
- पीएम बोले- प्रयागराज की पावन धरा पर महाकुम्भ का आयोजन देश की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक पहचान को नए शिखर पर करेगा स्थापित
- करोड़ों श्रद्धालुओं के स्वागत और सेवा की तैयारी, एक नया नगर बसाने का महा अभियान, प्रयागराज में रचा जा रहा एक नया इतिहास : पीएम

मिल जाता है। जो व्यक्ति प्रयाग में स्नान करता है, वह हर पाप से मुक्त हो जाता है। राजा महाराजाओं का दौर हो या फिर सैकड़ो वर्षों की गुलामी का कालखंड, आस्था का यह प्रवाह कभी नहीं रुका। इसकी एक बड़ी वजह यह रही है की कुम्भ का कारक कोई बाहरी शक्ति नहीं है, किसी बाहरी व्यवस्था के बजाय कुम्भ मनुष्य के अंतर्मन की चेतना का नाम है। यह चेतना स्वतः जागृत होती है। यही चेतना भारत के कोने-कोने से लोगों को संगम के तट तक खींच लाती है। गांव, कस्बों, शहरों से लोग प्रयागराज की ओर निकल पड़ते हैं। पीएम मोदी ने कहा कि प्रयागराज केवल एक भौगोलिक भूखंड नहीं है, यह एक आध्यात्मिक अनुभव क्षेत्र है।

महाकुम्भ में खत्म हो जाते हैं जाति और पंथ के भेद

महाकुम्भ के महत्व के बारे में पीएम मोदी ने कहा कि महाकुम्भ जैसी सामूहिकता की शक्ति, समागम शायद ही कहीं और देखने को मिले। यहां आकर संत, महंत, ऋषि, मुनि, ज्ञानी, विद्वान, सामान्य मानवीय सब एक हो जाते हैं। सब एक साथ त्रिवेणी में डुबकी लगाते हैं। यहां जातियों का भेद खत्म हो जाता है, संप्रदायों का टकराव मिट जाता है, करोड़ों लोग एक ध्येय, एक विचार से जुड़ जाते हैं। इस बार भी महाकुम्भ के दौरान यहां अलग-अलग राज्यों से करोड़ों लोग जुटेंगे, उनकी भाषा अलग होगी, जातियां अलग होंगी, मान्यताएं अलग होंगी, लेकिन संगम नगरी में आकर वह सब एक हो जाएंगे। इसीलिए कहता हूं कि यह महाकुम्भ एकता का महायज्ञ है, जिसमें हर तरह के भेदभाव की आहुति दी जाती है। यहां संगम में डुबकी लगाने वाला हर भारतीय एक भारत, श्रेष्ठ भारत की अद्भुत तस्वीर प्रस्तुत करता है।

देश को दिशा दिखाते हैं कुम्भ जैसे आयोजन

पीएम मोदी ने कहा कि महाकुम्भ की परंपरा का सबसे अहम पहलू यह है कि इस दौरान देश को दिशा मिलती है। कुम्भ के दौरान संतो के वाद में, संवाद में, शास्त्रार्थ में, शास्त्रार्थ के अंदर देश के सामने मौजूद विषयों पर, देश के सामने मौजूद चुनौतियों पर व्यापक चर्चा होती है और फिर संत जन मिलकर राष्ट्र के विचारों को एक नई ऊर्जा देते हैं, नई राह भी दिखाते हैं। संत महात्माओं ने देश से जुड़े कई महत्वपूर्ण निर्णय कुम्भ जैसे आयोजन स्थल पर ही लिए हैं। जब संचार के आधुनिक माध्यम नहीं थे, तब कुम्भ जैसे आयोजनों ने बड़े सामाजिक परिवर्तन का आधार तैयार किया था।

कुम्भ में संत और ज्ञानी लोग मिलकर समाज के सुख-दुख की चर्चा करते हैं, वर्तमान और भविष्य को लेकर चिंतन करते हैं। ऐसे आयोजनों से देश के कोने-कोने में समाज में सकारात्मक संदेश जाता है, राष्ट्र चिंतन की यह धारा निरंतर प्रवाहित होती है। इस आयोजन के नाम अलग-अलग होते हैं, पड़ाव अलग-अलग होते हैं, मार्ग अलग-अलग होते हैं, लेकिन यात्री एक होते हैं, मकसद एक होता है।

श्रद्धालुओं के लिए सुविधाएं जुटाना डबल इंजन सरकार का दायित्व

पीएम मोदी ने कहा कि कुम्भ और धार्मिक यात्राओं का इतना महत्व होने के बावजूद पहले की सरकारों के समय इन पर ध्यान नहीं दिया गया। श्रद्धालु ऐसे आयोजनों में कष्ट उठाते रहे, लेकिन तब की सरकारों को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। इसकी वजह थी भारतीय संस्कृति से भारत की आस्था से उनका लगाव नहीं था, लेकिन आज केंद्र और राज्य में भारत के प्रति आस्था, भारतीय संस्कृति को मान देने वाली सरकार है। इसलिए कुम्भ में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए सुविधाएं जुटाना डबल इंजन की सरकार अपना दायित्व समझती है। इसलिए यहां केंद्र और राज्य सरकार ने मिलकर हजारों करोड़ों की योजनाएं शुरु की हैं। सरकार के अलग-अलग विभाग जिस तरह महाकुम्भ की तैयारी में जुटे हैं, वह बहुत ही सराहनीय है। देश-दुनिया के किसी कोने से कुम्भ तक पहुंचने में कोई दिक्कत ना हो, इसके लिए यहां की कनेक्टिविटी पर विशेष फोकस किया गया है।

विकास के साथ विरासत को समृद्ध बनाने पर फोकस

पीएम मोदी ने कहा, हमारी सरकार ने विकास के साथ-साथ विरासत को भी समृद्ध बनाने पर फोकस किया है। आज देश के कई हिस्सों में अलग-अलग टूरिस्ट सर्किट विकसित किए जा रहे हैं। रामायण सर्किट, श्री कृष्ण सर्किट, बुद्धिस्ट सर्किट... इनके माध्यम से हम देश के उन स्थानों को महत्व दे रहे हैं जिन पर पहले फोकस नहीं था। प्रदेश दर्शन योजना हो या प्रसाद योजना हो, इनके माध्यम से तीर्थ स्थलों पर सुविधाओं का विकास किया जा रहा है। अयोध्या के भव्य राम मंदिर ने पूरे शहर को कैसे भव्य बना दिया है, हम सब इसके साक्षी हैं। विश्वनाथ धाम, महाकाल महालोक की चर्चा आज पूरे विश्व में है। यह अक्षय वट कॉरिडोर, हनुमान मंदिर कॉरिडोर, भारद्वाज ऋषि आश्रम भी इसी विजन का प्रतिबिंब है। श्रद्धालुओं के लिए सरस्वती कूप, पातालपुरी, नाग वासुकि मंदिर, द्वादश माधव

मंदिर का कायाकल्प किया जा रहा है।

आने वाली पीढ़ियों को समता और समरसता का संदेश देगी भगवान राम और निषाद राज की प्रतिमा

पीएम मोदी ने भगवान राम और निषादराज की मित्रता के प्रतीक श्रृंग्वेरपुर धाम के लोकार्पण पर भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि हमारा यह प्रयागराज निषादराज की भी भूमि है। भगवान राम के मर्यादा पुरुषोत्तम बनने की यात्रा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव श्रृंग्वेरपुर का भी है। भगवान राम और केवट का प्रसंग आज भी हमें प्रेरित करता है। केवट ने अपने प्रभु को सामने पाकर उनके पैर धोए थे, उन्हें अपनी नाव से नदी पार कराई थी। इस प्रसंग में श्रद्धा का अनन्य भाव है। इसमें भगवान और भक्त की मित्रता का अध्याय है। इस घटना का यह संदेश है कि भगवान भी अपने भक्त की मदद ले सकते हैं। प्रभु श्री राम और निषाद राज की इसी मित्रता के प्रतीक के रूप में श्रृंग्वेरपुर धाम का विकास किया जा रहा है। भगवान राम और निषाद राज की प्रतिमा भी आने वाली पीढियों को समता और समरसता का संदेश देती रहेगी।

सफाई कर्मियों के पैर धोना मेरे जीवन का यादगार अनुभव

स्वच्छ महाकुम्भ को लेकर पीएम मोदी ने कहा कि कुम्भ जैसे भव्य और दिव्य आयोजन को सफल बनाने में स्वच्छता की बहुत बड़ी भूमिका है। महाकुम्भ की तैयारी के लिए नमामि गंगे कार्यक्रम को तेजी से आगे बढ़ाया गया है। प्रयागराज शहर के सैनिटेशन और वेस्ट मैनेजमेंट पर फोकस किया गया है। लोगों को जागरूक करने के लिए गंगा दूत, गंगा प्रहरी और गंगा मित्रों की नियुक्ति की गई है। इस बार कुम्भ में 15000 से ज्यादा मेरे सफाई कर्मी भाई बहन स्वच्छता की बागडोर संभालने वाले हैं। कुम्भ की तैयारी में जुटे हुए अपने सफाई कर्मी भाई बहनों का अग्रिम आभार भी व्यक्त करूंगा। करोड़ों लोग यहां पर जिस पवित्रता, स्वच्छता, आध्यात्मिकता के साक्षी बनेंगे, वह आपके योगदान से ही संभव होगा। इस नाते यहां हर श्रद्धालु के पुण्य में आप भी भागीदार बनेंगे। जैसे भगवान कृष्ण ने जूठे पत्तल उठाकर संदेश दिया था कि हर काम का महत्व है, वैसे ही आप भी अपने कार्य से इस आयोजन की महानता को और बड़ा करेंगे। 2019 में भी कुम्भ आयोजन के समय यहां की स्वच्छता की बहुत प्रशंसा हुई थी। इसलिए आपके पैर धुलकर मैंने अपनी कृतज्ञता दिखाई थी। हमारे स्वच्छता कर्मियों के पैर धोने से मुझे जो संतोष मिला, वह मेरे लिए जीवन भर का यादगार अनुभव बन गया है।

आर्थिक सशक्तिकरण का माध्यम बनेगा महाकुम्भ

पीएम मोदी ने महाकुम्भ में आर्थिक प्रगति को लेकर भी बात की। उन्होंने कहा कि हम सभी देख रहे हैं कि कैसे कुम्भ से पहले इस क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियों में तेजी आ रही है। यहां हर रोज लाखों की संख्या में लोग आएंगे, पूरी व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रयागराज में बड़ी संख्या में लोगों की जरूरत पड़ेगी। 6000 से ज्यादा हमारे नाविक साथी, हजारों दुकानदार साथी, पूजा पाठ और स्नान ध्यान करने में मदद करने वाले सभी का काम बहुत बढ़ेगा। यानी यहां बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर तैयार होंगे। सप्लाई चेन को बनाए रखने के लिए व्यापारियों को दूसरे शहरों से सामान मंगाना पड़ेगा। प्रयागराज कुम्भ का प्रभाव आसपास के जिलों पर भी पड़ेगा। देश के दूसरे राज्यों से आने वाले श्रद्धालु ट्रेन या विमान की सेवाएं लेंगे, इससे भी अर्थव्यवस्था में तेजी आएगी। यानी महाकुंभ से सामाजिक मजबूती तो मिलेगी ही लोगों को आर्थिक सशक्तिकरण भी होगा।

ज्यादा से ज्यादा लोगों को डाटा और टेक्नोलॉजी के इस संगम में जोड़ा जाए

पीएम मोदी ने डिजिटल कुम्भ को लेकर कहा कि पहली बार कुम्भ में एआई का प्रयोग होगा। एआई चैटबॉट 11 भारतीय भाषाओं में संवाद करने में सक्षम है। मेरा यह भी सुझाव है कि डाटा और टेक्नोलॉजी के इस संगम में ज्यादा से ज्यादा लोगों को जोड़ा जाए, जैसे महाकुम्भ से जुड़े फोटोग्राफी कंपटीशन का आयोजन किया जा सकता है। महाकुम्भ को एकता के महाकुम्भ के तौर पर दिखाने वाली फोटोग्राफी की प्रतियोगिता भी रखी जा सकती है। इस पहल से युवाओं में कुम्भ का आकर्षण बढ़ेगा। कुम्भ में आने वाले ज्यादा से ज्यादा श्रद्धालु इसमें हिस्सा लेंगे। अध्यात्म और प्रकृति से जुड़ी प्रतियोगिता का आयोजन कर सकते हैं। पीएम ने कहा कि आज देश एक साथ विकसित भारत के संकल्प की तरफ तेजी से बढ़ रहा है। पूरा विश्वास है कि इस महाकुम्भ से निकली आध्यात्मिक और सामूहिक शक्ति हमारे संकल्प को और मजबूत बनाएगी। महाकुम्भ स्नान ऐतिहासिक हो, अविस्मरणीय हो, मां गंगा, मां यमुना और मां सरस्वती की त्रिवेणी से मानवता का कल्याण हो, हम सबकी यही कामना है। ●●●

बांग्लादेश छात्र विद्रोह अब हिन्दू विरोधी आंदोलन में बदला

इन दिनों अंतरराश्ट्रीय स्तर पर दो देश भारत के लिए खासतौर से चिंता का सबब बने हुए हैं। एक कनाडा जो पूरी तरह से खालिस्तान समर्थकों का गढ़ बना गया है। हालांकि भारत भी समय-समय पर कनाडा सरकार को उनके खालिस्तान प्रेम के प्रति आगाह करता रहा है। लेकिन इसके बावजूद भी उसके बर्ताव में कोई परिवर्तन नहीं दिख रहा है। ताजा उदाहरण है खालिस्तानी आतंकी अर्श डल्ला को जमानत देने का। तो वहीं दूसरी ओर भारत का पड़ोसी देश बांग्लादेश जहां इन दिनों अल्पसंख्यक समुदाय और खास तौर पर हिंदू समुदाय से लेकर उनके धार्मिक स्थलों व उनकी संपति को फिर से निशाना बनाया जा रहा है। यहां यह बताते चले कि अल्पसंख्यक समुदाय और खास तौर पर

फरीद वारसी

हिंदू समुदाय को निशाना बनाए जाने के मामले में भारत का एक और पड़ोसी देश पाकिस्तान पहले से ही सारी दुनिया में अपनी छवि को खुद अपने ही हाथों से प्रभावित कर इस मामले में बदनाम होता रहा है और अब इस कड़ी में अगला नाम पाकिस्तान के कोख से निकला वह बांग्लादेश है, जिसका वजूद भारत की कृपा से ही दुनिया के नक्शे पर आया। हालांकि पाकिस्तान की तुलना में बांग्लादेश अपने जन्मकाल से भारत का मित्रदेश रहा है। तख्तापलट के बाद वहां की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना भारत में ही राजनीतिकशरण लिए हुए हैं। लेकिन अब जिस तरह से वहां हिंदू समुदाय पर अत्याचार हो रहे हैं, उसको लेकर भारत के साथ बांग्लादेश के संबंध प्रभावित हो, जो कोई हैरानी की बात नहीं है। क्यों कि बांग्लादेश मेंशुरु हुआ छात्र विद्रोह अब हिन्दू अत्याचार आंदोलन का बड़ा रुप ले चुका है।

मालूम हो कि बांग्लादेश में इन दिनों और

पिछले काफी समय से जो घटनाचक्र घटित हुए हैं उससे बांग्लादेश की प्रगतिशील लोकतंत्र की छवि सारी दुनिया में कमजोर हुई है। लेकिन शायद बांग्लादेश को इसकी चिंता नहीं है। बांग्लादेश के संवैधानिक आश्वासन के बावजूद वहां के हिंदू, जो कि आबादी का लगभग नौ फीसदी हैं, लगातार हिंसा, बर्बरता और सामाजिक उत्पीड़न का शिकार हो रहे हैं। वहां हिंदुओं के घरों व मंदिरों पर भीड़ पर हमलों की खबरें चिंता बढ़ाने वाली हैं। जिसमें हसीना सरकार के पतन के बाद खासी तेजी आई है। यहां यह बताते चलें कि इसी साल जुलाई के महीने में बांग्लादेश में छात्रों का ऐसा जबरदस्त विद्रोह हुआ कि देश की सेना मूक दर्शक बनी रही और देखते ही देखते हसीना सरकार का तख्ता पलट हो गया। जैसा कि उल्लेखनीय है कि जो इन दिनों भारत में राजनीतिक शरण लिए हुए हैं। हसीना सरकार के तख्ता होने के बाद से वहां अल्पसंख्यकों, खासकर हिंदुओं पर जिस तरह लगातार हमले हो रहे हैं उसको लेकर भारत सहित सारी दुनिया में चिंता की लकीर खींच गई है। इस्कॉन से जुड़े धर्मगुरु चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी बांग्लादेश में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचार की एक बड़ी घटना को रेखांकित करती है। और तो और चिन्मय कृष्ण दास की जमानत याचिका खारिज होने के बाद उनके वकील की निर्मम हत्या असहिष्णुता की पराकाष्ठा का प्रकटीकरण है। इससे अंदाज लगाया जा सकता है कि बांग्लादेश में हिन्दू अल्पसंख्यक किन भयावह स्थितियों का सामना कर रहे हैं। जहां तक चिन्मय दास का सवाल है तो चिन्मय दास बांग्लादेश में हिंदुओं के अधिकारों और उनके उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि पिछले चार महीनों में 38 साल के चिन्मय कृष्ण दास बांग्लादेश में एक जाना-पहचाना नाम बन गए हैं। आज वो बांग्लादेश में हिंदुओं के सबसे बड़े नेता के रूप में उभर कर सामने आए हैं। बांग्लादेश पुलिस की खुफिया शाखा ने उन्हें उस समय गिरफ्तार कर लिया था, जब वे ढाका से चटगांव जा रहे थे। उन्हें गिरफ्तार करने वाले पुलिसकर्मी सादे कपड़ों में आए थे। अगर इस्कॉन मंदिर की बात करें तो पहले इस्कॉन मंदिर को जहां बंद कराया गया था वहीं अब इस्कॉन से जुड़े 17 लोगों के बैंक खातों को फ्रीज कर दिया गया है। यह जानकारी अलग-अलग मीडिया रिपोर्ट्स से सामने आई है। खास बात ये है कि जिन खातों को फ्रीज करने का आदेश दिया गया है उनमें इस्कॉन के पूर्व सदस्य चिन्मय कृष्ण दास का खाता भी शामिल हैं। ये कार्रवाई बांग्लादेश उच्च न्यायालय द्वारा अंतरराष्ट्रीय कृष्ण चेतना सोसायटी (इस्कॉन) पर प्रतिबंध लगाने की मांग वाली याचिका के खारिज होने के बाद की गई है। आपको बता दें कि समाचार पत्र प्रोथोम एलो के अनुसार बांग्लादेश वित्तीय खुफिया इकाई (बीएफआईयू) ने विभिन्न बैंकों और वित्तीय संस्थानों को ये निर्देश भेजे, जिसमें इन खातों से संबंधित सभी प्रकार के लेन-देन को निलंबित कर दिया गया। तो वहीं दूसरी ओर बांग्लादेश के चट्टोग्राम में नारेबाजी कर रही भीड़ ने तीन हिंदू मंदिरों में तोड़फोड़ की थी। खबरों के अनुसार यह हमला बंदरगाह शहर के हरीश चंद्र मुनसेफ लेन में हुआ और इस दौरान शांतानेश्वरी मातृ मंदिर, शनि मंदिर और शांतनेश्वरी कालीबाड़ी मंदिर को निशाना बनाया गया। समाचार पोर्टल ने मंदिर अधिकारियों के हवाले से बताया था कि नारेबाजी कर रहे सैकड़ों लोगों के एक समूह ने मंदिरों पर ईंट-पत्थर फेंके, जिससे शनी मंदिर और अन्य दो मंदिरों के द्वार क्षतिग्रस्त हो गए।

बांग्लादेश में अल्पसंख्यक संगठनों द्वारा लगातार सुरक्षा की गुहार लगाये जाने के बाद विश्वास बहाली की जिम्मेदारी

कार्यवाहक सरकार पर है, जिसके मुखिया नोबेल पुरस्कार विजेता मोहम्मद यूनुस हैं। जिसका यह दायित्व बनता था कि वे उत्पीड़न के शिकार अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों को न्याय दिलाने के लिये विशेष पहल करें। लेकिन वे पूरी मूकदर्शक बने हुए हैं। विदित हो कि बांग्लादेश में शेख हसीना को पद से हटाने के बाद कट्टरपंथियों ने शासन करने के लिए जिन मोहम्मद यूनुस को चुना वह तो सबसे बड़े कट्टरपंथी निकले। मोहम्मद यूनुस की आंखों के सामने हिंदुओं का खून बह रहा है और वह कह रहे हैं कि यह हमारा आंतरिक मामला है। मोहम्मद यूनुस जिस तरह इतने खूनखराबे पर भी खामोश हैं और मुस्कुरा के सब कुछ देख रहे हैं ऐसा लगता है कि उनके इरादे नेक नहीं हैं। वहीं दूसरी ओर जो खबरें आ रही है वह और भी चिंता बढ़ाने वाली हैं। खबरों के मुताबिक बांग्लादेश का झुकाव इन दिनों कभी उसके सबसे कट्टर विरोधी रहे पाकिस्तान से हो रहा है। पाकिस्तान से बांग्लादेश में जहाज का डॉकिंग ढाका-इस्लामाबाद संबंधों में एक महत्वपूर्ण बदलाव है। हसीना के निष्कासन के बाद से दोनों देशों पाकिस्तान और बांग्लादेश के बीच वीजा प्रक्रिया भी सरल हो गई है। सितंबर में इस्लामाबाद ने घोषणा की कि बांग्लादेशी बिना वीज़ा शुल्क के देश की यात्रा कर सकते हैं। सिर्फ इतना ही नहीं विगत 11 सितंबर को पाकिस्तान के संस्थापक मुहम्मद अली जिन्ना की 76वीं पुण्य तिथि बांग्लादेश कर राजधानी ढाका के नेशनल प्रेस क्लब में उर्दू शायरी के साथ मनाई गई। रिपोर्टों में कहा गया है कि कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रवक्ताओं ने जिन्ना की प्रशंसा की, और यहां तक कि एक ने कहा कि जिन्ना हमारे राष्ट्र के पिता हैं और पाकिस्तान के बिना, बांग्लादेश का अस्तित्व नहीं होता। ढाका और इस्लामाबाद के बीच गहराते रिश्ते पड़ोसी देश भारत के लिए चिंता का विषय है। पाकिस्तान के साथ भारत के खराब संबंधों को देखते हुए और बांग्लादेश में पाकिस्तान के किसी भी प्रकार के इरादे के बारे में नई दिल्ली को सतर्क रहने की जरुरत है। क्यां कि इस संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है कि पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई इन नजदीकियों का फायदा उठाकर क्षेत्र में अशांति फैलाने की कोशिश कर सकती है। पहले भी बांग्लादेश के जरिए भारत में खलबली मचाने की कोशिशें होती रही हैं।

जहां तक मोदी सरकार का सवाल है तो बांग्लादेश में अल्पसंख्यक समुदाय पर हो रहे हमलों के बाद भारत ने अपनी चिंताओं को इजहार करते हुए बांग्लादेश से अपनी बात प्रमुखता से रखी। विदित हो कि बांग्लादेश में अल्पसंख्यक संकट पर भारत ने एक बार फिर बयान जारी कर अपनी चिंता जताई है। विदेश मंत्रालय की तरफ से कहा गया कि भारत ने लगातार और दृढ़ता से हिंदू अल्पसंख्यकों पर हमलों और कानून-व्यवस्था के मामलों को उठाया है। इन घटनाओं को केवल यह कहकर खारिज नहीं किया जा सकता कि मीडिया में बढा-चढ़ाकर दिखाया जा रहा है। हम आक्रामक बयानबाजी, हिंसा और उकसावे की बढ़ती घटनाओं से चिंतित हैं। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार को उम्मीदों पर खरा उतरना चाहिए। बांग्लादेश में अंतरिम सरकार को सभी अल्पसंख्यकों की सुरक्षा की अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए। वहीं इस प्रकरण पर सिर्फ मोदी सरकार ही नहीं, देश की जनता और आरएसएस भी चितिंत है। भारत में तो इसको लेकर एक बड़ा प्रदर्शन भी हुआ। हां, इस मामले में देश के विपक्ष की चुप्पी इस ओर इशारा करती है कि वह अपने वोटबैंक के कारणा बांग्लादेश में बड़े पैमाने पर जारी अल्पसंखक विरोधी हिंसा को नजरअंदाज कर रहे हैं। बहरहाल, मोदी सरकार को राजनीतिक व कूटनीतिक प्रयासों से वहां की अंतरिम सरकार पर दबाव बनाना होगा ताकि वह अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के लिए कारगर कदम उठाए तभी कट्टरपंथियों की निरंतर जारी हिंसा पर अंकुश लगाने की उम्मीद की जा सकती है। क्योंकि इस सत्य को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है कि बांग्लादेश की अंतरिम सरकार को वहां की सेना का समर्थन हासिल है और बांग्लादेश की सेना बहुत कुछ पाकिस्तान सेना के नक्शेकदम पर चल कर वहां कहीं हिन्दुओं के सफाए का अपने घृणित एजेंडे पर तो काम नहीं कर रही है? ●●●

वह सुबह कब होगी ?

कुमकुम श्रीवास्तव
लखनऊ

रमैय्या बोतल से लगभग पंद्रह दिन के दुधमुंहे बच्चे को दूध पिला रही थी। पांच साल की शीलू उसका दुपट्टा पकड़े सहमी सी खड़ी थी। सामने बारह साल का मुक्कू उसकी प्यारी दीदी को माला पहना रहा था। हृदय विदारक दृश्य था। लेकिन उसके पास रोने का भी समय नहीं था।बच्चे के जन्म के दौरान कुछ कॉम्प्लिकेशन की वजह से उसकी दीदी ज़िंदगी की ज़ंग हार गईं थीं। वहां पर मौजूद हर शख़्स ग़मगीन था। सबकी ज़ुबां पर एक ही सवाल था कि अब बच्चों का क्या होगा। उधर अंतिम संस्कार की अंतिम विधि चल रही थी, इधर नाते रिश्तेदार उसके जीजा को फिर से सेहरा बांधने की तैयारी कर रहे थे। दुहाई ये दी जा रही थी कि उनके बच्चे कौन संभालेगा? उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया, बस दो क़तरे उनकी आंखों से लुढ़क गये। उनकी तो दुनिया ही उजड़ गई थी।

सारे कर्मकांडों में वक़्त का पता ही नहीं चला। रम्मी तो निहायत मसरुफ़ थी। उसके पास दो बच्चों के साथ पूरा घर का भी काम था। चार महीने से वह यहां रह रही थी। सारा राई रत्ती उसको मालुम था। मुक्कू थोड़ा शांत लग रहा था जबकि नन्हीं शीलू सारे वाक़्यात से अंजान थी। उसके सीने से लगा हुआ मंटू ज़िंदगी के आने वाले तूफ़ान से अंजान मीठी नींद सो रहा था। सभी मातमपुरसी करने आये लोग बच्चों को बेबसी से देखते हुए वापस जा रहे थे।

आज उसकी दीदी को गये हुए पूरा एक महीना गुज़र गया था। वह और उसकी मां तो अपने घर गये ही नहीं थे। छुटके मंटू की वजह से वह ख़ुद भी हिम्मत नहीं जुटा पाई जाने की। आज उसके पापा और जीजा के मां पिताजी भी आये थे। आपस में काफ़ी सलाह मशविरा के बाद नतीजा ये आया कि इसके जीजा के साथ फेरे पड़वा दिये जायें। हालांकि उसके जीजा लगभग चालीस के और रमैय्या कुल सत्रह की थी। जीजा को सबने जोर ज़बरदस्ती से राज़ी कर लिया और उससे तो किसी ने पूछा ही नहीं। उसके ख़्वाबों को दफ़न करने में पूरी क़ायनात की साज़िश शामिल थी। अब कोई भी राजकुमार सफ़ेद घोड़े में नहीं ब्याहने आयेगा। वाह री दुनिया! मंदिर में सादे कपड़ों में उसका ब्याह जीजा से हो गया। उनसे वह हमेशा ख़ौफ़ज़दा रहती थी, काहे से वह बहुत धीर गंभीर व्यक्तित्व वाले इंसान थे। वही अब उसके मालिकेमुख़्तार थे। मम्मी पापा उसको हमेशा के लिए वहां छोड़ कर चले गए।

सबके जाने के बाद जीजा ने उसको कमरे में बुलाया और दुनियादारी बताते हुए कहा, 'रमैय्या हमने तुम्हें कभी भी मुकुंद से अलग नहीं समझा, हमारे लिए तुम बेटी से ऊपर कुछ नहीं हो। ये शादी सिर्फ और सिर्फ बच्चों की वजह से ही हुई है। इस घर की मालकिन हो तुम, पूरा घर तुम्हारे हुक़्म की तामील करेगा। लेकिन हमारे दिल में तुम्हारी दीदी की जगह कोई नहीं ले सकता। फ़रमाबरदार बीवी की तरह वह सर झुकाए सुनती रही। तब तक मंटू बाबू दूध के लिये रोने लगे, और वह चुपचाप कमरे से खिसक गई।

छोटे नवाब पूरी रात जागते थे और दिन को आराम फ़रमाते थे। मुसलसल वह उसकी गलीज साफ़ करती रहती। शीलू पर भी पूरा ध्यान उसका रहता था। मुक्कू स्कूल से आने के बाद उसका हाथ बंटा देता था। जीजा अपने कमरे में दफ़्तर से आने के बाद कुछ ना कुछ पढ़ते रहते थे। उनको वहीं चाय पानी दे आती थी। खाना वह बच्चों और उसके साथ ही बैठ कर खाते थे। अपनी सारी कमाई उसके हवाले करके फ़र्ज़ से फ़ारिग हो जाते थे। पढ़ाई के नाम पर वह केवल दसवीं जमात ही पास कर पाई थी। उसके अपने मां बाप ने उसको फ़र्ज़ के भाड़ में झोंक दिया था। एक का घर बसाने के लिए दूसरे की आहुति दे दी गई। तीनों के साथ वह सोती थी और उसके कथित पति अपने कमरे में सोते थे।

कहते हैं वक़्त सारे घाव भर देता है। रम्मी के साथ भी यही हुआ। ज़िंदगी ढर्रे से लग रही थी। मुक्कू इस साल दसवीं का इम्तिहान देने वाला था। अचानक फिर से उसके ऊपर गाज गिर गई। ऑफ़िस में उसके जीजा का हार्टअटैक से इंतक़ाल हो गया। आंगन का सायादार दरख़्त धराशाई हो गया था, जिसके साये में ये चारों प्राणीं रहते थे। अब किसी से नहीं कहते बना कि रम्मी का दूसरा ब्याह करवा दो। औरतों के लिए कोई नहीं कहता कि वह बच्चे कैसे पालेगी ? ज़िंदगी से वह मायूस हो चली थी। एक अच्छी बात ये हुई कि मरहूम जीजा सरकारी नौकरी में वरिष्ठ ओहदे पर थे। लिहाज़ा एक अच्छी रक़म और उसको मृतक

आश्रित के रूप में चपरासी की नौकरी मिल गई। साथ ही उनकी पेंशन भी आती थी। सब मिलाकर आर्थिक तंगी नहीं थी। बच्चे उसको मौसी ही कहते थे, किसी ने भी उसको मां नहीं कहा, यहां तक कि उसके मंटू ने भी। शौके तमन्ना कुछ थी ही नहीं। बस यही आरज़ू थी की बच्चे कम से कम उसको अब मां का दर्ज़ा दे दें। यहां ये समझ पाना क़तई मुश्किल था कि बच्चे उसकी पनाह में थे या फिर वह उनकी। सबके समझाने बुझाने पर उसने प्राइवेट इंटरमीडिएट कर लिया था। अब कनिष्ठ लिपिक के पद पर उसकी प्रोन्नति हो गई थी।

मुकुंद अब बीटेक कर के दिल्ली जैसे बड़े शहर में एक अच्छी नौकरी पर था। रमैया ने एक सजातीय लड़की से पूरे विधि-विधान से उसकी शादी करा दी। सारे इंतज़ामात उसने अपनी देख रेख में किये थे। मुंह दिखाई में उसने अपनी दीदी के आधे ज़ेवर उसको दे दिये और आधे मंटुआ के लिए संभाल कर रख लिए। हफ़्ते दस दिन के बाद मुक्कू अपनी बीवी को लेकर चला गया। पहले वह घर जल्दी जल्दी आता था। बाद में साल में एक बार आने लगा। धीरे-धीरे वह भी ख़त्म हो गया। अभी शीलू भी बड़ी हो गई थी। एक अच्छा घरवर देख कर काफ़ी शान ओ शौक़त से उसकी भी शादी करा दी। उसका घर वहीं पास में था इसलिए वह और उसका शौहर अक्सर करके मिलने आते रहते थे। जब रम्मी की इतवार या कोई और छुट्टी होती वह अपने दोनों बच्चों को उसके पास छोड़ कर घूमने चली जाती। लौट कर उसके लिए कुछ गिफ़्ट शिफ्ट ले आती थी कि मौसी कुछ कहने ना पायें। अब वह उकताने लगी थी। ख़ामख़ाह वह मुफ़्त की आया फिर से बनी जा रही थी। उसका फ़ायदा सबने उठाया था। कभी किसी को उसने कुछ कहा ही नहीं, ये ख़ामी उसके अंदर बहुत बड़ी थी। इससे वह अब निज़ात पाना चाहती थी। अपनी बेज़ार जिंदगी से तंग आ चुकी थी।

उसी दौरान उसके दफ़्तर में एक महेंद्र नाम के लड़के की नई भर्ती हुई। उसको उसी के साथ अटैच कर दिया गया। रम्मी भी ख़ासी उमरदार हो चुकी थी। अपना भला बुरा ख़ूब समझती थी। मग़र इस दिल का क्या क़सूर वाली बात थी। हालांकि महेंद्र उससे उमर में काफ़ी कम था लेकिन वह उसको धीरे धीरे अच्छा लगने लगा। पहले दफ़्तर में, बाद में बाहर भी दोनों एक साथ देखे जाने लगे। जीवन का ये लुत्फ़ तो उसे कभी आया ही नहीं। इस ख़ुशी का इंतख़ाब उसने शर्मोहया बेच कर किया था। एक वक़्त था जब लोग उसके बारे में कहते थे कि, 'कितने अज़ीम होंगे वो मां बाप जिन्होंने तुम्हें जन्म दिया।' और आज उसके अपने लख़्तेज़िग़र ने ही उससे कहा, 'मौसी, माफ़ कीजियेगा, बाहर लोग आपके बारे में तरह तरह की बातें करते हैं, अच्छा नहीं लगता है सुन कर। कल एक दोस्त की मम्मी कह रहीं थीं कि कैसी नामुराद हैं मौसी, तुम्हारे पापा की इज़्ज़त का कोई ख़याल ही नहीं है। आप इन अंकल का साथ छोड़ दो।' सुनते ही रम्मी आपे से बाहर हो गई। जिसका मुंह कभी नहीं खुलता था उसने हज़ार बातें उसको सुना दीं। उसकी आंखों पर तो महेंद्र के नाम की पट्टी बंधीं थी। यहां तक कह दिया कि 'ये घर हमारा है कोई यतीमख़ाना नहीं है। अगर यहीं बसर करना है तो मुंह पर ताला लगाना होगा। जबकि वह इस बेनाम रिश्ते का नतीजा भी जानती थी। लेकिन वह आंख मूंदकर, बेख़बर जिये जा रही थी। रमैय्या के रवैए की वजह से

शीलू ने भी अब आना बंद कर दिया था। अभी उसके जीवन की कशाकश ख़तम नहीं हुई थी। अचानक से महेन्द्र लम्बी छुट्टी पर अपने घर चला गया। इसको बताया भी नहीं था। कुछ दिनों बाद ऑफ़िस और उसके घर में उसकी शादी का न्योता आ गया। उसका बदन एकदम सुन्न पड़ गया। उसको सपने में भी ग़ुमान नहीं था कि वह उसके साथ ऐसा करेगा। अगर वह बता देता तो क्या वह उसको मना कर देती कि रास्ते बंद करवा देती ? जब सबने उसका फ़ायदा ही उठाया, तो वह सबसे इतर थोड़े ही था। सोचते-सोचते उसकी तबियत ख़राब

होने लगी। मंटू उसको वहीं पास के अस्पताल में ले गया। जहां पता चला कि उसका ब्लडप्रेशर बहुत हाई हो गया था। कुछ किडनी और लिवर में भी ख़राबी थी। दो दिन अस्पताल में भर्ती रह कर वह घर आ गई। छुटके के पास भी टाइम नहीं था। वह कहीं पर प्राइवेट में अस्थाई नौकरी कर रहा था। उसने मुकुंद और शीलू को ख़बर भिजवा दी थी लेकिन कोई अब तक नहीं आया था। खाना भी अब वही बनाता था। एक दिन सब्ज़ी में नमक ज़्यादा होने पर रम्मी ने थाली उठाई कर फेंक दी। अनाप-शनाप बकने लगी कि उसको ज़ायकेदार खाना नहीं मुहैया हो रहा है। जीवन ग़ारत कर दिया सबके लिए पर उसके लिए कोई नहीं है और अपने मंटू को धम धम पीट दिया। उसने मुंह से उफ़ भी नहीं करी। शायद उसकी मौसी का दिमाग़ भी ख़राब हो रहा था। आये दिन डाक्टरों के चक्कर लगने लगे। पंद्रह पंद्रह दिन उसको अस्पताल में रहना पड़ता। ज़्यादातर वह अकेले नर्सों के सहारे पड़ी रहती।

अभी दो दिन पहले ही वह वापस आई थी। तबियत थोड़ी बेहतर थी। नींद उसको अब कम ही आती थी लेकिन आज वह समय पर खा पी के सो गई थी। दूसरे कमरे में मंटुआ भी अपना काम करके सो गया था। रात में लगभग ढाई बजे रमैय्या ने उसको जगा दिया कि अभी पनीर की सब्ज़ी खानी है। अब खानी है तो खानी है। आधी रात को भला पनीर कहां से आयेगा ? उसने मिन्नतें करीं कि मौसी कल बना देंगे। परन्तु वह किसी सूरत से मानी नहीं, और उसको फिर से पीट दिया। इसका दुष्परिणाम ये हुआ कि वह बग़ैर किसी को कुछ बताये कहीं चला गया।

अब घर में रम्मी बिल्कुल अकेली रह गई। सूख कर कांटा हो गई थी। सभी को उसने अपने साथ किये हुये कृत्यों से बरी कर दिया था। शीलू और मुकुंद को उसने फ़ोन कर के आने के लिए इल्तिज़ा की। शीलू तो आ गई लेकिन उसका भाई इसलिए नहीं आया कि मौसी ने उसके खानदान की नाक कटवा दी। उसका उनसे कोई लेना-देना नहीं है। मंटू की बहुत ढुंढ़ाई की गई लेकिन वह नहीं मिला। जहां वह नौकरी करता था वहां पता करने पर मालुम पड़ा कि उसने वहां की नौकरी छोड़ दी है। तबियत ख़राब होने पर उसको फिर से भर्ती कराना पड़ा। डाक्टरों के अनुसार वह चंदरोज़ की मेहमान थी। उसको घर ही ले जाना मुनासिब था। लेकिन शीलू ने सोचा कि घर में कौन करेगा इसलिए अस्पताल ही ठीक है। अब रम्मी हर लड़के में अपने जिगर को ढूंढ रही थी। कोई उसको अपने बेटे के साथ देखने गया तो उससे कहने लगी, 'मंटू, तू आ गया ? कहां चला गया था अपनी मौसी को छोड़कर ? आ मेरे पास बैठ, मुझको खाना खिला।' छुटके के नाम का माला जपने लगी। सोते सोते भी वह उसको पुकारती थी।

मोहल्ले के लोगों ने शीलू को बहुत समझाया कि अपने बड़े भाई को बुलवा लो, बहुत थू थू हो रही है। लेकिन उसने इस कान से सुना उस कान से निकाल दिया। क्या पता मौसी कब तक ऐसे ही सबको दौड़ाती रहेंगी। कौन खाली बैठा है जो अपना घरबार छोड़कर इनकी सेवा करेगा। ऐसे ही कलपते एक दिन रमैय्या इस संसार से बिदा हो गई। जैसे ही ये ख़बर सबको मिली, मुकुंद मय पत्नी और बेटे के साथ आ गया। पता नहीं कहां से मंटू भी आ गया। शायद वह आसपास ही कहीं रह रहा था। जीते जी उसको तो कुछ नहीं मिला मग़र उसके मरने के बाद सबको सब कुछ मिल गया। रमैया की नौकरी अभी बाकी थी तो वह छुटके मंटू के हाथ लगी, सरकारी क्वार्टर अलग से। जमीन जायदाद से सभी मालामाल हो गये। घर में उसका बड़ा सा तैल चित्र लग गया। जिस पर चंदन की ख़ूबसूरत माला डाल दी गई थी। कहते हैं ना कि अपनी तारीफ़ सुनने के लिए व्यक्ति को मरना पड़ता है। यहां भी यही था। सब तरफ़ मौसी जी के गुणगान हो रहे थे। जिसको जिंदा रहने पर इज़्ज़त नहीं दी गई उसको अब पूजा जा रहा था। देख कर हैरत होना तो लाज़मी था। किसी ने ख़ूब कहा है कि--

आंख में पानी रखो, होंठों पे चिंगारी रखो,
ज़िंदा रहना है तो तरकीबें बहुत सारी रखो।

●●●

किसान और उसकी झोपड़ी

वर्षा पटेल,
ब्रुकलिन स्कूल देहरादून

बहुत समय पहले की बात है, एक छोटे से गांव में एक किसान रहता था। वह एक मेहनती और ईमानदार व्यक्ति था, लेकिन उसकी झोपड़ी बहुत छोटी और पुरानी थी। वह अपनी ज़िन्दगी से संतुष्ट नहीं था और अक्सर सोचता था, "अगर मेरे पास एक बड़ा और शानदार घर होता तो मेरी ज़िन्दगी कितनी आरामदायक हो जाती।" वह दिन-रात अपने खेतों में काम करता था, लेकिन उसकी आमदनी इतनी कम थी कि वह अपनी झोपड़ी को सुधारने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं जुटा पाता था।

एक दिन जब वह खेतों से घर लौट रहा था, उसकी मुलाकात एक साधू बाबा से हुई। बाबा ने किसान को देखा और उसकी चिंता समझी। उन्होंने कहा, "बच्चे, जो कुछ भी तुम्हारे पास है, उसी में खुश रहो। अगर तुम संतुष्ट नहीं हुए तो चाहे तुम्हारे पास दुनिया का सबसे बड़ा महल क्यों न हो, तुम कभी खुश नहीं रह पाओगे।"

किसान ने बाबा की बातों को सुना और थोड़ा समझा, लेकिन फिर भी उसके मन में वही ख्याल आया, "अगर मेरे पास एक बड़ा घर होता तो शायद मैं खुश होता।" बाबा ने उसकी बातों को ध्यान से सुना और कहा, "मैं तुम्हें एक जादुई गिलास दूंगा। यह गिलास तुम्हें जो चाहोगे, वह दे देगा। लेकिन ध्यान रखना, इसका इस्तेमाल सोच-समझ कर करना, क्योंकि ज्यादा चाहत कभी भी दुख का कारण बनती है।"

किसान ने बाबा का आशीर्वाद लिया और जादुई गिलास लेकर घर लौट आया। अगले दिन सुबह, उसने गिलास से कहा, "मुझे एक बड़ा और शानदार महल चाहिए।" चमत्कारी रूप से, उसके सामने एक विशाल और सुंदर महल खड़ा हो गया। किसान बहुत खुश हुआ और महल में जाकर आराम करने लगा। वह सोचने लगा, "अब मुझे वह सब कुछ मिल गया है, जो मैंने चाहा था। अब मेरी ज़िन्दगी पूरी तरह से बदल जाएगी।"

लेकिन कुछ समय बाद, किसान महसूस करने लगा कि महल में रहते हुए उसे वही शांति और संतोष नहीं मिल रहा था, जो उसे अपनी पुरानी झोपड़ी में मिलता था। महल में बड़े-बड़े कमरे, सोने की चादरें और शानदार सजावट थी, लेकिन उसे उस शांति की कमी महसूस हो रही थी, जो उसकी झोपड़ी में थी। उसे अपनी पुरानी ज़िन्दगी याद आई, जब वह आराम से अपने छोटे से घर में बैठकर खुश था।

फिर उसने गिलास से कहा, "मुझे अपनी पुरानी झोपड़ी चाहिए।" चमत्कारी रूप से, महल गायब हो गया और उसकी पुरानी झोपड़ी फिर से वहीं खड़ी हो गई। किसान ने समझा कि खुशी बाहर की चीजों में नहीं, बल्कि अंदर से आती है। उसने अपने मन को शांति दी और महसूस किया कि जो उसके पास था, वही सबसे बेहतर था।

वह फिर बाबा के पास गया और कहा, "बाबा, आपने मुझे यह सिखाया कि जो मेरे पास है, वही मेरे लिए सबसे अच्छा है। अब मैं कभी भी ज्यादा की तलाश नहीं करूंगा।"

बाबा मुस्कराए और बोले, "बिलकुल, यही असली ज्ञान है।"

सीख: संतुष्टि और सरलता में सबसे बड़ा सुख छिपा होता है। जब हम जो हमारे पास है, उसी में खुश रहते हैं, तब ही हमें असली सुख मिल पाता है। ●●●

प्रभावती गुप्ता

डा0 आकांक्षा दीक्षित

प्रभावती गुप्ता भारतवर्ष कभी वीरों और वीरांगनाओं से रिक्त नहीं रहा साथ ही यह भी तथ्य है कि जितना दुर्व्यवहार भारत के इतिहास के साथ किया गया संभवतः विश्व में दूसरा ऐसा उदाहरण दुर्लभ है। रजिया सुल्ताना को भारत की पहली महिला शासिका माना जाता है किंतु उनसे बहुत पहले गुप्त काल में वाकाटक वंश की साम्राज्ञी, गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त की पुत्री प्रभावती गुप्ता को यह गौरव प्राप्त होना चाहिए। इतिहास बोध की कमी कहना चाहिए या जानबूझकर इन महत्वपूर्ण तथ्यों की अनदेखी कही जाए यह तो इतिहासकारों के सोचने का विषय है किन्तु प्राचीन भारत की एक शक्तिशाली महिला शासिका को दो पंक्तियां भी समर्पित ना करना चुभता अवश्य है।

प्रभावतीगुप्ता गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री थी। गुप्त सम्राटों ने वीरतापूर्वक ना केवल अपना साम्राज्य विस्तृत किया बल्कि विभिन्न नीतियों द्वारा सुरक्षित भी रखा। ऐसी ही दूरदर्शिता से सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपनी पुत्री प्रभावती का विवाह तत्कालीन शक्तिशाली राजवंश वाकाटक वंश में किया था। प्रभावती का विवाह वाकाटक नरेश रुद्रसेन द्वितीय के साथ 380 ई• के लगभग हुआ था। रुद्रसेन द्वितीय शैव मतानुयायी था जबकि प्रभावती पितृकुल की भांति वैष्णव मत को मानने वाली थी। विवाह के बाद रुद्रसेन का झुकाव भी वैष्णव मत की ओर दिखाई देता है । अपने अल्प शासन के बाद 390 ई में रुद्रसेन द्वितीय की मृत्यु हो गई और 13 वर्ष तक प्रभावती ने अपने अल्प-वयस्क पुत्रों (दिवाकर सेन तथा दामोदर सेन)की संरक्षिका के रूप में शासन किया। दिवाकर सेन की मृत्यु प्रभावती के संरक्षण काल में ही हो गई और दामोदर सेन वयस्क होने पर सिंहासन पर बैठा। दामोदर सेन वयस्क होने पर 410 ई• में प्रवरसेन द्वितीय के नाम से वाकाटक शासक बना। उसने अपनी राजधानी नन्दिवर्धन से परिवर्तन करके प्रवरपुर बनाई। शकों के उन्मूलन का कार्य प्रभावती गुप्त के संरक्षण काल में ही संपन्न हुआ। इस विजय के फलस्वरूप गुप्त सत्ता गुज़रात एवं काठियावाड़ में स्थापित हो गई।प्रभावतीगुप्ता के प्रभाव और शासन का प्रमाण दगुन अभिलेख से प्राप्त होता है।प्रभावती गुप्त ने अपने अभिलेख में यह कहा हैं : प्रभावती ग्राम कुटुम्बिनो (गांव के गृहस्थ और कृषक), ब्राह्मणों, और दगून गांव के अन्य वासियों

को आदेश देती है... 'आपको ज्ञात हो कि कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि को धार्मिक पुण्य प्राप्ति के लिए इस ग्राम को जल अर्पण के साथ आचार्य चनालस्वामी को दान किया गया है। आपको इनके सभी आदेशों का पालन करना चाहिए। एक अग्रहार के लिए उपयुक्त निम्नलिखित रियासतों का निर्देश भी देती हूं। इस गांव में पुलिस या सैनिक प्रवेश नहीं करेंगे। दौरे पर आने वाले शासकीय अधिकारियों को यह गांव घास देने और आसन में प्रयुक्त होने वाली जानवरों की खाल और कोयला देने के दायित्व से मुक्त है। साथ ही वे मदिरा खरीदने और नमक हेतु खुदाई करने के राजसी अधिकार को कार्यान्वित किए जाने से मुक्त हैं।'

यह अभिलेख ग्रामवासियों के लिए एक आदेश था और उन्हें आदेशों का पालन करना था। यह किसानों और राज्य के बीच संबंधों के बारे में जानकारी देता है। यह ग्रामीण आबादी के बारे में भी जानकारी देता है।

प्रभावती गुप्ता ने अपने पिता का गोत्र धारण किया था संभवतः शत्रुओं को यह.स्पष्ट संदेश था कि उसके प्रति शत्रुता का अर्थ गुप्त साम्राज्य से शत्रुता होगा।रानी प्रभावती ने अपने जीवनकाल में अपने पति को और पुत्र को कालकलवित होते हुए देखा किन्तु एक वीर पिता की वीर और योग्य पुत्री के रुप में अपना राज्य मजबूती से थामे रखा। बहुधा कहा जाता है कि वाकाटक राज्य गुप्त साम्राज्य का अंग ही था किंतु यह सत्य नहीं है। चन्द्रगुप्त मे अपने दामाद की मृत्यु के पश्चात अपनी पुत्री को पूरा सहयोग दिया होगा परन्तु यदि प्रभावती योग्य ना होती तो इतने लंबे समय तक अपना राज्य सुरक्षित ना रख पाती। निस्संदेह उसे अपने पिता का सहयोग और संरक्षण प्राप्त था किन्तु इससे उसकी योग्यता पर प्रश्नचिह्न लगाना उचित नहीं है। प्रभावती ने यद्यपि अपने पुत्र की संरक्षिका के रुप में राज्य संभाला तथापि शक आक्रमण का सामना और राज्य का सुचारु रुप से संचालन दर्शाता है कि वह एक योग्य शासिका थी। इतिहास के पन्नो में इन विस्मृत या कहे उपेक्षित पात्रों को स्थान अवश्य मिलना चाहिए। रानी प्रभावती गुप्ता ने अपने जीवन की चुनौतियों को स्वीकार किया और सफलतापूर्वक कठिनाइयों से बाहर निकलने का प्रयास किया। रुद्रसेन की आकस्मिक मृत्यु के पश्चात वाकाटक राज्य को गुप्त साम्राज्य का अंग नहीं बनाया गया वरन उसका स्वतंत्र अस्तित्व और अस्मिता प्रभावती के द्वारा अक्षुण्ण रखी गई। तीसरी -चौथी शताब्दी में एक पिता द्वारा अपनी पुत्री का सहयोग और उस पर विश्वास यह भी दर्शाता है कि स्त्रियों की योग्यता का सम्मान था। कालखंड को ध्यान में रखे तो यह महत्वपूर्ण तथ्य है। रानी प्रभावती गुप्ता निस्संदेह एक सशक्त नारी का उदाहरण है।

Copper Coins issued by Prabhavatigupta

खतरनाक होता बायोमेडिकल वेस्ट

डॉ. सत्यवान सौरभ

स्वास्थ्य सेवा गतिविधियों द्वारा उत्पन्न कुल अपशिष्ट में से लगभग 85% सामान्य, गैर-खतरनाक अपशिष्ट है। शेष 15% को खतरनाक सामग्री माना जाता है जो संक्रामक, विषाक्त, कैंसरकारी, ज्वलनशील, संक्षारक, प्रतिक्रियाशील, विस्फोटक या रेडियोधर्मी हो सकता है। हर साल दुनिया भर में अनुमानित 16 बिलियन इंजेक्शन लगाए जाते हैं, लेकिन सभी सुइयों और सिरिंजों का उचित तरीके से निपटान नहीं किया जाता है। स्वास्थ्य सेवा अपशिष्टों को खुले में जलाने और कम तापमान पर जलाने से, कुछ परिस्थितियों में, डाइऑक्सिन, फ़्यूरान और पार्टिकुलेट मैटर का उत्सर्जन हो सकता है।

स्वास्थ्य सेवा गतिविधियाँ स्वास्थ्य की रक्षा करती हैं और उसे बहाल करती हैं तथा जीवन बचाती हैं। लेकिन उनके द्वारा उत्पन्न अपशिष्ट और उप-उत्पादों के बारे में क्या? स्वास्थ्य सेवा गतिविधियों द्वारा उत्पन्न कुल अपशिष्ट में से लगभग 85% सामान्य, गैर-खतरनाक अपशिष्ट है जो घरेलू अपशिष्ट के बराबर है। शेष 15% को खतरनाक सामग्री माना जाता है जो संक्रामक, रासायनिक या रेडियोधर्मी हो सकता है। स्वास्थ्य सेवा अपशिष्टों के सुरक्षित और पर्यावरण के अनुकूल प्रबंधन को सुनिश्चित करने के उपाय ऐसे अपशिष्टों से होने वाले प्रतिकूल स्वास्थ्य और पर्यावरणीय प्रभावों को रोक सकते हैं, जिसमें रासायनिक या जैविक खतरों का अनपेक्षित उत्सर्जन शामिल है। स्वास्थ्य सेवा अपशिष्टों में संभावित रुप से हानिकारक सूक्ष्मजीव होते हैं जो अस्पताल के रोगियों, स्वास्थ्य कर्मियों और आम जनता को संक्रमित कर सकते हैं। अन्य संभावित खतरों में दवा प्रतिरोधी सूक्ष्मजीव शामिल हो सकते हैं जो स्वास्थ्य सुविधाओं से पर्यावरण में फैलते हैं। स्वास्थ्य सेवा अपशिष्ट और उप-उत्पादों से जुड़े प्रतिकूल स्वास्थ्य परिणामों में तीक्ष्ण वस्तुओं से लगी चोटें भी शामिल हैं; स्वास्थ्य सेवा अपशिष्टों के संचालन या भस्मीकरण के दौरान आस-पास के वातावरण में छोड़े जाने वाले दवा उत्पादों, विशेष रुप से एंटीबायोटिक्स और साइटोटॉक्सिक दवाओं और पारा या डाइऑक्सिन जैसे पदार्थों के संपर्क में आना; कीटाणुशोधन, बंध्यीकरण या अपशिष्ट उपचार गतिविधियों के संदर्भ में उत्पन्न होने वाली रासायनिक जलन; चिकित्सा अपशिष्ट भस्मीकरण के दौरान कण पदार्थ के निकलने के परिणामस्वरुप उत्पन्न होने वाला वायु प्रदूषण; खुले में जलने और चिकित्सा अपशिष्ट भस्मक के संचालन के साथ होने वाली तापीय चोटें; विकिरण जलन; और दवा अपशिष्टों के असुरक्षित भंडारण, उपचार और निपटान के माध्यम से रोगाणुरोधी प्रतिरोध का प्रसार। अपर्याप्त स्वास्थ्य सेवा अपशिष्ट सेवाओं के लिए कई कारण मौजूद हैं। इनमें सीमित कानूनी ढाँचे (जैसे, नीतियाँ, विनियमन, दिशा-निर्देश) , स्वास्थ्य सेवा अपशिष्ट से सम्बंधित स्वास्थ्य खतरों के बारे में जागरुकता की कमी, उचित अपशिष्ट प्रबंधन में अपर्याप्त प्रशिक्षण, अपशिष्ट

प्रबंधन और निपटान प्रणालियों की अनुपस्थिति, अपर्याप्त वित्तीय और मानव संसाधन और कम प्राथमिकता शामिल हैं। कई देशों में या तो उचित नियम नहीं हैं या वे उनकी निगरानी और प्रवर्तन नहीं करते हैं।

दुनिया भर में, हर साल अनुमानित 16 बिलियन इंजेक्शन लगाए जाते हैं। सभी सुइयों और सिरिंजों का सुरक्षित तरीके से निपटान नहीं किया जाता है, जिससे चोट और संक्रमण का जोखिम और दोबारा इस्तेमाल के अवसर पैदा होते हैं। हाल के वर्षों में निम्न और मध्यम आय वाले देशों में दूषित सुइयों और सिरिंजों से इंजेक्शन लगाने में काफ़ी कमी आई है, आंशिक रूप से इंजेक्शन उपकरणों के दोबारा इस्तेमाल को कम करने के प्रयासों के कारण। इस प्रगति के बावजूद, असुरक्षित इंजेक्शन अभी भी 33, 800 नए एचआईवी संक्रमण, 1.7 मिलियन हेपेटाइटिस बी संक्रमण और 315, 000 हेपेटाइटिस-सी संक्रमण के लिए ज़िम्मेदार थे। संक्रमित स्रोत रोगी पर इस्तेमाल की गई सुई से एक व्यक्ति को सुई लगने से चोट लगने का अनुभव होने पर उसे एचबीवी, एचसीवी और एचआईवी से संक्रमित होने का क्रमशः 30%, 1.8% और 0.3% जोखिम होता है। अपशिष्ट निपटान स्थलों पर सफ़ाई करने और स्वास्थ्य सुविधाओं से खतरनाक अपशिष्ट को संभालने और मैन्युअल रूप से छांटने के दौरान अतिरिक्त खतरे उत्पन्न होते हैं। ये प्रथाएँ दुनिया के कई क्षेत्रों में आम हैं, खासकर निम्न और मध्यम आय वाले देशों में। अपशिष्ट संचालकों को सुई चुभने की चोट लगने और विषैले या संक्रामक पदार्थों के संपर्क में आने का तत्काल जोखिम होता है। स्वास्थ्य सेवा अपशिष्ट का उपचार और निपटान पर्यावरण में रोगजनकों और विषैले प्रदूषकों के निकलने के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से स्वास्थ्य जोखिम पैदा कर सकता है।

लैंडफिल में अनुपचारित स्वास्थ्य सेवा अपशिष्टों के निपटान से पीने, सतह और भूजल का संदूषण हो सकता है, अगर उन लैंडफिल का निर्माण ठीक से नहीं किया गया है। स्वास्थ्य सेवा अपशिष्टों को कम से कम करना प्राथमिकता होनी चाहिए। इससे उस अपशिष्ट की मात्रा में काफ़ी कमी आएगी जिसे संभालने और उपचारित करने की आवश्यकता है। अपशिष्ट न्यूनीकरण क्रियाओं में हरित खरीद और ऐसे उत्पादों का चयन करना शामिल है जहाँ शिपिंग कम से कम हो और कम और पारिस्थितिक पैकेजिंग हो, सुरक्षित और व्यवहार्य होने पर पुनः प्रयोज्य उत्पादों पर स्विच करना, केवल प्रलेखित आवश्यकता के आधार पर फार्मास्यूटिकल्स का ऑर्डर देना / प्राप्त करना और प्लास्टिक, काग़ज़ और कार्डबोर्ड सहित सामान्य वस्तुओं का पुनर्चक्रण करना शामिल है। रासायनिक कीटाणुनाशकों के साथ स्वास्थ्य सेवा अपशिष्टों के उपचार के परिणामस्वरूप पर्यावरण में रासायनिक पदार्थ निकल सकते हैं यदि उन पदार्थों को पर्यावरण के अनुकूल तरीके से संभाला, संग्रहीत और निपटाया नहीं जाता है।

स्वास्थ्य सेवा अपशिष्ट के प्रबंधन के लिए अधिक ध्यान और परिश्रम की आवश्यकता होती है, ताकि खराब अभ्यास से जुड़े प्रतिकूल स्वास्थ्य परिणामों से बचा जा सके, जिसमें संक्रामक एजेंटों और विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आना भी शामिल है। स्वास्थ्य सेवा अपशिष्ट प्रबंधन को बेहतर बनाने के प्रमुख तत्व हैं उन प्रथाओं को बढ़ावा देना जो उत्पन्न होने वाले कचरे की मात्रा को कम करते हैं और उचित अपशिष्ट पृथक्करण सुनिश्चित करते हैं; राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मानकों को पूरा करने के अंतिम उद्देश्य के साथ अपशिष्ट पृथक्करण, विनाश और निपटान प्रथाओं में क्रमिक रूप से सुधार करने के लिए मज़बूत निगरानी और विनियमन के साथ-साथ रणनीति और प्रणाली विकसित करना; जहाँ संभव हो, चिकित्सा अपशिष्ट भस्मीकरण की तुलना में खतरनाक स्वास्थ्य देखभाल अपशिष्टों के सुरक्षित और पर्यावरण के अनुकूल उपचार (उदाहरण के लिए, ऑटोक्लेविंग, माइक्रोवेविंग, आंतरिक मिश्रण के साथ एकीकृत भाप उपचार और रासायनिक उपचार) का पक्ष लेना; एक व्यापक प्रणाली का निर्माण, जिम्मेदारियों, संसाधन आवंटन, तथा अपशिष्ट को एकत्रित करने, संभालने, भंडारण करने, परिवहन करने, उपचारित करने या निपटाने के दौरान लोगों को खतरों से बचाने के लिए सुरक्षित और पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन विकल्पों का चयन करना। सार्वभौमिक, दीर्घकालिक सुधार के लिए सरकार की प्रतिबद्धता और समर्थन की आवश्यकता है, हालांकि स्थानीय स्तर पर तत्काल कार्यवाही की जा सकती है।

●●●

जयशाह की नई पारी का हुआ आगाज़

कुशाग्र सिंह

देश के गृहमंत्री और भाजपा की चुनावी राजनीति के चाणक्य कहे जाने वाले अमित शाह के बेटे जय शाह ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट काउंसल यानि आईसीसी के नए अध्यक्ष के रुप में अपना पदभार संभाल लिया है। यहां यह बताते चलें कि जयशाह भले ही अमितशाह के बेटे हों, लेकिन देखने वाली बात यह है कि उन्होंने अपने पिता अमित शाह से इतर एक अलग क्षेत्र में अपनी एक बड़ी पहचान बनाई है। बहरहाल जयशाह के आइ्रसीसी का अध्यक्ष बनने के साथ ही उनके नाम एक खास उपलब्धि भी दर्ज हो गई है। जय शाह सबसे कम उम्र में आईसीसी के अध्यक्ष बनने वाले पहले शख्स बन गए हैं। उनकी मौजूद उम्र महज 36 साल है। जहां तक जयशाह का सवाल है तो वे इस अहम पद से पहले वह भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड यानी बीसीसीआई के सचिव पद पर कार्यरत थे और इस पद पर रहकर उन्होंने भारतीय क्रिकेट को किस मुकाम पर पहुंचा, वह किसी से छिपा नहीं हैं। मालूम हो कि जयशाह ने आईसीसी के पूर्व अध्यक्ष ग्रेग बार्कले की जगह ली है। बार्कले न्यूज़ीलैंड क्रिकेट से संबंध रखते थे। क्रिकेट में रुचि रखने वाले दर्शकों और पाठकों को यह जानकर हैरानी होगी कि जय शाह अपने देश भारत की तरफ से आईसीसी अध्यक्ष जैसे अहम पद पर काबिज होने वाले सिर्फ 5वें भारतीय शख्स हैं। उनसे पहले इस पद की शोभा जगमोहन डालमिया, शरद पवार, शशांक मनोहर और देश के जाने माने उद्योगपति एन श्रीनिवासन बढ़ा चुके हैं। यहां एक और दिलचस्प जानकारी अपने पाठकों को बतातें चलें कि आईसीसी के अध्यक्ष पद 2016 में खत्म कर दिया

गया था। पाकिस्तान के पूर्व और अपने समय के कलात्मक बल्लेबाज रहे जहीर अब्बास आखिरी आईसीसी के अध्यक्ष थे। 2014 में पहले आईसीसी के अध्यक्ष एन श्रीनविसन बने थे। तब आईसीसी के चेयरमैन और आईसीसी के अध्यक्ष का पद कुछ साल तक साथ में ही चला था।

तो वहीं इससे पहले आईसीसी के अध्यक्ष चुने के बाद शाह ने कहा था, कि आईसीसी का चेयरमैन चुनने के लिए हर किसी का धन्यवाद। क्रिकेट को पूरे वर्ल्ड में बढ़ाने के लिए मैं काम करूंगा। मौजूदा समय में सभी फॉर्मेट को आगे ले जाने की जरूरत है। खेल में मैं कुछ नई तकनीकी का समावेश करूंगा। मेरा प्रयास इस खेल को हमेशा लोकप्रिय बनाने का रहेगा। इसी के साथ जय शाह ने पिछले चार वर्षों में आईसीसी में उसके अध्यक्ष रहे ग्रेग बार्कले के योगदान को स्वीकार किया। उन्होंने कहा, मैं पिछले चार वर्षों सालों के दौरान हासिल की गई उपलब्धियों के लिए ग्रेग बार्कले को भी धन्यवाद देना चाहूंगा। मैं वैश्विक मंच पर खेल की पहुंच और विकास का विस्तार करने के लिए आईसीसी टीम और सदस्य देशों के साथ मिलकर काम करने के लिए उत्सुक हूं। यह खेल के लिए एक रोमांचक समय है क्योंकि हम लॉस एंजेलिस ओलंपिक गेम्स (2028) की तैयारी कर रहे हैं। हम दुनिया भर के प्रशंसकों के लिए क्रिकेट को अधिक समावेशी और आकर्षक बनाने के लिए काम कर रहे हैं। गौरतलब है कि जय शाह क्रिकेट प्रशासन में व्यापक अनुभव रखते हैं। जय शाह ने साल 2009 में गुजरात क्रिकेट एसोसिएशन के साथ अपना सफर शुरु किया था। अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने अहमदाबाद में दुनिया के सबसे बड़े क्रिकेट स्टेडियम के निर्माण में अहम भूमिका निभाई। जो अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम से जाना जाता है। जहां पिछले साल एक दिवसीय मैचों के विश्वकप का फाइनल मैच खेला गया था। साल 2019 में, जय शाह भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड में शामिल हुए और इसके सबसे कम उम्र के मानद सचिव बने। उन्होंने एशियाई क्रिकेट परिषद के अध्यक्ष के अलावा आईसीसी की वित्त एवं वाणिज्यिक मामलों की समिति के अध्यक्ष की भी भूमिका निभाई है।

वहीं इधर, जय शाह के सामने पहली चुनौती आगामी आईसीसी चैपियन ट्रॉफी है। ये देखना काफी दिलचस्प होगा कि वे कैसे इस समस्या से निजात पाते हैं। क्योंकि पाकिस्तान क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड यानी पीसीबी इस मुद्दे पर अड़ा हुआ है कि भारत पाकिस्तान का दौरा करे, जबकि टीम इंडिया सुरक्षा संबंधी समस्याओं की वजह से पाकिस्तान नहीं जाना चाहती है। जब जयशाह स्वयं बीसीसीआइ्र के सचिव के पद पर थे, तो तब वे भी यही सोच रखते थे कि टीम इंडिया की सुरक्षा जरूरी है इसलिए टीम इंडिया चैपियन ट्रॉफी खेलने पाकिस्तान न जाए।

जहां तक पाकिस्तान क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड का सवाल है तो पीसीबी ने पहले टूर्नामेंट के बहिष्कार की धमकी दी थी, लेकिन अब वह थोड़ा नरम पड़ा है। बहिष्कार की धमकी से पीछे हटते हुए पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने आईसीसी से कहा है कि वह अगले साल चैपिंयन ट्रॉफी 2025 की मेजबानी के लिए 'हाइब्रिड मॉडल' को स्वीकार करने को तैयार है लेकिन इसके बदले में आंईसीसी को 2031 तक भारत में होने वाले टूर्नामेंट के लिए भी यही व्यवस्था अपनाने की अनुमति देनी होगी। पीसीबी के सूत्रों के अनुसार कि बोर्ड इस 'हाइब्रिड मॉडल' पर सहमत होने के लिए सालाना राजस्व चक्र में ज्यादा हिस्सेदारी की मांग भी कर रहा है। सुरक्षा चिंताओं के कारण भारत इस 'हाइब्रिड मॉडल' में अपने मैच दुबई में खेलेगा जिसमें पाकिस्तान के खिलाफ मुकाबला भी शामिल है। बता दें कि भारत को साल 2031 तक भारत को आईसीसी के तीन पुरुष टूर्नामेंट की मेजबानी करनी है। इसमें श्रीलंका के साथ मिलकर 2026 टी20 विश्प कप,2029 चैंपयन ट्रॉफी तथा बांग्लादेश के साथ मिलकर 2031 वनडे विश्व कप का आयोजन किया जाएगा। यह देखते हुए कि बांग्लादेश और श्रीलंका मुख्य टूर्नामेंट के दो सह-मेजबान हैं और अगर वे भी इसके खिलाफ जोर देते हैं तो पाकिस्तान को भारत की यात्रा करने के लिए मजबूर नहीं किया जाएगा। विवाद का मुद्दा सिर्फ 2029 चैपिंयन ट्रॉफी हो सकता है जो पूरी तरह से भारत में आयोजित की जाएगी। एक और विवाद अगले साल अक्टूबर में होने वाला महिला वनडे विश्व कप हो सकता है जो भारत में ही आयोजित किया जाएगा।

बहरहाल, अगले साल होने वाली चैपिंयन ट्रॉफी को लेकर अनिश्चितता की स्थिति अब अगले कुछ दिनों में सुलझने की उम्मीद है क्योंकि अब आईसीसी कार्यकारी बोर्ड पाकिस्तान की नयी मांगों पर विचार करेगा। आईसीसी ने बीते दिनों समाधान खोजने के लिए संक्षिप्त बैठक की थी, लेकिन कोई समझौता नहीं हो सका। क्योंकि इस बैठक में पास्तिन क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के अध्यक्ष मोहिसन नकवी के अपने देश के अड़ियल रुख पर अडिग रहने के बाद आईसीसी ने अंत में पीसीबी को कहा कि या तो वह 'हाइब्रिड मॉडल' में खेलने के लिए तैयार रहे या फिर टूर्नामेंट से बाहर होने के लिए तैयार रहे। कहा जाए तो गलत नहीं होगा कि अब काफी हद तक गेंद पास्तिन के पाले में है क्योंकि यह तो तय है कि जयशाह भले ही आईसीसी के अब अध्यक्ष बन गए हों लेकिन आईसीसी पहले भी बीसीसीआई जैसे प्रभावशाली बोर्ड को नजरअंदाज नहीं करता था और अब भी नहीं करेगा। यानि पास्तिन के पास विकल्प बहुत कम हैं।

लखनौव्वा गड़बड़ झाला

(हास्य रचनाओं का संग्रह

अरुण कुमार गुप्ता

हिंदी साहित्य को जितना मैने पढ़ा है, उस अल्प जानकारी के आधार पर वैविध्यपूर्ण लेखन के लिए लखनऊ के दो साहित्यकारों का मैं हमेशा मुरीद रहा हूं, उनमें एक अमृतलाल नागर हैं, जिन्होंने ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर मानस का हंस, एकदा नैमिषारण्ये व खंजन नयन जैसे कालजयी उपन्यासों के साथ-साथ हास्य से परिपूर्ण सौ से अधिक किस्से - कहानियों की रचना की है। दूसरे भगवतीचरण वर्मा हैं, जिनका ऐतिहासिक उपन्यास चित्रलेखा एक ओर है, वहीं दो बांके, प्रायश्चित व वसीयत आदि हंसा कर लोटपोट कर देने वाली बेजोड़ कहानियां भी हैं। इसी कड़ी में हाल के वर्षों में लखनऊ की ही डा. आकांक्षा दीक्षित हिंदी साहित्य के एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में उभरी हैं,जिन्होंने एक ओर प्राचीन भारतीय संस्कृति, दर्शन,मूल्यों, परंपराओं तथा ऐतिहासिक व पौराणिक मनीषियों के प्रेरक प्रसंगों को अपनी रचनाओं के माध्यम से आज की पीढ़ी तक पंहुचाने के पुनीत कर्तव्य को एक मिशन की तरह अपनाया है, वहीं दूसरी ओर अपने आसपास घटित हो रही रोजमर्रा की घटनाओं को हास्य सिक्त रोचक शैली में सहज स्वाभाविक तरीके कलमबंद किया है जो आज के एकाकी परिवार में रह रहे लोगों के विषादपूर्ण व तनावग्रस्त जीवन में उन्हें गुदगुदाने और दिमागी तौर पर तरोताजा होने का अवसर प्रदान करती है। यह संयोग मात्र नहीं है कि लेखिका को अपनी प्रथम प्रकाशित पुस्तक 'प्रेमदूत' के लिए उ प्र राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान द्वारा अमृतलाल नागर पुरस्कार से

सम्मानित किया गया है।

इन दिनों हास्य-व्यंग्य के नाम पर अधिकतर लेखन नेताओं व राजनीति की विद्रूपता तक सीमित होकर रह गया है, लेकिन डा. आकांक्षा दीक्षित के हास्य रचनाओं के प्रस्तुत संकलन 'लखनौव्वा गड़बड़ झाला' इस मायने में विशिष्ट व भिन्न है कि चालीस से अधिक चयनित किस्से-कहानियों का दायरा राजनीति से परे घर-परिवार, रिश्ते-नातों से लेकर पास-पड़ोस, मुहल्ले और कालेज-दफ्तर तक फैला हुआ है और रचनाओं की रुह में बसा निर्मल हास्य इस कदर निश्छल हैं कि कथानक कटाक्षपूर्ण होते हुए भी किसी को कहीं से आहत नहीं करते।सभी रचनाओं के शीर्षक इतने मजेदार हैं, जिन में से कुछ शीर्षकों - 'पीटर जी चीटर निकले, काटे चाटे श्वान के दोउ भांति विपरीत,

मैडम! हमरा बियाह करवा देव, पुताई का पंगा, प्रेम तो फरवरी ऊपजै,पत्नी से बहस जिंदगी तहस-नहस, लापरवाही हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है..' का उल्लेख यह बतलाने के लिए काफी हैं कि रचनाओं की विषय वस्तु पाठकों को आनंद की वर्षा में

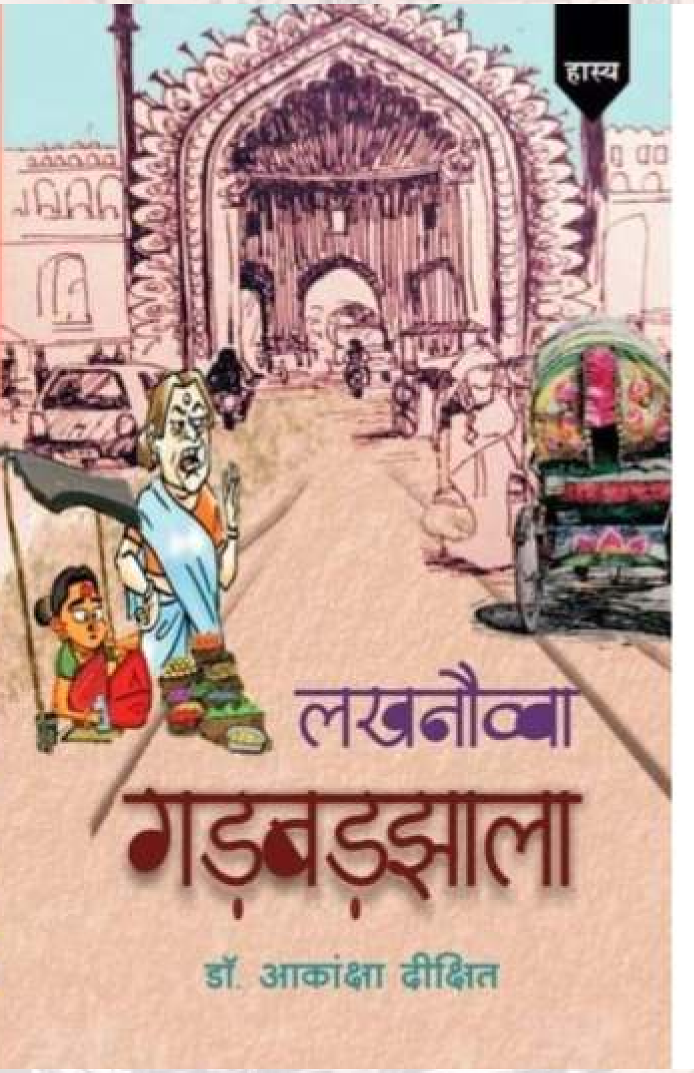

सराबोर करने वाली है।

संकलन के किस्सों के पात्रों का चित्रण इतना सहज व स्वाभाविक है कि पढ़ते समय पाठकों को अनुभूति होती है कि वे पुस्तक पढ़ने के बजाय स्वयं किसी किस्से के पात्र अथवा तमाशे के दर्शक हों। पुस्तक में संकलित किस्सों की भाषा लखनऊआ परिवेश के अनुकूल है तथा चुटीले संवादों में प्रयोग किए गये वाक्य व शब्द किसी डिक्शनरी का मोहताज नहीं, बल्कि हमारे आसपास की दुनिया में ही मिल जाएंगे । यह लेखिका की सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक दृष्टि, कल्पनाशीलता व रोचक लेखन शैली का कमाल है कि पास-पड़ोस मे जो कुछ घट रहा है, उसे अपने पात्रों के माध्यम से न केवल पूर्णता के साथ आत्मसात किया है, बल्कि एक कुशल चितेरे की तरह कागज पर शब्दों से उकेर दिया है । संवादों मे लखनऊ की स्थानीय बोली के साथ ठेठ अवधी व उसमें लगा शहराती तड़का इस संकलन की सबसे बड़ी विशेषता है और विभिन्न पात्रों को जस का तस स्थापित करने मे सहायक है। संवादों की कुछ बानगी प्रस्तुत है-

-- 'क्यों बे! रजिस्ट्री कराये हो क्या? अब मेरी वाली है वो। तुम कोई नीली पीली ढूंढ लो।'

-- 'जान पड़ता है आप बाहर से तशरीफ लाई हैं। यहां वाले पहले पूछते हैं कि भैया, खाली हो।'

-- 'बहन, अबकिल बोर्ड है। लुढ़क गयी तो दादी पढ़ाई बंद कर किसी खूसट को व्याह देंगी। नीके-नीके इंटर कर लेव। फिर यहु सब करैव।'

-- मिक्की ने समझा क्या है। साले मिक्की को आलू की टिक्की की तरह कूचा नहीं तो हमारा भी नाम नहीं।'

-- 'मेरी प्यारी पुत्री, तुम जब दो चुटिया तेल डालकर बनाती हो तो लगता है अभी नई डामर की सड़क बनी है और तुम्हारी मांग एकदम सीधे डिवाइडर जैसी इस दिल में उतर रही है।'

-- वइसे तो तुम पंचेन का खुस होयक चही की हमहूं तुम्हरी तिना हुसियार हन.... ऐ अम्मा! वू काजर दरवाजे की दराजन मा भरि देइत रहैय। यही ते तुम नाईं पायिव।'

-- सुनो यार, तुम जाओ। इस साल इश्क कैंसिल। पता चल गया तो मम्मी टांगे तोड़ देंगी। पैर सलामत रहेंगे तो वैलेंटाइन अगले साल मना लिया जायगा।'

-- 'सीरियल नहीं देखते क्या? कभी किसी देवता को देवियों से बहस करते देखा है?.... फिर भी कुछ नहीं सीखा। अरे! यही मूलमंत्र है। अपनी घरैतिन को ऐसे ही रखो।'

' लखनौव्वा गड़बड़ झाला' मे संकलित रचनाओं मे संवादों से इतर लेखिका की किस्सागोई के नये प्रतिमान गढ़े गये हैं जो लखनऊ की साहित्यिक दुनिया में अमृतलाल नागर, भगवती चरण वर्मा, श्रीलाल शुक्ल, के पी सक्सेना व टी एन सिन्हा की परंपरा को आगे बढ़ाने की भावी उम्मीदों के प्रति आश्वस्त करते हैं।लेखिका डा. आकांक्षा दीक्षित की प्रथम प्रकाशित पुस्तक 'प्रेमदूत' के गंभीर विषय वस्तु से सर्वथा भिन्न धरातल पर रचित 'लखनौव्वा गड़बड़ झाला' की रचनाएं हास्य की चाशनी मे डूबी और उसी रस में पाठकों को डुबा देने को उद्यत हैं। यह संकलन इस दौर के हास्य-व्यंग्य की भेड़चाल मे पाठकों को एक ताजा हवा के झोंके की अनुभूति कराती है।

डा. आकांक्षा दीक्षित के गहन अध्ययन, उनके ज्ञान,उनकी लेखकीय प्रतिभा व रचनाधर्मिता को परिभाषित करने के लिए उर्दू के लब्ध प्रतिष्ठ शायर राजीव मोहन 'शादाब' का शे'र सर्वथा उपयुक्त है --

क्यूं न अंगुश्त-बदंदां हों ये नक़्क़ादे-सुख़न।
हमने तज़ईने-अदब की है जियालों की तरह।।

●●●

प्रकृति, संस्कृति और स्त्री

केशव शरण

स्त्री चेतनाए पर्यावरण और सामाजिक सरोकारों से जुड़ी सुप्रतिष्ठित लेखिका सुश्री आकांक्षा यादव के आलेखों का संग्रह ष्प्रकृतिए संस्कृति और स्त्रीष् को पढ़ते हुए जहाँ हम विषयवार उनके विचारोंए विवरणों और विवेचनों से प्रभावित होते हैं वहीं हम निबंध विधा के महत्व को भी जान पाते हैं। संवेदनाओं और सरोकारों से प्रेरित यह विधा लेखन की अन्य विधाओं की तुलना में निश्चय ही कहीं ज़्यादा श्रमसाध्यए अध्ययनजन्यए शोधपरक और बौद्धिक है। एक अच्छा आलेख वह है जो हमें आत्मनिष्ठ रूप से वस्तुनिष्ठ जानकारियाँए समझ और दृष्टि दे और हमारी चेतना तथा संवेदना का विस्तार करे। इस कसौटी पर इस किताब के आलेख जो संख्या में सोलह हैंए सोलह आने खरे हैं। इस पुस्तक में स्त्री पक्ष पर छरुए प्रकृति पक्ष से दो और शेष संस्कृति पक्ष पर आलेख हैं। नारी विमर्शए लोक चेतनाए प्रेमए भाषाए शिक्षाए साहित्यए सोशल मीडिया से जुड़े मुद्दों के साथ ही पर्यावरण विषयक चिंताएं लेखिका की प्रस्तुत कृति के मुख्य विषय हैं। विभिन्न विधाओं में सृजनरत सुश्री आकांक्षा यादव की यह चौथी पुस्तक है। एक लेखिका के साथ.साथ अग्रणी महिला ब्लॉगर के रूप में भी उन्होंने देश.विदेश में कीर्ति फैलाई है।

इस आलेख संग्रह में ष्प्रकृतिए संस्कृति और स्त्रीष् शीर्षक से कोई आलेख नहीं है लेकिन सारे आलेख इस महाशीर्षक के अंतर्गत हैं जो मानवीय परम्पराओंए उसके वर्तमान और भविष्योन्मुखी जीवन.संभावनाओं पर आधारित हैं। इनके विषय हमारे रोज़मर्रा के अनुभवों या अवसर विशेष के अनुभवों से संबंधित हैं। हम इन्हें कैसे जीते थेए कैसे जीते हैं और कैसे जीना चाहिए उस सबको ये आलेख प्रत्यक्ष करते हैं। इनमें किसी विशेष विचारधारा का पक्ष नहीं हैए जो है सामान्य जनबोध का लेखकीय जनबोध व पक्ष है। लोक चेतना में स्वाधीनता की लय खोजने का उपक्रम है। इस पुस्तक में आज़ाद भारत के लोकजीवन के विविध पक्षों और प्रश्नों पर विचार किया गया है इसलिए यह लेख ष्लोक चेतना में स्वाधीनता की लयष् प्रथम स्थान पर रखा गया है। इसमें पराधीनता के कारणए संघर्ष की भीषणता और स्वाधीन भारत के सपनों व आशाओं का उल्लेख है। लेखिका का मानना है कि इतिहास लोकमानस में पीढ़ी.दर.पीढ़ी प्रवाहित होता रहता है और आज़ादी एक विस्तृत अवधारणा है जिसमें न सिर्फ़ राष्ट्र बल्कि व्यक्ति की भी स्वाधीनता का समान महत्व है जो राजनैतिक दमन और आर्थिक शोषण से मुक्ति दिलाने के साथ नवोन्मेषकारी है। ऐतिहासिक घटनाओं के क्रम के साथ किंवदंतियों में समाए भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का चित्रण भावोद्वेलित करता है। लेखिका आकांक्षा यादव की निबंध शैली विशिष्ट है। इसमें भाषा का कसाव और प्रवाह है जो विवरणों की शुष्कता को समाप्त कर उन्हें मर्मपूर्ण और पठनीय बनाता है। सूचनाओं के साथ संवेदनाओं का विस्तार विषय को एक विचार.पूर्णता और आवश्यक जीवन.संदेश तक पहुँचाता है। यह शैलीगत विशिष्टता लेखिका की अपनी है इसलिए लेखिका के हर लेख में मिलती है।

ज़ाहिर है शेष पन्द्रह आलेख स्वतंत्र भारत में जीवन.स्थितियों और परिस्थितियों के संदर्भ में होंगे जिनमें हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दीए हमारी शिक्षाए हमारा घर.परिवारए हमारा पर्यावरणए हमारे त्योहारए हमारी जीवन शैलीए हमारी तकनीकी और हमारे विमर्श जो चाहे स्त्री को लेकर हो या प्रकृति या संस्कृति को लेकरए समाहित हैं। ये सारे आलेख एक साथ मिलकर एक ऐसी वैचारिकी रचते हैं जिसमें हमारी पूरी भारतीय परम्पराए राष्ट्रीय जीवन और व्यक्ति की स्वायत्तता का यथार्थपरक चिंतन उभरता है। सृष्टि का संवाह करने वाली नारी की अस्मिता पर यथार्थपूर्ण और आवेशहीन बहुआयामी विमर्श समावेशी और गहरी चिंतन दृष्टि का परिचायक है तथापि प्रखरता और तेजस्विता कहीं से कम नहीं है। विवरणों और आंकड़ों से भरे ये आलेख छूटने का

कहीं से मौक़ा नहीं देते। मिथक सेए इतिहास सेए लोक सेए शास्त्र सेए परम्परा से जुटाए गए साक्ष्यए आँकड़े और विवरण इन आलेखों को दस्तावेज़ी बनाते हैं और लेखकीय विवेचनाएँ न्याय.अन्याय और सच.झूठ का स्वरुप सामने रखती हैं। सहजए सरलए प्रवाहमयीए भावपूर्ण भाषा संवेदित करती चलती है और पाठकीय बोझिलता से बचाती है।

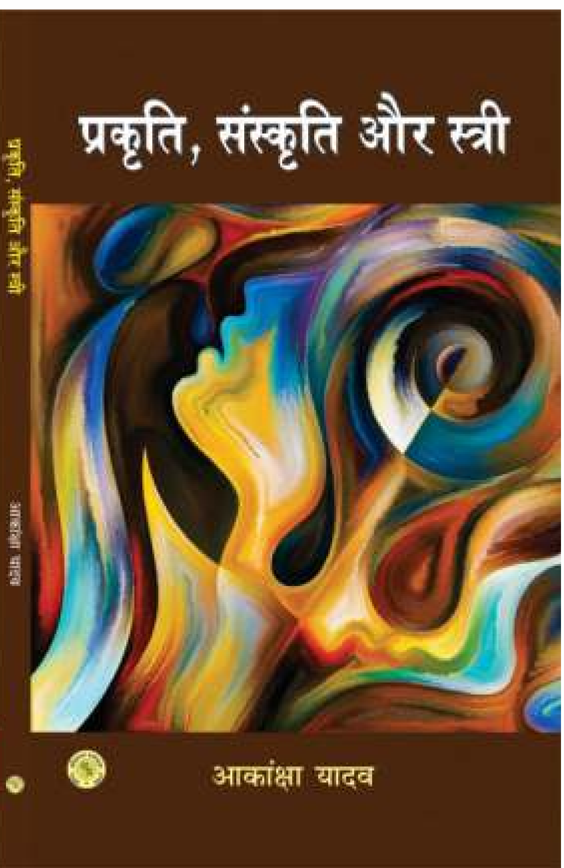

इस पुस्तक में लोक चेतना में स्वाधीनता की लयए भूमंडलीकरण के दौर में भाषाओं पर बढ़ता खतराए भारतीय संस्कृति की पहचान है हिन्दीए प्रकाश.स्तम्भ की भांति हैं शिक्षकए भविष्य संवारने के लिए सहेजें बचपनए मानव और पर्यावरण रु सतत विकास और चुनौतियाँ लौट आओ नन्ही गौरैयाए विभिन्न संस्कृतियों में नव वर्षए प्रेमए वसंत और वैलेंटाइनए मानव जीवन को लीलती तंबाकू की विषबेलए माँ रु एक अनमोल रिश्ताए समकालीन परिवेश में नारी विमर्शए आजादी के आंदोलन में भी अग्रणी रही नारीए सोशल मीडिया और आधी आबादी की मुखर अभिव्यक्तिए शिक्षाए साहित्य और स्त्रीए श्नारी शक्ति वंद गढ़ेगी राजनीति में महिलाओं की नई इबारत सहित स्त्री पक्ष पर छहए प्रकृति पक्ष से दो और शेष संस्कृति पक्ष पर आलेख हैं। श्प्रेमए वसंत और वैलेंटाइनश् एक ऐसा आलेख है जिसमें तीनों पक्ष हैं। इस पुस्तक को पढ़ते हुए हम एक विचार यात्रा पर निकलते हैं जिसके पन्द्रह पड़ाव हैं और आख़िरी एक मंज़िल है जहाँ स्वतंत्र भारत की स्वतंत्र नारी एक नई इबारत लिखने जा रही है जो नारी शक्ति वंदन के रुप में राजनीतिक है और राजनीति से आगे भी। वे डॉण् अम्बेडकर जी को उद्धृत करती हैंए जो कहते हैं कि मैं किसी भी समाज की प्रगति उस समाज में महिलाओं द्वारा हासिल की गई प्रगति से नापता हूँ।

स्वतंत्रता संग्राम से आज के समय तक राष्ट्रीयए सामाजिकए पर्यावरणीयए नागरिक स्थितियों और परिस्थितियों में स्त्रीए संस्कृति और प्रकृति के प्रश्नों पर एक द्रष्टा और भोक्ता के अनुभवों और अध्ययनों द्वारा सृजित ये आलेख हमें सूचना सम्पन्न करने के साथ हमारे संवेदनात्मक ज्ञान में वृद्धि करते हैं और समाज और राष्ट्र के लिए कुछ करने की प्रेरणा भी प्रदान करते हैं। लेखन की यह सार्थकता है कि वह हमें विवेक और दृष्टि.सम्पन्न बनाए। आकांक्षा यादव जी के आलेखों में यह ताक़त और क्षमता है। संग्रहीत आलेख युगीन विषयों के संकटों और प्रश्नों से टकराते हैं। चाहे वह हिन्दी भाषा होए नारीए बालकए युवा होंए प्रकृति हो या संस्कृति हो या टेक्नोलॉजी या तम्बाकू। लेकिन इनका स्वर टकराहट का नहीं है बल्कि संवेदना और समाधान का है। इसलिए ये विमर्शात्मक होते हुए भी सरस हैं और इनमें दृष्टि की समरसता है।

इन विमर्शात्मक आलेखों के बीच एक सृजनात्मक आलेख भी है जिसे हम ललित निबंध भी कह सकते हैं। यह निबंध है. प्रेमए वसंत और वैलेंटाइन। इसमें काव्यात्मक आत्मोद्गार का दर्शन और कविताओं के सुन्दर उद्धरण हैं। इसमें खलील जिब्रानए अज्ञेयए कबीर और किंवदंती बन चुके प्रेमियों की सूची के साथ वेद की ऋचाओं की झंकृति है। यहाँ लेखिका एक सधी और सुधी विमर्शकार के साथ एक बेहतरीन ललित निबंधकार भी दिखाई पड़ती हैं।

सौभाग्य प्रकाशनए नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित सुश्री आकांक्षा यादव के इस संग्रह में समाहित आलेख हमें सूचना.सम्पन्न करने के साथ हमारी ज्ञानात्मक संवेदना में भी वृद्धि करते हैं इसलिए इनके महत्व का दायरा बड़ा है। भाषाए नारीए समाज और पर्यावरण विमर्श के लिए आवश्यक आंकड़ों और ब्योरों की यहाँ उपलब्धता है। आलेख लेखन की विशिष्ठ शैली और पठनीयता है। विचारों का भावाकुल प्रसार है। इसमें वह सब कुछ है जो एक विद्वान को भी रुचेगा और एक विद्यार्थी के लिए तो इसे विमर्श.गीता ही समझिए! इसकी सुन्दर और सम्यक भूमिका प्रसिद्ध शिक्षाविदए साहित्यकार पूर्व कुलपति प्रोण् राम मोहन पाठक ने लिखी है। निश्चिं ततःए प्रस्तुत कृति पठनीयए रोचकए ज्ञानवर्धक व संग्रहणीय है। आशा की जानी चाहिए कि यह कृति हिन्दी के अनुरागियों एवं नारीए प्रकृति और संस्कृति के विविध आयामों पर शोधार्थियों में अपना स्थाएई स्थाहन सुनिर्मित करने में सफल होगी।

●●●

इस मंदिर के दर्शन मात्र से दूर होता है

कालसर्प दोष

विकास शुक्ला

तीर्थराज प्रयागराज के पौराणिक मंदिरों में नागवासुकी मंदिर का विशेष स्थान है। सनातन आस्था में नागों या सर्प की पूजा प्राचीन काल की जाती रही है। पुराणों में कई नागों की कथाओं का वर्णन है जिनमें से नागवासुकी को सर्पराज माना जाता है। नागवासुकी भगवान शिव के कण्ठहार हैं, समुद्र मंथन की पौराणिक कथा के अनुसार नागवासुकी सागर को मथने के लिए रस्सी के रूप में प्रयुक्त हुए थे। समुद्र मंथन के बाद भगवान विष्णु के कहने पर नागवासुकि ने प्रयाग में विश्राम किया। देवताओं के आग्रह पर वो यहां ही स्थापित हो गये। मान्यता है कि प्रयागराज में संगम स्नान के बाद नागवासुकि का दर्शन करने से ही पूर्ण फल की प्राप्ति होती है। नागवासुकि जी का मंदिर वर्तमान काल में प्रयागराज के दारागंज मोहल्ले में गंगा नदी के तट पर स्थित है।

समुद्र मंथन के बाद सर्पराज नाग वासुकि ने प्रयाग में किया था विश्राम

नागवासुकि जी कथा का वर्णन स्कंद पुराण, पद्म पुराण,भागवत पुराण और महाभारत में भी मिलता है। समुद्र मंथन की कथा में वर्णन आता है कि जब देव और असुर, भगवान विष्णु के कहने पर सागर को मथने के लिए तैयार हुए तो मंदराचल पर्वत मथानी और नागवासुकि को रस्सी बनाया गया था। लेकिन मंदराचल पर्वत की रगड़ से नागवासुकि जी का शरीर छिल गया था। तब भगवान विष्णु के ही कहने पर उन्होंने प्रयाग में विश्राम किया और त्रिवेणी संगम में स्नान कर घावों से मुक्ति प्राप्त की।

नागपंचमी और सावन माह में दर्शन का है विशेष महत्व
समुद्र मंथन के बाद सर्पराज नाग वासुकि ने यहां किया था विश्राम
समुद्र मंथन की पौराणिक कथा से सम्बद्ध है प्रयागराज का यह प्रसिद्ध मंदिर
भगवान शिव के कण्ठहार नाग वासुकि के दर्शन मात्र से दूर होता है कालसर्प दोष
सीएम योगी के प्रयासों से महाकुम्भ में मंदिर का हुआ है जीर्णोद्धार और सौंदर्यीकरण
मान्यता है कि त्रिवेणी संगम के स्नान के बाद नाग वासुकि के दर्शन से ही होती है पूर्ण फल की प्राप्ति

वाराणसी के राजा दिवोदास ने तपस्या कर उनसे भगवान शिव की नगरी काशी चलने का वरदान मांगा। दिवोदास की तपस्या से प्रसन्न होकर जब नागवासुकि प्रयाग से जाने लगे तो देवताओं ने उनसे प्रयाग में ही रहने का आग्रह किया। तब नागवासुकि ने कहा कि, यदि मैं प्रयागराज में रुकूंगा तो संगम स्नान के बाद श्रद्धालुओं के लिए मेरा दर्शन करना अनिवार्य होगा और सावन मास की पंचमी के दिन तीनों लोकों में मेरी पूजा होनी चाहिए। देवताओं ने उनकी इन मांगों को स्वीकार कर लिया। तब ब्रह्माजी के मानस पुत्र द्वारा मंदिर बना कर नागवासुकि को प्रयागराज के उत्तर पश्चिम में संगम तट पर स्थापित किया गया।

नागवासुकि मंदिर में स्थित था भोगवती तीर्थ

एक अन्य पौराणिक कथा के अनुसार जब देव नदी गंगा जी का धरती पर अवतरण हुआ तो भगवान शिव की जटा से उतर कर भी मां गंगा का वेग अत्यंत तीव्र था और वो सीधे पाताल में प्रवेश कर रहीं थी। तब नागवासुकि ने ही अपने फन से भोगवती तीर्थ का निर्माण किया था। नागवासुकि मंदिर के पुजारी श्याम लाल त्रिपाठी ने बताया कि प्राचीन काल में मंदिर के पश्चिमी भाग में भोगवती तीर्थ कुंड था जो वर्तमान में कालकवलित हो गया है। मान्यता है बाढ़ के समय जब मां गंगा मंदिर की सीढ़ियों को स्पर्श करती उस समय इस घाट पर गंगा स्नान से भोगवती तीर्थ के स्नान का पुण्य मिलता है।

मान्यता है कि नागपंचमी पर सर्पों के पूजन पर्व यहीं से शुरु हुआ

मंदिर के पुजारी ने बताया कि नागपंचमी पर्व की शुरुआत भगवान नागवासुकि जी की शर्तों के कारण ही हुई। नाग पंचमी के दिन मंदिर में प्रत्येक वर्ष मेला लगता है। मान्यता है इस दिन भगवान वासुकि का दर्शन कर चांदी के नाग-नागिन का जोड़ा अर्पित करने मात्र से कालसर्प दोष से मुक्ति मिलती है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक मास की पंचमी तिथि को नागवासुकि के विशेष पूजन का विधान है। इस मंदिर में कालसर्प दोष और रुद्राभिषेक करने से जातक के जीवन में आने वाली सभी तरह की बाधाएं समाप्त हो जाती हैं।

सीएम योगी के प्रयासों से महाकुम्भ में हो रहा है मंदिर का जीर्णोद्धार और सौंदर्यीकरण

पौराणिक वर्णन के अनुसार प्रयागराज के द्वादश माधवों में से असि माधव का स्थान भी मंदिर में ही था। सीएम योगी आदित्यनाथ जी के प्रयास से इस वर्ष देवोत्थान एकादशी के दिन असि माधव जी के नये मंदिर में उन्हें पुनः प्रतिष्ठित किया गया है। उन्होंने बताया कि इससे पहले सांसद मुरली मनोहर जोशी ने भी मंदिर का जीर्णोद्धार कराया था। इस महाकुम्भ में नागवासुकि मंदिर और उनके प्रांगण का जीर्णोद्धार और सौंदर्यीकरण का कार्य हुआ है। यूपी सरकार और पर्यटन विभाग के प्रयासों से मंदिर की महत्ता से नई पीढ़ी को भी परिचित कराया जा रहा है। संगम स्नान, कल्पवास और कुम्भ स्नान के बाद नागवासुकि के दर्शन के बाद ही पूर्ण फल की प्राप्ति होती है और जीवन में आने वाली सभी बाधांए दूर होती हैं।

'साबरमती रिपोर्ट'

सच की तलाश

शशी दीक्षित

त्रासदियां बीत जाती हैं किंतु उससे मिले जख्म और निशान बरसों-बरस चेतन-अवचेतन में हाहाकार मचाते रहते हैं। पीड़ाओं को जब स्वर नहीं मिलता तो वे अनकही टीस बनकर पीढ़ियों तक सालते रहते हैं। एक ऐसे ही दुखद षड्यंत्र को गोधरा ट्रेन के एक डिब्बे को जलाकर अंजाम दिया गया था। वर्षो बाद ही सही, किसी ने जलाकर मार दिए उन 59 निर्दोष कार सेवकों के प्रति श्रद्धांजलि ज्ञापित की है। यह घटना 2002 में गुजरात के गोधरा नाम के स्थान पर कोच एस-6 को एक सोची-समझी साजिश के साथ जलाकर की गई थी। इतिहास में 27 फरवरी का दिन एक दुखद घटना के रूप में दर्ज है। दरअसल 27 फरवरी, 2002 को गुजरात के गोधरा स्टेशन से रवाना हुई साबरमती एक्सप्रेस ट्रेन में उन्मादी भीड़ ने आग लगा दी थी और इस भीषण अग्निकांड में 59 लोगों की मृत्यु हो गई थी। अयोध्या से आ रही अहमदाबाद को जाने वाली साबरमती एक्सप्रेस, गोधरा स्टेशन से चली ही थी कि किसी ने चेन खींचकर ट्रेन रोक ली और फिर पथराव के बाद ट्रेन के एक डिब्बे को आग के हवाले कर दिया गया।

साबरमती रिपोर्ट फिल्म की कहानी इसी सत्य घटना के इर्द-गिर्द बुनी गई है। फिल्म की कहानी का केंद्र है एक बड़े न्यूज चैनल के लिए काम करने वाला मनोरंजन फिल्म आदि को कवर करने वाला हिंदी पत्रकार समर कुमार है। उसे अंग्रेजी के पत्रकार हेय दृष्टि से देखते हैं, वहीं उसी चैनल में तेजतर्रार और सुविख्यात एंकर मनिका राजपुरोहित, जिसका चैनल में उसकी फर्राटेदार अंग्रेजी के साथ प्रभावी व्यक्तित्व का बहुत प्रभाव है। इसी बीच गोधरा में भयानक ट्रेन हादसे की खबर आती है, जिसे कवर करने मनिका और समर दोनों ही गुजरात पहुंचते हैं। रिपोर्टिंग करते हुए समर मनिका राजपुरोहित की दृष्टि से रिपोर्ट तैयार करता है, किंतु जो सच उसकी आँखो ने देखा था उसे भी रिकार्ड करता है। ये वीडियों सच का आईना है। समर सच्चाई दिखाने की आशा में अपनी रिपोर्ट चैनल को सौंप देता है, पर मनिका अपने प्रभाव, राजनीतिक दबाव और संभवतः फंडिंग के लालच में अपने चैनल के बॉसेज के साथ मिलकर एक झूठी रिपोर्ट दिखाती है। समर इसका विरोध करता है और अपना फुटेज वापस मांगने की बात करता है, तो उस पर चोरी का आरोप लगाकर उसे नौकरी से निकाल दिया जाता है। समर की महिला मित्र भी साथ छोड़ देती है। नौकरी और गर्लफ्रेंड दोनों को ही खो चुका समर शराब के नशे में डूब जाता है। समय के करवट बदलने के साथ, पांच साल बाद नानावटी कमीशन की रिपोर्ट के आने पर, मनिका अपनी मक्कारी खुलने के भय से चैनल की नई रिपोर्टर अमृता (राशि खन्ना) को गोधरा भेजती है, ताकि वह उसके अनुरुप कहानी गढ़ सके। मगर

यहां अमृता के हाथ समर की वो पुरानी फुटेज लग जाती है, जिसे चैनल ने दबा दिया था। अमृता समर को ढूंढकर गोधरा कांड की सच्चाई की तह में जाने का निर्णय करती है। समर और अमृता सच्चाई ढूंढते हुए मेहरुन्निसा से मिलते हैं और धीरे-धीरे इस कांड की असलियत का पता लगाते हैं। समर मारे गए लोगो को श्रद्धांजलि देता है और अपनी रिपोर्ट जनता के समक्ष रखता है।

कहानी का आरंभ अच्छा है पर स्क्रीन प्ले थोड़ा ढीला है। साबरमती रिपोर्ट का निर्देशन मूल रुप से रंजन चंदेल ने किया था, जिन्होंने खुद को इस प्रोजेक्ट से अलग कर लिया और उनकी जगह अनुभवी टीवी लेखक धीरज सरना ने ले ली। अभिनय की बात करें तो समर की भूमिका के साथ विक्रांत मैसी, मनिका की भूमिका में रिद्धि डोगरा प्रभावित करती हैं। रिद्धि ने ग्रे शेड की बढ़िया भूमिका निबाही है। अमृता की भूमिका में राशि जंची हैं, हालांकि उनकी क्षमता का पूरा उपयोग नहीं किया गया है। अन्य कलाकारों के चरित्र दबे से लगते हैं। निर्देशन ठीक-ठाक है, जिसे बेहतर किया जा सकता था। कुछ संवाद करारा व्यंग्य हैं जैसे, 'हिन्दी के पत्रकारों की कोई खास इज्जत है नहीं.'

कुछ शराब पीने के हास्यपरक दृश्य हैं। अमलेंदु चौधरी द्वारा की गई सिनेमैटोग्राफी बढ़िया है। फिल्म की कमजोरी ये है कि सच दिखाते हुए भी फिल्म सच का सामना नहीं करना चाहती। शायद सेकुलरिज्म का तड़का लगाए बिना बालीवुड में कोई फिल्म बनना संभव ही नहीं है। ये अवश्य है कि जानबूझकर किए गए दुष्कृत्य को हादसा सिद्ध करने के प्रयासों का भंडाफोड़ करने की ईमानदार कोशिश फिल्म में की गई है। संतोषजनक बात है कि अब कम से कम 'द कश्मीर फाइल्स', 'केरला स्टोरी ' और 'साबरमती रिपोर्ट' जैसी फिल्में बनाने का जोखिम लिया जाता है। फिल्म और भी अच्छी बन सकती थी पर फिर भी अच्छी बात ये है कि फिल्म के अंत में मारे गए 59 लोगों के नाम बताकर उन हुतात्माओं को श्रद्धांजलि दी गई है। असत्य से अधिक घातक सत्य को छुपाना होता है। लोगों को पूरा सच जानने का अधिकार है,

अतः अब ऐसे सत्यों का उद्घाटन होना संतोषप्रद है। स्त्री -2 या भूलभुलैया जैसी मसाला फिल्मों के दौर में एक अलग तरह की फिल्म है।फिल्म को कुछ राज्यों में टैक्स फ्री किया गया है जिनमें उत्तर प्रदेश भी शामिल है। फिल्म कुछ सीमा तक सच के निकट है अतः एक बार देख लेनी चाहिए।

आखिर क्या है, सोशल मीडिया और रील्स का एडिक्शन ?

समस्याएं और बचने के तरीके

विजय गर्ग

रामी को जैसे ही घर के कामों से फुर्सत मिली, उसने अपना मोबाइल उठाया और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर जाकर रील्स देखना शुरु कर दिया। रील्स देखते-देखते कब एक घंटा गुजर गया, उसे पता ही नहीं चला। उसने सोचा था, बस दो चार रील्स देखकर फिर अपने जरूरी काम करेगी। लेकिन एक घंटे से ज्यादा समय रील्स देखते-देखते निकल गया। ईशानी को बहुत बुरा लगा कि उसने अपना इतना समय रील्स देखकर खराब कर दिया। लेकिन फिर शाम के वक्त थोड़ा खाली समय मिलने पर वह दोबारा रील्स देखने में मशगूल हो गई। वैसे इस तरह की समस्या से दो चार होने वाली सिर्फ हो नहीं है। आजकल हर दूसरा व्यक्ति सोशल मीडिया और रील्स देखने के एडिक्शन के जाल में फँस गया है। आखिर क्या है, सोशल मीडिया और रील्स का एडिक्शन ? इसका शिकार होने पर किस तरह की समस्याएं लोगों के जीवन में आती है? इससे कैसे बचा जा सकता है? हमें जरूर जानना चाहिए।

क्या है सोशल मीडिया रील्स का एडिक्शन

आज दुनिया पूरी तरह से हाईटेक हो चुकी है। फोन के जरिए ही हम अपने बहुत से काम घर बैठे-बैठे कर लेते हैं। जैसे शॉपिंग करना, बिल्स भरना। ऐसे जरुरी और समय लेने वाले काम आसानी से फोन के जरिए हो जाते हैं, जिससे लोगों के पास बहुत सारा समय बचता है। ऐसे में इस बचे हुए समय में वे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एक्टिव हो जाते हैं। शुरुआत में थोड़ा ही समय इन प्लेटफॉर्म पर लोग बिताते हैं, लेकिन वक्त के साथ उन्हें सोशल मीडिया कंटेंट और रील्स देखने का चस्का सा लग जाता है। रील्स देखते-देखते, वे भूल जाते हैं कि अपना कितना समय बर्बाद कर चुके हैं। घर हो या ऑफिस, जरा सा खाली समय मिलते ही लोग रील्स देखने में बिजी हो जाते हैं। धीरे-धीरे यह आदत कब एडिक्शन में बदल जाती है, लोगों को पता भी नहीं चलता है। क्या कहती है स्टडी पिछले साल सामने आई एक स्टडी के अनुसार छह में से एक भारतीय हर रोज लगभग डेढ़ घंटा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर गुजारता है, इसमें भी अधिक समय वह रील्स देखने में गुजार देता है। सोचने और चिंता करने वाली बात है कि सिर्फ रील्स देखने में ही हर रोज एक घंटे से अधिक का समय लोग सोशल मीडिया पर बर्बाद करते हैं और इसके बदले में कोई पॉजिटिव रिजल्ट भी उनको नहीं मिलता है।

ऐसे करें एडिक्शन को कंट्रोल

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और रील्स का एडिक्शन अगर किसी को भी है तो ऐसा नहीं है कि वह इससे छुटकारा नहीं पा सकता है। इससे छुटकारा पाना या सोशल मीडिया एडिक्शन को बहुत हद तक कंट्रोल करना मुमकिन है। बस लोगों को थोड़ा जागरुक होना होगा। उन्हें खुद के समय की और जिंदगी की अहमियत को समझना होगा। साथ ही कुछ छोटी-छोटी बातों को महत्व भी देना होगा, जिससे वे सोशल मीडिया कंटेंट और रील्स के एडिक्शन से बाहर आ सकें। जैसे आपको सोशल मीडिया पर एक्टिव रहना ही है, रील्स देखनी ही है तो टाइम लिमिट सेट करके देखें। कई सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर बाँच टाइम को आप फिक्स कर सकती हैं। तय किए गए समय के बाद आपके सामने मैसेज आता है. कि आप आगे रील्स देखना चाहते हैं या नहीं? इस मैसेज के आने पर आपको तुरंत ही फोन बंद कर देना चाहिए। आपको रील्स कुछ घंटों के लिए देखनी भी है तो नॉलेज देने वाली रील्स देखें। रील्स या कंटेंट ऐसा हो, जो आपकी जिंदगी को बेहतर बनाने का काम करें। वरना बेकार कंटेंट से दूरी ही बनाकर रखें।

हॉबीज को अहमियत दीजिए

सोशल मीडिया पर एक्टिव ना रहने पर आप शुरुआती दौर में बोरियत महसूस कर सकती हैं। लेकिन इस बोरियत को दूर करने के लिए आप क्रिएटिव कामों में खुद को बिजी रखना सीखें। इसके लिए बुक रीडिंग की आदत डालें, इससे आपकी नॉलेज और क्रिएटिविटी दोनों बढ़ेगी। इसके अलावा आप गार्डनिंग, पेंटिंग जैसी हॉबीज भी अपनाएं। साथ ही अपनी फैमिली, फ्रेंड्स के संग क्वालिटी टाइम बिताएं, उनसे अपने मन की बातें साझा करें। उनके साथ खुशी भरे पल बिताएं। इन सभी बातों को फॉलो करके आप रील्स या सोशल मीडिया एडिक्शन से बच पाएंगी और अपने बचे हुए कीमती समय में कुछ बेहतर और अच्छा काम कर पाएंगी

एक्सपर्ट की राय लें

अगर आप रील्स या सोशल मीडिया पर बहुत टाइम बिता रही है और इसे कंट्रोल करने में नाकामयाब हो रही है तो आखिर में उस सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को फोन से डिलीट हो कर दें। अगर आपका रील्स और सोशल मीडिया पर एक्टिव रहने का एडिक्शन अधिक बढ़ गया है और आप उसे कंट्रोल करने में असफल हो रही हैं तो एक्सपर्ट की राय लें। वह आपको इस एडिक्शन से बाहर आने में मदद करेंगे।

कन्नौज पुलिस बनेगी यूपी की पहली डिजिटल पुलिस

सीएम योगी के दिशा निर्देशन में बड़े बदलाव की ओर यूपी पुलिस

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के डिजिटल इंडिया मिशन को उत्तर प्रदेश में योगी सरकार तेज गति से अमली जामा पहनाने में जी-जान से जुटी हुई है। इसके तहत वर्ष के अंत (दिसंबर) तक कन्नौज पुलिस के सभी थाने मोटी-मोटी फाइलों के जंजाल से मुक्त हो जाएंगे। इसी के साथ कन्नौज पुलिस पूरे प्रदेश में पहला ऐसा जिला होगा, जहां सारे थाने ई ऑफिस सिस्टम प्रणाली पर पूरी तरह से काम करते नजर आएंगे, जहां कागजों पर लिखा-पढ़ी का दौर नये साल से गुजरे जमाने की बात हो जाएगा। दरअसल, स्मार्ट पुलिसिंग की दिशा की ओर कदम बढ़ाते हुए कन्नौज पुलिस सभी थानों, सीओ ऑफिस और एडिशनल ऑफिस समेत तमाम पुलिस ऑफिसेज में ई-ऑफिस सिस्टम लागू कर देगी। इसके लिए तैयारी और ट्रेनिंग लगभग पूरी हो चुकी है। साथ ही सभी थानों और ऑफिस को ई ऑफिस सिस्टम से संबंधित उपकरण उपलब्ध करा दिये गये हैं।

मोटी-मोटी फाइलों का जमाना गुजरे जमाने की बात

कन्नौज एसपी अमित कुमार आनंद ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा डिजिटल इंडिया मिशन को बढ़ावा देने की दिशा में लगातार काम किया जा रहा है। इसी के तहत उत्तर प्रदेश पुलिस में तकनीकी सुधार और आधुनिकरण की दिशा में बड़े कदम उठाये जा रहे हैं। इसी दिशा में कन्नौज पुलिस ने बड़ी पहल करते हुए सभी थानों को दिसंबर 2024 तक पूरी तरह से डिजिटल बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस पहल के तहत थानों में मोटी-मोटी फाइलों का जमाना खत्म होगा और ई-ऑफिस प्रणाली के माध्यम से प्रशासनिक कार्यों को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सुचारु रुप से संचालित किया जाएगा। इसी के तहत कन्नौज

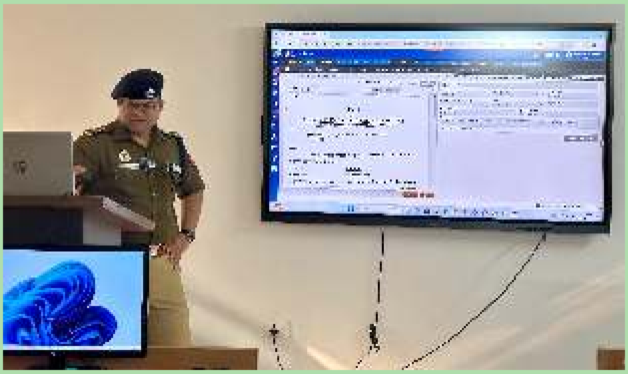

उत्तर प्रदेश का पहला ऐसा जिला बन जाएगा, जहां सभी पुलिस थानों और कार्यालयों में शत-प्रतिशत ई-ऑफिस प्रणाली पर काम होगा। पुलिस अधीक्षक कन्नौज ने हाल ही में पुलिस कार्यालय में आयोजित एक समारोह में डिजिटल परिवर्तन की शुरुआत की है। इस दौरान सभी थाना प्रभारियों, क्षेत्राधिकारियों और राजपत्रित अधिकारियों को लैपटॉप वितरित किए गए।

कन्नौज पुलिस दिसंबर तक हो जाएगी पूरी तरह से डिजिटल
पूरे प्रदेश में कन्नौज पुलिस ई-ऑफिस को लागू करने वाला होगा पहला जिला
दिसंबर के बाद कन्नौज के थानों में नहीं दिखेगा मोटी-मोटी फाइलों का गठ्ठर
ई-ऑफिस प्रणाली से बढ़ेगी पारदर्शिता, जनता को मिलेगा त्वरित न्याय

पुलिसकर्मियों को दी जा रही ई-ऑफिस की ट्रेनिंग, थानों को उपलब्ध कराए गए तकनीकी उपकरण

पुलिस अधीक्षक कन्नौज अमित कुमार आनंद ने बताया कि ई-ऑफिस प्रणाली को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए पुलिसकर्मियों को ट्रेनिंग दी जा रही है। यह प्रशिक्षण जिला प्रशिक्षण केंद्र में आयोजित किया गया, जिसमें पुलिसकर्मियों को ई-ऑफिस की तकनीकी जानकारी दी जा रही है। यह प्रणाली एनआईसी (नेशनल इंफॉर्मेटिक्स सेंटर) द्वारा तैयार की गई है और यह केन्द्रीय सचिवालय नियमावली (CSMeOP)पर आधारित है। उन्होंने बताया कि ई-ऑफिस प्रणाली को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए जिले में डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर को मजबूत किया गया है। सभी पुलिस थानों और कार्यालयों को आवश्यक तकनीकी उपकरण उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

लंबित शिकायतों के निपटारे में आएगी और तेजी, मिलेगा त्वरित न्याय

ई-ऑफिस प्रणाली का मुख्य उद्देश्य फाइलों और डेटा के डिजिटल प्रबंधन के माध्यम से प्रशासनिक कार्यों में पारदर्शिता और दक्षता लाना है। यह प्रणाली शिकायतों और रिपोर्टिंग की प्रक्रिया को तेज बनाएगी, जिससे जनता को त्वरित न्याय मिल सकेगा। साथ ही डिजिटल फाइल के जरिये मॉनिटरिंग से अधिकारियों को कार्यों पर नजर रखने और निर्णय प्रक्रिया को सुगम बनाने में काफी मदद मिलेगी। वहीं ई-ऑफिस प्रणाली लागू होने से जनता को भी कई लाभ होंगे। इससे थानों में लंबित शिकायतों के निपटारे में देरी नहीं होगी और रिपोर्टिंग प्रक्रिया पारदर्शी के साथ समयबद्ध होगी। इसके अलावा थानों और जिला कार्यालयों में भ्रष्टाचार की संभावना भी कम होगी। कन्नौज पुलिस की पहल जनता के लिए एक नई उम्मीद की किरण लेकर आई है। इससे न केवल पुलिसकर्मियों का कार्यभार कम होगा, बल्कि आमजन को पुलिस विभाग से जुड़ी सेवाओं का लाभ तेजी और पारदर्शी तरीके से मिलेगा। कन्नौज पुलिस की यह पहल प्रदेश के अन्य जिलों के लिए प्रेरणा है। ●●●

चिरयुवा रहने की ललक में लुटते लोग

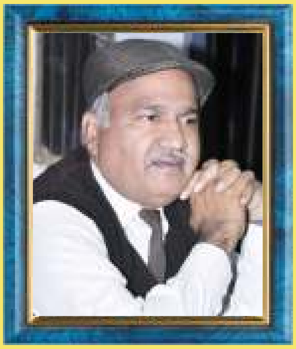

विजय गर्ग

बीते दिनों कानपुर शहर में बुजुर्गों को जवान बनाने का झांसा देकर लोगों के साथ धोखाधड़ी हुई हैरत में डाल देने वाले इस मामले में बुजुर्गों को जवान बनाने के नाम पर पैंतीस करोड़ की ठगी की गई। झांसा देने वाले लोगों ने इजराइली मशीन से जवान कर देने की बात कही थी। वृद्धों को जवान बनाने के नाम पर ठगी लगभग एक साल तक चलती रही। जालसाजी के लिए इजराइल की टाइम मशीन के कमाल और आक्सीजन थेरेपी से जुड़ी मनगढ़ंत बातें बता कर लोगों को भरमाया गया। धोखाधड़ी करने वाले दंपति ने 'नेटवर्क मार्केटिंग' की तर्ज पर पांच सौ से ज्यादा लोगों जोड़ कर उनका 'इलाज' करने की हिमाकत भी कर डाली। एक तरह से जुगाड़ ही कही जा सकने वाली इस मशीन से युवा बनने के फेर में लोगों ने न केवल धन गंवाया, बल्कि सेहत से जुड़ी परेशानियां भी उनके हिस्से आईं। जवान बनाने की प्रक्रिया में कई लोगों के चेहरे जल गए या त्वचा पर सफेद निशान पड़ गए।

दरअसल, लोगों में सदा युवा बने रहने की मनःस्थिति घर करती जा रही है। अब झांसेबाजी की सोची-समझी रणनीति के साथ ही, उम्र की स्वीकार्यता को लेकर लोगों का बदलता मनोविज्ञान जिम्मेदार है। कहना गलत नहीं होगा कि कभी टीवी सिनेमा की दुनिया में चर्चित चेहरों तक सिमटा सौंदर्य और युवा बने रहने का । जुनून अव हर ओर दिख रहा है। सोशल मीडिया की दिखावे की जीवनशैली कहें साधन संपन्न होने के के कारण धन लुटा कर चिर युवा रहने की ललक । शारीरिक सौंदर्य और यौवन को बनाए रखने के लिए कुछ भी करने की सनक हमारे देश में ही नहीं, दुनियाभर में बढ़ी है। खूबसूरती निखारने वाले सामानों से बाजार अटे पड़े हैं। शारीरिक सौष्ठव के साथ जवान रहने के नुस्खे देने वालों की भीड़ भी बढ़ रही है। आभासी दुनिया से लेकर असली दुनिया तक त्वचा की कसावट और चमक बरकरार रखने के तौर-तरीकों को जानने की ललक रखने वाले कम नहीं। ठग प्रवृत्ति के लोग इसी मानसिकता का फायदा उठाते हैं। तकनीकी संवाद के दौर में अपने अनुभव साझा कर दूसरों को भी प्रेरित करने या जोड़ने की रीत भी चल पड़ी है। कानपुर में युवा बनाने | का झांसा देने वालों ने 'नेटवर्क मार्केटिंग' के माध्यम से ही लोगों का भरोसा जीता था।

यौवन लौटा लाने वाली अविश्वसनीय सी बात पर भरोसा करने के लिए भी ठगों ने उनसे जुड़ने वाले

लोगों को लालच दिया। जवान बनने की 'थेरेपी' ले रहे लोगों को 'नेटवर्क मार्केटिंग' से लोगों को जोड़ने पर बाकायदा कमीशन देने का वादा किया गया। इतना नहीं बाजार की रणनीति के मुताबिक ही शुरुआती पेशकश में कम शुल्क रखा गया। लोगों को बताया गया कि एक साल बाद नब्बे हजार वाली योजना तीन लाख रुपए की हो जाएगी। यह वादा भी किया कि कोई व्यक्ति पूरी 'थेरेपी' नहीं लेता है, तो कंपनी एक साल बाद अग्रिम के पूरे पैसे वापस कर देगी। ऐसी बातें जान कर कई लोग जवान बनने की इच्छा से इस जाल में फंसते चले गए। जो लुभावनी बातें दैनिक जीवन में इस्तेमाल होने वाले किसी उत्पाद के प्रचार में देखने कि मिलती हैं, उनको आधार बना कर इस ठगी के लिए उपभोक्ता भी तैयार किए गए। बीते कुछ वर्षों में सौंदर्य संवर्धन के उत्पाद और युवा बनाए रखने वाली सेवाओं का बाजार देश ही नहीं, दुनियाभर मैं अपने पैर फैला रहा है। हालात ऐसे हो चले हैं कि लोग चमत्कारी बदलावों की उम्मीद तक बांध लेते हैं। यह मनोदशा झांसेबाजी करने वालों के लिए माहौल बना रही है।

चिंता की बात है कि सहज रुप से उम्र की स्वीकार्यता के बजाय उम्र के हर पड़ाव पर ही युवा बने रहने की चाह लोगों को बीमारियों के घेरे में भी ला रही है। लोग अपनी कमाई का बड़ा हिस्सा स्वयं की देखभाल में लगा रहे हैं। हालांकि इस सजगता का समग्र स्वास्थ्य की देखभाल से कोई लेना-देना नहीं है। बीते दिनों अमेरिकी उद्योगपति ब्रायन जानसन के सदा जवान बने रहने की जिद भी वैश्विक स्तर पर चर्चा का विषय बनी। चिरयुवा रहने की ठान लेने वाले ब्रायन का दावा है कि उन्होंने अपनी उम्र की चाल उलट दी है। वे सैंतालीस वर्ष की आयु में भी अठारह साल के युवक की तरह दिखने लगे हैं। यह अद्भुत दावा करने की बड़ी वजह उनका 'एज रिवर्स' अनुसंधान है, जिसमें हर साल लगभग सोलह सोलह करोड़ रुपए खर्च होते हैं। निस्संदेह, इसी तरह की मानसिकता के कारण इस विषय पर गहन अध्ययन भी हो रहे हैं। हाल ही में चीनी विज्ञान अकादमी और 'बीजीआई रिसर्च' के वैज्ञानिकों ने बताया है कि शोध के आधार पर ऐसी तकनीक के विकास पर काम हो रहा है,जो उम्र को थामने में मदद कर सकती है।

हमारे सामाजिक परिवेश में भी बढ़ती आयु को लेकर असहजता देखने को मिल रही है। ऐसे में प्रश्न उठता है कि आखिर क्यों लोगों में उम्रदराज होने का का भय और यौवन को बनाए रखने की यह ललक बढ़ी है? यह उत्कंठा ही युवा बनाने वाले उत्पादों के बाजार को बढ़ावा दे रही है और यह सोच बाजार के मायावी खेल का हथियार बन रही है। झांसेबाजी के नए रास्ते खोल रही है। बावजूद इसके आज उम्र को थाम लेने वाले उत्पादों का बड़ा बाजार बन गया है। समझना आवश्यक है कि बाजार का अपना खेल है, जिसे जानना आमजन की जिम्मेदारी है। यौवन कायम रखने का यह जुनून दूसरे लोगों पर [भी मानसिक दबाव बना रहा है। ऐसा । मनोवैज्ञानिक दबाव जो मन को बीमार करता है। असल में सोशल मीडिया के माध्यम से 'क्लिक' भर में देश-दुनिया तक पहुंचती तस्वीरों ने भी चिर युवा बने रहने की सोच को बढ़ावा दिया है। अध्ययन बताते हैं कि सोशल मीडिया पर सुंदर दिखने की होड़ में हर उम्र के लोग अवसाद का शिकार हो रहे हैं। महिलाएं और युवा तो सौंदर्य संवर्धन के जाल में बुरी तरह फंस रहे हैं।

कुछ साल पहले एक अध्ययन में सामने आया था कि महिलाएं सबसे अधिक चिंतित इस बात से रहती हैं कि वे कैसी दिखती हैं। ब्रिटेन की एक संस्था 'वेट वाचर्स' की ओर से किए गए इस अध्ययन के मुताबिक दिनभर में एक महिला अपने आपको आठ बार कोसती है। हताशा से भरा यह भाव इतना गहरा है कि स्त्रियों को अपने जीवन से जुड़े करीब सभी पहलू कमतर लगने लगते हैं। नतीजा यह होता है कि कुंठा और तनाव का शिकार बन जाती हैं दिखावटी आभासी संसार ने इस भाव को और पोषित किया है। मनोवैज्ञानिक भी मानते हैं। कि तकनीक ने जिस तरह दूरियां घटाई हैं, एक दूसरे के प्रति प्रतिस्पर्धा की भावना को भी बल दिया है। नतीजतन लोग हर कीमत पर युवा बने रहने के जाल में फंस रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि लोगों में अपनी उम्र की सहज स्वीकार्यता का भाव बना रहे। ●●●

टीएचडीसीआईएल वाटर स्पोर्ट्स कप 2024

उत्तराखंड ब्यूरो

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, विद्युत क्षेत्र के अग्रणी सार्वजनिक उपक्रम, के तत्वावधान में उत्तराखंड के टिहरी गढ़वाल में स्थित टिहरी झील में तीसरे टिहरी वाटर स्पोर्ट्स कप 2024 का 10 दिसंबर, 2024 को हर्षोल्लास के साथ शुभारंभ हुआ। इस कार्यक्रम का उद्घाटन उत्तराखंड की माननीय महिला सशक्तीकरण, बाल विकास, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति, उपभोक्ता मामले, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री, श्रीमती रेखा आर्य ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। उन्होंने स्वस्थ जीवन शैली और राष्ट्र के समावेशी विकास को बढ़ावा देने में खेलों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने खेल उत्कृष्टता को बढ़ावा देने और इस तरह की असाधारण पहल के माध्यम से खिलाड़ियों को एक बड़ा एवं महत्वपूर्ण मंच प्रदान करने के लिए टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की सराहना की। उन्होंने राज्य के पर्यटन को बढ़ावा देने और उत्तराखंड के युवाओं के लिए नए अवसर पैदा करने में इन साहसिक एवं रोमांचक खेलों की भूमिका पर भी जोर दिया। वाटर स्पोर्ट्स कप के उद्घाटन समारोह में श्री विनोद कंडारी (माननीय विधायक, देवप्रयाग), श्री विक्रम सिंह नेगी (माननीय विधायक, प्रतापनगर) और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। देवप्रयाग और प्रतापनगर के माननीय विधायकों ने उत्तराखंड के सामाजिक-आर्थिक विकास में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के महत्वपूर्ण योगदान की सराहना की, विशेष रूप से राज्य की खेल पहलों पर इसके सकारात्मक प्रभाव और टिहरी क्षेत्र के उत्थान की दिशा में निगम के प्रयासों पर प्रकाश डाला।

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री आर.के. विश्नोई ने खेल उत्कृष्टता और सामाजिक विकास को बढ़ावा देने में निगम की महत्वपूर्ण भूमिका पर गर्व करते हुए कहा कि टीएचडीसी ने हमेशा से लोगों और समाज को सुदृढ़ता प्रदान करने में खेलों की परिवर्तनकारी शक्ति में विश्वास किया है। इस तरह के बड़े आयोजनों की मेजबानी के माध्यम सेहम न केवल खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं, बल्कि

क्षेत्र के समग्र विकास में भी योगदान देते हैं।"

उन्होंने कहा कि टिहरी में राष्ट्रीय स्तर के वाटर स्पोर्ट्स के आयोजन से लेकर अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ हाई परफॉर्मेंस एकेडमी की स्थापना तक, टीएचडीसी को नवाचार, सततता और सामाजिक प्रभाव को एकीकृत करने वाली पहलों का नेतृत्व करने पर गर्व है। कोटेश्वर, टिहरी में हमारी हाई परफॉर्मेंस एकेडमी, कयाकिंग और कैनोइंग एथलीटों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए उन्नत उपकरण और वैज्ञानिक प्रशिक्षण प्रदान करके उन्हें विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।"

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के निदेशक (कार्मिक), श्री शैलेंद्र सिंह ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया और युवा प्रतिभाओं को बढ़ावा देने तथा खेल भावना को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि टिहरी झील भारत में जल क्रीड़ा के लिए एक प्रमुख केंद्र के रुप में तेजी से उभर रही हैऔर हम इस यात्रा का हिस्सा बनकर सम्मानित महसूस कर रहे हैं। टिहरी झील में राष्ट्रीय स्तर के वाटर स्पोर्ट्स टूर्नामेंट के आयोजन से न केवल इस क्षेत्र का नाम राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रोशन हुआ है, बल्कि पर्यटन को बढ़ावा देने और क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक उत्थान में भी योगदान दिया है।हम इस चैंपियनशिप को खेल उत्कृष्टता का एक मानक बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैंजो एथलीटों की आकांक्षाओं और क्षेत्र के उत्साह को दर्शाता है।

इस अवसर पर श्री प्रशांत कुशवाहा, अध्यक्ष(आईकेसीए), डॉ. डी. के. सिंह, श्री एल. पी. जोशी, कार्यपालक निदेशक (टिहरी कॉम्प्लेक्स) एवं डॉ. ए. एन. त्रिपाठी, महाप्रबंधक (मा. सं एवं प्रशा.) भी उपस्थित रहे।

इस चैंपियनशिप ने देश भर के 22 राज्यों और विभिन्न सेवा संस्थानों के 500 से अधिक एथलीट, कोच और टीम मैनेजर को एक साथ लाने का महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किया । इस चार दिवसीय आयोजन में राष्ट्रीय खेल 2024 के लिए क्वालीफाइंग चैंपियनशिप के लिए प्रतियोगिताएं भी आयोजित होंगी। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड द्वारा भारतीय कयाकिंग और कैनोइंग एसोसिएशन (आईकेसीए), उत्तराखंड ओलंपिक एसोसिएशन और उत्तराखंड कयाकिंग और कैनोइंग एसोसिएशन के सहयोग से आयोजित यह कार्यक्रम क्षेत्र में खेल उत्कृष्टता और साहसिक एवं रोमांचक खेलों को बढ़ावा देने के लिए समर्पित कई हितधारकों के सामूहिक प्रयासों को उजागर करता है। ●●●

उत्तराखंड भारत में एक उभरता हुआ फ़िल्म गंतव्य

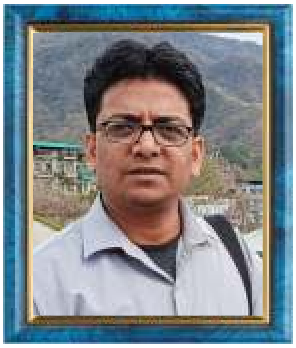

विकास कुमार

उत्तराखंड, जिसे अक्सर "देवताओं की भूमि" के रूप में जाना जाता है, भारत के सबसे आकर्षक और पसंदीदा फ़िल्म गंतव्यों में से एक के रूप में उभरा है। अपने राजसी पहाड़ों, हरे-भरे जंगलों, शांत झीलों और मनमोहक हिल स्टेशनों के साथ, राज्य ने फ़िल्म निर्माताओं और दर्शकों को समान रूप से आकर्षित किया है। उत्तराखंड की प्राकृतिक सुंदरता, इसके आध्यात्मिक सार के साथ मिलकर, इसे रोमांटिक ड्रामा से लेकर साहसिक फ़िल्मों और आध्यात्मिक महाकाव्यों तक, सिनेमाई शैलियों की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए एक आदर्श स्थान बनाती है।

उत्तराखंड की प्राकृतिक सुंदरता की एक झलक

भारत के उत्तरी भाग में स्थित उत्तराखंड अपने लुभावने परिदृश्यों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। यह राज्य हिमालय पर्वतमाला का घर है, जिसमें बर्फ से ढकी चोटियाँ, नदियाँ, हरी-भरी घाटियाँ और शांत झीलें हैं, जो सभी फ़िल्मों के लिए मनोरम पृष्ठभूमि प्रदान करती हैं। सुंदरता और शांति के अनूठे संयोजन ने कई बॉलीवुड और क्षेत्रीय फिल्म निर्माताओं को आकर्षित किया है, जो इन मंत्रमुग्ध करने वाले स्थानों के सार को कैद करने के लिए उत्सुक हैं।

उत्तराखंड में प्रसिद्ध फिल्म स्थान

नैनीताल: अपनी आकर्षक झील के लिए जाना जाने वाला, नैनीताल का हिल स्टेशन कई बॉलीवुड फिल्मों की पृष्ठभूमि रहा है। खूबसूरत नैनी झील और आसपास की पहाड़ियाँ इसे रोमांटिक फिल्मों के लिए एक आदर्श स्थान बनाती हैं। नैनीताल का राजा और श्री 420 जैसी प्रसिद्ध बॉलीवुड फिल्मों में इस स्थान को दिखाया गया है।

ऋषिकेश: अपने आध्यात्मिक महत्व और दुनिया की योग राजधानी के रूप में प्रसिद्ध, ऋषिकेश शांत और आध्यात्मिक पृष्ठभूमि की तलाश करने वाले फिल्म निर्माताओं के लिए एक पसंदीदा स्थान बन गया है। प्रतिष्ठित राम और लक्ष्मण झूला, गंगा नदी के साथ, आध्यात्मिकता और आत्म-साक्षात्कार की खोज करने वाली कई फिल्मों और वृत्तचित्रों में दिखाई दिए हैं। ये जवानी है दीवानी ने ऋषिकेश की मनमोहक सुंदरता को दिखाया।

मसूरी: अक्सर 'पहाड़ों की रानी' कहलाने वाली मसूरी से दून घाटी और हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों के मनोरम दृश्य दिखाई देते हैं। इसके हरे-भरे परिदृश्य और औपनिवेशिक आकर्षण इसे फिल्म

निर्माताओं के लिए पसंदीदा बनाते हैं। द बर्निंग ट्रेन और कभी अलविदा ना कहना की आंशिक शूटिंग इसी हिल स्टेशन पर हुई थी।

हरिद्वार: अपने धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व के लिए जाना जाने वाला हरिद्वार, जहाँ पवित्र गंगा नदी बहती है, आध्यात्मिकता और भक्ति की खोज करने वाली फिल्मों में दिखाई दिया है। हर की पौड़ी पर शाम की गंगा आरती सिनेमाई अन्वेषण के लिए एक रहस्यमय सेटिंग प्रदान करती है। बाजीराव मस्तानी जैसी फिल्मों में हरिद्वार को इसकी आध्यात्मिक गहराई के लिए दिखाया गया है।

औली: गढ़वाल क्षेत्र में एक छुपा हुआ रत्न, औली अपने स्की रिसॉर्ट और हिमालय के मनोरम दृश्यों के लिए जाना जाता है। इसके बर्फ से ढके परिदृश्य, विशेष रूप से सर्दियों के महीनों के दौरान, कई फिल्म निर्माताओं को आकर्षित करते हैं। यह स्थान आमिर खान और काजोल अभिनीत फना के लिए पृष्ठभूमि के रूप में काम करता है।

जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क: भारत का सबसे पुराना राष्ट्रीय उद्यान, जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क अपने समृद्ध वन्य जीवन के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें बाघ, हाथी और तेंदुए शामिल हैं। घने जंगल, ऊबड़-खाबड़ इलाके और शक्तिशाली रामगंगा नदी इसे साहसिक और वन्यजीव-थीम वाली फिल्मों के लिए एक आदर्श स्थान बनाती है। काल (2005), एक हॉरर थ्रिलर, का कुछ हिस्सा यहाँ शूट किया गया था।

केदारनाथ और बद्रीनाथ : उत्तराखंड के ये दो प्राचीन तीर्थ शहर भारत के सबसे प्रतिष्ठित आध्यात्मिक स्थलों में से हैं। प्रतिष्ठित केदारनाथ मंदिर और बद्रीनाथ मंदिर भक्ति और दिव्य पर केंद्रित कहानियों के लिए आश्चर्यजनक पृष्ठभूमि प्रदान करते हैं। सुशांत सिंह राजपूत और सारा अली खान अभिनीत फिल्म केदारनाथ (2018) ने इन पवित्र स्थानों के रहस्यमय आकर्षण को खूबसूरती से कैद किया

उत्तराखंड : आध्यात्मिक और साहसिक सिनेमा का केंद्र उत्तराखंड के विविध परिदृश्यों ने इसे आध्यात्मिक और साहसिक दोनों थीम वाली फिल्मों के लिए एक पसंदीदा गंतव्य बना दिया है। आध्यात्मिक फिल्में जो मनुष्य और ईश्वर के बीच के संबंध को दर्शाती हैं, अक्सर उत्तराखंड के पवित्र मंदिरों, घाटों और पहाड़ी इलाकों में अपनी आत्मा ढूंढती हैं। ऋषिकेश और हरिद्वार जैसी जगहों का शांत वातावरण शांति और दिव्यता का एहसास कराता है, जो इसे आध्यात्मिक कहानी वाली फिल्मों के लिए आदर्श बनाता है। दूसरी ओर, उत्तराखंड के ऊबड़-खाबड़ पहाड़, घने जंगल और नदियाँ साहसिक, थ्रिलर और एक्शन फिल्मों के लिए एकदम सही पृष्ठभूमि प्रदान करती हैं। राज्य का विविध भूभाग फिल्म निर्माताओं को ट्रैकिंग, राफ्टिंग और वन्यजीव अन्वेषण से जुड़े गहन दृश्यों को शूट करने में सक्षम बनाता है। औली, मसूरी और जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क जैसे स्थानों का उपयोग अक्सर रोमांच को कैद करने के लिए किया जाता है।

सरकारी पहल और समर्थन उत्तराखंड सरकार ने अपनी प्राकृतिक सुंदरता की क्षमता को पहचाना है और राज्य को एक फिल्म गंतव्य के रूप में बढ़ावा देने के लिए ठोस प्रयास किए हैं। राज्य सरकार द्वारा शुरू की गई उत्तराखंड फिल्म नीति, फिल्म निर्माताओं को सब्सिडी, वित्तीय सहायता और शूटिंग के लिए सुविधाओं सहित कई तरह के प्रोत्साहन प्रदान करती है। यह नीति राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फिल्म निर्माताओं को राज्य के विविध स्थानों का पता लगाने के लिए आकर्षित करने के लिए बनाई गई है।

इसके अलावा, दिल्ली जैसे प्रमुख शहरों से राज्य की आसान पहुँच, अच्छी तरह से विकसित बुनियादी ढाँचा और स्थानीय प्रतिभाओं की उपलब्धता इसे फिल्म निर्माण के लिए एक आकर्षक गंतव्य बनाती है।

उत्तराखंड ने खुद को भारत में सबसे आशाजनक और उभरते फिल्म गंतव्यों में से एक के रूप में मजबूती से स्थापित किया है। प्राकृतिक सुंदरता, आध्यात्मिक महत्व और साहसिक अवसरों का संयोजन इसे फिल्म निर्माताओं के लिए एक बहुमुखी स्थान बनाता है। जैसे-जैसे अधिक से अधिक फिल्म निर्माता उत्तराखंड कि ओर देखेंगे, आने वाले वर्षों में यह भारतीय फिल्म उद्योग में और भी अधिक प्रमुख भूमिका निभाने की संभावना की ओर बढ़ते रहेंगे। चाहे आध्यात्मिक यात्रा हो, साहसिक यात्रा हो या रोमांटिक ड्रामा, उत्तराखंड हर शैली के लिए कुछ न कुछ प्रदान करता है, जो इसे फिल्म निर्माताओं और दर्शकों दोनों के लिए एक स्वप्निल स्थान बनाता है। ●●●

गीता का कालातीत ज्ञान

विवेक अत्रे

भारत के बच्चों ने अपने बचपन में जितनी भी कहानियां सुनी हैं, उनमें से महाभारत की कथा ने उन्हें अनेक सदियों से सबसे अधिक आकर्षित किया है। महाभारत-कथा कथानक, उपकथानकों, पात्रों और छलकपट इत्यादि विविध जटिलताओं से पूर्ण है, तथापि इसका सार गीता के सन्देश में निहित है। श्रीमद्भगवद्गीता स्वयं भगवान् द्वारा अपने भक्त महान् पाण्डव योद्धा अर्जुन को प्रदान किये गए कालातीत, युगान्तरकारी और शाश्वत एवं दिव्य धर्मोपदेश की एक अत्यन्त उत्कृष्ट प्रस्तुति है।

ऐसा सत्य ही कहा गया है कि एक भक्त किसी समय में अपनी आध्यात्मिक यात्रा के जिस चरण में होता है, श्रीमद्भगवद्गीता यात्रा के उस खण्ड पर अपना प्रकाश डालती है।

प्रत्येक वर्ष दिसम्बर के महीने में सम्पूर्ण विश्व में गीता जयन्ती मनाई जाती है और विशेष रूप से इस अवधि में ज्ञानीजन इस महान् ग्रन्थ में निहित गहन विषयों पर प्रकाश डालते हैं।

जब कुरुक्षेत्र की रणभूमि में अर्जुन अपने ही "सम्बन्धियों" के विरुद्ध युद्ध करने के लिए इच्छुक नहीं थे तथा विषाद की स्थिति में थे, तो प्रत्युत्तर में भगवान् श्रीकृष्ण ने उन्हें अपने रुपान्तरकारी एवं प्रेरक शब्दों के साथ परम सत्य का उपदेश दिया। श्री श्री परमहंस योगानन्द द्वारा रचित पुस्तक "ईश्वर-अर्जुन संवाद" श्रीमद्भगवद्गीता और उसमें अन्तर्निहित सन्देश की एक अत्यन्त गहन आध्यात्मिक व्याख्या है। योगानन्दजी ने वैश्विक स्तर पर अत्यन्त लोकप्रिय पुस्तक, "योगी कथामृत" तथा अनेक अन्य अत्यधिक प्रेरणादायक आध्यात्मिक पुस्तकों का भी लेखन किया है।

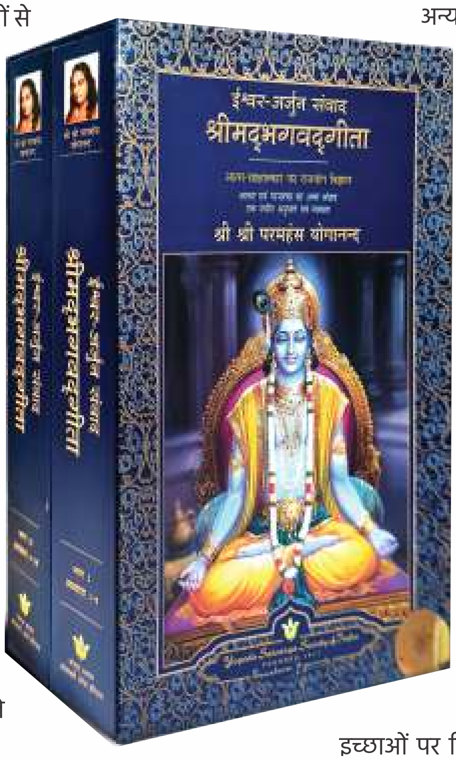

दो खण्डों वाली पुस्तक "ईश्वर-अर्जुन संवाद" में योगानन्दजी ने गीता के 700 श्लोकों के वास्तविक महत्व का विस्तृत विश्लेषण किया है। भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए गए दिव्य उपदेश का सार यह है कि हम सब आत्मा हैं, शरीर नहीं, और अन्ततः हमारे भीतर विद्यमान पाण्डवों को हमारे भीतर विद्यमान कौरवों पर विजय प्राप्त करनी होगी, ताकि आत्मा जन्म और मृत्यु के अन्तहीन चक्रों से मुक्त हो सके।

भगवान् ने जिस प्रकार अपने शिष्य अर्जुन को सर्वोच्च युद्ध लड़ने का परामर्श दिया था, उसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य को अपने अहंकार, आदतों, क्रोध, बुराई, वासना और भौतिक इच्छाओं पर विजय पाने का प्रयास करना चाहिए, ताकि वह अन्तिम मोक्ष प्राप्त कर सके। योगानन्दजी बताते हैं कि महाभारत का प्रत्येक पात्र एक अद्वितीय गुण का प्रतीक है, जिसे हमें पराजित करना है अथवा उसका पोषण करना है—यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह गुण अन्दर विद्यमान दुष्ट कौरवों

का प्रतिनिधित्व करता है या नेक पाण्डवों का।

योगानन्दजी की "क्रियायोग" शिक्षाओं में गीता का मूल सन्देश निहित है। "क्रियायोग" आत्म-साक्षात्कार का सर्वोच्च मार्ग है। योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ़ इण्डिया (वाईएसएस) द्वारा प्रकाशित योगानन्दजी की गृह अध्ययन पाठमाला में "क्रियायोग" ध्यान प्रविधियों के विषय में चरणबद्ध निर्देश सम्मिलित हैं। यह योगदा सत्संग पाठमाला सभी सत्यान्वेषियों के लिए उपलब्ध है तथा इस पाठमाला के माध्यम से लाखों भक्तों ने अपनी आध्यात्मिक खोज को तीव्र करने की क्षमता प्राप्त की है।

श्रीमद्भगवद्गीता में ध्यान की इस उत्कृष्ट वैज्ञानिक प्रविधि "क्रियायोग" का दो बार उल्लेख किया गया है। उन्नीसवीं शताब्दी में महावतार बाबाजी की "लीला" के माध्यम से मानवजाति ने पुनः इसकी खोज की। बाबाजी ने अपने शिष्य और योगानन्दजी के परम गुरु लाहिड़ी महाशय को इसका ज्ञान प्रदान किया। लाहिड़ी महाशय ने स्वामी श्रीयुक्तेश्वर गिरि को "क्रियायोग" की दीक्षा प्रदान की और तत्पश्चात उन्होंने अपने प्रमुख शिष्य योगानन्दजी को दीक्षा प्रदान की।

भारत में एक कहावत है, "जहाँ कृष्ण हैं, वहाँ विजय है!" वस्तुतः वे लोग अत्यन्त भाग्यशाली हैं, जिन्होंने अपनी जीवनशैली का निर्माण गीता की शिक्षाओं के अनुरुप किया है।

अधिक जानकारी : yssi.org. ●●●

नाव मालिक के साथ ही गायक भी बन गए 37 वर्षीय खडक़ सिंह चौहान

कुमाऊँनी भाषा के प्रचार प्रसार के साथ ही शौक भी हो रहा है पूरा

आदमी को उसके शौक भी कहां से कहां लेकर आ जाते हैं,बस इन शौक को पूरा करने के लिए उनके मन में दृढ़ इच्छा होनी चाहिए और फिर मंजिल भी आसानी से मिल ही जाती है।

बात हो रही है नैनीताल में नाव बनाकर अपने परिवार का भरण पोषण करने वाले खडक़ सिंह चौहान की। मूल रुप से कुमाऊं मंडल के अल्मोड़ा जिले के भनौली तहसील के तहत राजा गांव निवासी स्वर्गीय धन सिंह चौहान के पुत्र खडक़ सिंह चौहान की प्रारंभिक शिक्षा जीआईसी भेटा बडोली से हुई। बचपन में से वह गांव में पढ़ाई के साथ ही लकड़ी से संबंधित कार्य भी किया करते थे,उसके बाद वह रोजी-रोटी की तलाश में हरियाणा के होटल में चले गए,इस दौरान भी करीब 20 वर्षो तक होटल में कार्य करने के साथ ही उन्होंने गर्मियों के सीजन में नैनीताल आकर नाब बनाने का कार्य भी करते रहे जो आज भी अनवरत जारी है। खडक़ सिंह को गाना लिखने तथा गाने का शौक बचपन से ही था लेकिन उन्होंने अपना यह शौक काफी लंबे समय के बाद इस वर्ष अक्टूबर माह के अंत में पूरा किया। खडक़ के मुताबिक उन्होंने एक पहाड़ी गाना उड़ कबूतर जा जा मेर चिट्टी ली जा दे,आली तो उ बुला लाए, न आली मेरी चिट्टी दी आये लिखा फिर उसको निर्माता भुवन कुमार की मदद से हल्द्वानी के नंदा स्टूडियों में गाया। खडक़ का मानना है कि उनका कुमाऊँनी में गाना गाने तथा लिखने के पीछे मकसद यह भी है कि गाने के साथ ही हमारी कुमाऊंनी भाषा को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वृहद स्तर पर पहचान मिल सके। बता दें खडक़ सिंह की पत्नी ग्रहणी हैं जिनकी उम्र लगभग 34 वर्ष उनकी दो बेटियां पिंकी चौहान 13 वर्ष व पूजा चौहान 17 वष र्की है। ●●●

देहरादून में इनफ्लुएंसर मीटिंग का आयोजन

राजस्थान, पंजाब एवं गुजरात के लोगों की पहली पसंद बनी उत्तराखंड के वेडिंग डेस्टिनेशन

तुषार गुप्ता

प्लेज़ेंट्री होटल की ओर से गुनियाल गांव देहरादून में इनफ्लुएंसर मीट का आयोजन किया गया। इस इनफ्लुएंसर मीट में उत्तराखंड से लगभग 80 सोशल मीडिया इनफ्लुएंसरों ने भाग लिया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए तुषार गुप्ता को. ओनर प्लेज़ेंट्री होटल देहरादून ने कहा " हम देहरादून में लॉन्ग डाइनिंग टेबल कांसेप्ट को ला रहे हैं इस कॉन्सेप्ट के तहत उत्तराखंड में वेडिंग डेस्टिनेशन को विश्व स्तरीय बनाया जा सकता है। जैसा कि माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने उत्तराखंड में वेडिंग डेस्टिनेशन को बढ़ावा देने के लिए वेड इन उत्तराखंड की बात कही थी उसी कांसेप्ट को आगे बढ़ते हुए हम प्लेज़ेंट्री होटल देहरादून में अंतरराष्ट्रीय स्तर का वेडिंग ऑर्गेनाइज करने के लिए यह इनफ्लुएंसर मिट रखी है। "

तुषार गुप्ता कहते हैं "हमारा मकसद है उत्तराखंड के युवाओं को इवेंट मैनेजमेंट में सर्वश्रेष्ठ स्किल डेवलपमेंट के लिए प्रोत्साहित करना और उन्हें प्रशिक्षण दिया जाए ताकि वेडिंग डेस्टिनेशन के अवसर पर इन युवाओं को अंतरराष्ट्रीय स्तर का काम करने का अनुभव प्राप्त रहे और रोजगार के अच्छे साधन भी मिले।" उन्होंने कहा हमारे यहां काम करने वाले 95% लोग उत्तराखंड से हैं और हम भविष्य में वेडिंग डेस्टिनेशन के माध्यम से अनेकों लोगों को और रोजगार देने वाले हैं। हम उत्तराखंड के पहाड़ी उत्पाद को भी बढ़ावा दे रहे हैं एवं हमने अपने यहां रागी और चकराता की राजमा का कई व्यंजन बनाकर लोगों के बीच में इंट्रोड्यूस भी कर चुके हैं।

उन्होंने कहा स्वच्छता हमारी पहचान है और हम स्वच्छ भारत अभियान एवं स्वच्छ देहरादून अभियान को बहुत गंभीरता से लेते हैं और हमारी संस्था सी एस आर प्रोजेक्ट के तहत गुनियाल गांव से जो नदी निकलती है उसकी साफ सफाई एवं रखरखाव का काम करती है। उन्होंने कहा प्लेज़ेंट्री होटल को स्वच्छता ग्रीन लीव के तहत फाइव लीव सम्मान भी मिला है और उत्तराखंड का यह पहला प्लेज़ेंट्री होटल हैं जिसे यह सम्मान माननीय केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू जी के द्वारा दिया गया था।

उन्होंने कहा कि अभी तक हमारे पास राजस्थान, पंजाब एवं गुजरात जैसे राज्यों से डेस्टिनेशन वेडिंग के लिए बहुत से इंक्वायरी आ रही है एवं हम यहां पर कई वेडिंग कर भी चुके हैं, गर्मियों के मौसम के लिए सबसे ज्यादा पूछताछ की जा रही है।

Capital Graphics
Printing Press
A House of Complete Printing Solution
CTP
Offset
Digital
Advertising
School Diary
MENU
-: Office :-
Near Barrow Complex, Bus Stand Metro Station, Kanpur Road, Alambagh, Lucknow.
Contact us : 9450097737, 0522-4332618
E-mail: niceboyme@gmail.com
-: Workshop :-
553/151, Adarsh Nagar, Tehri Pulia Alambagh, Lucknow.
Contact us : 9450097737,6392941230, 0522-4024669

24 घंटे आपातकालीन सुविधा

RBSK
राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम

विश्वस्तरीय स्वास्थ्य सेवायें
अब आपकी पहुँच में...

अमेरिका की स्माईल ट्रेन संस्था द्वारा जन्मजात कटे होंठ एवं कटे तालू का नि:शुल्क ऑपरेशन एवं उपचार

अमेरिका की स्माईल ट्रेन संस्था अब राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम से भी सम्बद्ध

हेल्थ सिटी हास्पिटल
TRAUMA CENTRE & SUPERSPECIALITY HOSPITAL
गोमती नगर थाने के पीछे

पहले

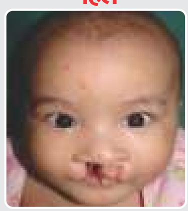

SmileTrain
TEAM EMPOWER

बाद में

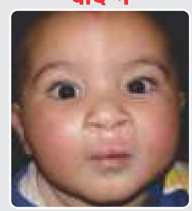

डॉ0 आदर्श कुमार
सीनियर कन्सल्टेंट–स्माइल ट्रेन, प्लास्टिक सर्जन

डॉ0 रोमेश कोहली
प्लास्टिक सर्जन

डॉ0 एस.पी.एस. तुलसी
मैक्सिलोफेशियल सर्जन

डॉ0 वैभव खन्ना
प्रोजेक्ट डायरेक्टर–स्माइल ट्रेन, प्लास्टिक सर्जन

प्लास्टिक सर्जरी विभाग में उपलब्ध अन्य सुविधायें

- समस्त प्रकार की चोट, यातायात दुर्घटना एवं घायल अवस्था (All types of Trauma & Accidents)
- जन्मजात एवं अन्य विकृतियों की पुन: निर्माण शल्य क्रियायें (Reconstructive Surgery)
- रीप्लान्टेशन व माइक्रोवैस्कुलर शल्य क्रिया (Replantation & Microvascular Surgery)
- कॉस्मेटिक शल्य क्रियायें (Cosmetic Surgery)
- बाल प्रत्यारोपण (Hair Transplant)
- अन्य समस्त प्रकार की प्लास्टिक सर्जरी की सुविधा उपलब्ध है

अगर आप ऐसे किसी भी रोगी को जानते हैं तो तुरन्त निम्न पते पर भेजें या सम्पर्क करें:

SmileTrain
Changing the World One Smile at a Time

SMILE TRAIN PROJECT (U.S.A.)-
FREE TREATMENT OF CLEFT LIP AND CLEFT PLATE PATIENTS

NH-A & B Vijay Khand-2, Gomti Nagar, Lucknow-226010
Ph.: 0522-4063608, 9935880201, 9453167711
Email: dr.vaibhavkhanna@yahoo.in, hrccpllko@gmail.com
www.lucknowwhealthcity.com

HELPLINE
CALL
9454159999